* श्रीसच्चिदानन्दाय नमः *

बनज़मे व बज़मे मोहब्बत के आँजा। गदाए व शाहे मुक़ाबिल नशीनद ॥

कागज़ थोड़ा हित घना क्यों कर लिखूं बनाय।
सागर में जल बहुत है गागर में न समाय ॥

अद्वैतानन्द

या

# सच्चिदानन्द प्रकाश

(पहला भाग)

जिस में

पूज्यपाद श्री सतगुरु दयाल श्री श्री १०८ श्री
स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज परमहंस के
परमोपयोगी उपदेशों

का

संग्रह किया गया है

—:*:—

प्रकाशक

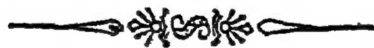
श्री सच्चिदानन्द सत संग जयपुर

श्री बालचन्द्र इलेक्ट्रिक प्रेस,
किशनपोल बाज़ार
जयपुर में
छपा

# ॥ विषय-सूची ॥

| नम्बर इरशाद | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|

| नम्बर इरशाद | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| ७९ | जैपुर में महात्मा का सतसंग व जवाब । | १५४ |
| ८० | भजन मजदूरी करने से भी मुशकिल है । | १५५ |
| ८१ | जैपुर में तमाशबीन वंजय के महात्मा । | १५६ |
| ८२ | दरजे से गिरे हुवे महात्मा । | १५७ |
| ८३ | चाकसू के महात्मा की उमर का तीन सो बरस का अन्दाजा । | १६० |
| ८४ | अलवर में कृष्ण कुन्ड वाले दूधा धारी महात्मा । | १६५ |
| ८५ | " " लाल डिगी वाले फ़क़ीर । | १६५ |
| ८६ | " " महाराजा मंगल सिंह जी के समय में परोपकारी मनुष्य । | १६६ |
| ८७ | धोलाजी पर चैता भगत का पर उपकार । | १६९ |
| ८८ | बा० शाम सुन्दर लालजी वज़ीर आला किशन गढ । | १६९ |
| ८९ | फ़क़ीर डेड सो रुप्या लेकर तवायफ़ के पास गया । | १७० |
| ९० | दारोगा राम चन्दरजी का साईस । | १७२ |
| ९१ | हाकम का हुक्म ही क़ानून है । | १७४ |
| ९२ | जैपुर में भूतों की घटना । | १७६ |
| ९३ | फ़क़ीर के कपडे उतार कर उसको चोला पहनाया । | १७७ |
| ९४ | दुशाला और कपडे फ़क़ीर को देदिये । | १७८ |
| ९५ | अफ़यून का सट्टा । | १७९ |
| ९६ | ला० सुख लाल ने ७० साल की उमर में शादी की । | १८० |
| ९७ | मन के मरने की पहचान । | १८२ |
| ९८ | गन्डे तावीज़ । | १८४ |
| ९९ | फ़क़ीरों का एकांत में रहना । | १८६ |
| १०० | चेला गुरूजी का या औरत का | १८७ |
| १०१ | मैं छूं देवी चन्डका । | १८९ |
| १०२ | आलिम ही आलिम को पहचान सकता है । | १९१ |
| १०३ | तब लग जोगी जगत गुरु जब लग रही न आस । | १९२ |
| १०४ | परमहंस जी को हमने भी ठेरने को कहा । | १९३ |
| १०५ | वैराग्य विवेक और ज्ञान की हालत का फ़र्क । | १९५ |
| १०६ | पंचम दास जी का भन्डारा । | १९५ |





श्री १०८ श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज परमहंस।

* ओंतत्सत् *

# अद्वैतानन्द

अथवा

# सच्चिदानन्द प्रकाश

## प्रथम भाग

## जीवन चरित्र



सच्चिदानन्द चैतन्य घन पूर्ण ब्रह्म निर्विकार निराकार अलख अविनाशी जन्म मरण से रहित परमात्मा पुरुषोत्तम को बारम्बार नमस्कार है, जिसकी क़ुदरत (माया) के एक ही चमत्कार (करशमा) से ब्रह्माण्ड की स्थिति है और जिस की आज्ञा से सब कर्म हो रहे हैं। परन्तु विचार का स्थान है कि यह सब कर्म किस स्थान पर हो रहे हैं और किस हेतु हो रहे हैं, और जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है यह क्या है? यदि यह कहा जावे कि जगत् में हो रहे हैं तो यह प्रश्न उठता है कि जगत् कहां है? जगत् इश्वर रूप में स्थित है। बल्कि ब्रह्म रूप है। जैसे समुद्र में बुलबुला, अगर कहा जाय कि पृथ्वी, सूर्य्य और चन्द्रमा नाश हो जायेंगे तो सोचना चाहिये किस में लीन हो जायेंगे। कहना यही होगा कि ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। अब कहां हैं, अब भी ब्रह्म में हैं, बस

क्या हुआ ब्रह्म ही ब्रह्म हुआ, न कोई पृथ्वी है, न सूर्य्य, और न चन्द्रमा, केवल नाम का भेद है, कि कई लोग जगत् कहते हैं और कई ब्रह्म। बास्तव में एकही वस्तु के ये दो नाम हैं, जिस प्रकार बीज और वृक्ष वास्तव में बीज में वृक्ष सम्मिलित है, और वृक्ष में बीज—अदृश्य में दृश्य और दृश्य में अदृश्य, अप्रत्यक्ष में प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष में अप्रत्यक्ष इससे साबित होता है कि न कुछ उत्पन्न हुआ है और न किसीका नाश होता है परमात्मा ही जगत् रूप है। जो कुछ इस सृष्टि में दृष्टिगोचर होता है वह सब ईश्वर ही का चमत्कार है तो धन्यवादकी क्या आवश्यकता है। माया के अन्तर्ध्यान होने से ब्रह्म प्रकाशता हैं तो माया के लोप होने का भय व्यर्थ है। अगर कोई आदि नियत करोगे तो उस से पहले भी कुछ होगा और यदि कोई अन्त नियत करोगे तो उस से पीछे भी कुछ रहेगा। बस वही परमात्मा असीम है, अर्थात् न उसका आदि है न अन्त। मनुष्य को उसी से प्रेम करना जो सारे सन्सार में समाया हुआ है आवश्यक है। उसी रूप की स्थिति है और इसको साबित करना कि वह है या नहीं है, इस से भी वह परे है, और जो रूप में चमत्कारी कहै तो यह कहना भी जब ठीक है जब मनुष्य ऐसी दृष्टि पैदा करले कि एक ईश्वर है और दूसरा जीव, परन्तु जब मनुष्य में से अहङ्कार जाता रहता है तो उसको मालूम होने लगता है कि रूप और गुण या चमत्कार एक ही

वस्तु हैं। और यह सब तमाशा उसी समय तक दिखाई देता है जब तक द्वित्व है। जागृत अवस्था में दो दिखाई देते हैं, और जब मनुष्य सोता है यानी बेखुद होजाता है उस समय न एक है न दो। इसी तरह गहरी नींद में एक दो सब ही लुप्त अथवा नाश हो जाते हैं, और जब कि केवल रूप की ही स्थिति है तो फिर ऐसी कौनसी दूसरी वस्तु है जिसकी प्रशन्सा करके उसकी उपमा दी जावे। परन्तु वास्तव में जो कुछ भी कहा जाता है इससे भी वह खाली नहीं है।

आदि से ही यह तरह तरह के स्वभाव व गुण हैं। जैसे किसी को नरक का डर है, किसी को बैकुण्ठ की चाह है, कोई नरक के दुःख से चिंतित है तो कोई बैकुण्ठ की चाह में मारा मारा फिरता है। निर्जीव पदार्थ जैसे पहाड़ इत्यादि से बनस्पति का बनस्पति से पशू आदि जीवों की और सब से अधिक मनुष्य को उत्तम समझा जाता है. किसी को किसी चाह में फसाया, किसी को किसी चाह में भरमाया, वास्तव में न कोई नरक है न कोई बैकुण्ठ, न कोई स्वर्ग, और एक विचार से देखा जाय तो हर एक का अलग अलग स्वर्ग और पृथक पृथक नरक है, इसी प्रकार मनुष्यों में भी ख़ास ख़ास को उनकी विद्या और ज्ञान के अनुसार जो उन्होंने परमात्मा के देखने में प्राप्त की है आम आदमियों से उत्तम और बड़ा माना है। और ऐसे महान पुरुष अपने विचार दया, और विद्या

के कारण किसी समय पर इस नाशवान देह को धारण करके अपनी उस विद्या व ज्ञान को मनुष्य मात्र पर प्रगट करते हैं। इस पुस्तक में भी एक ऐसे ही ब्रह्म स्वरूप महात्मा परमहंस **परब्राज** आचार्य्य श्री १०८ स्वामी **अद्वैतानन्दजी रामयाद** का संक्षिप्त जीवन चरित्र, घटनायें व श्रीमुख से कहे हुए ईरशाद (वचन) जो उन्हों ने सत्संग के समय बतौर शिक्षा के अपने मुखारविंद से कहे हैं उनको संक्षेप रूप में भाषण किया गया है।

इस में कुछ साधन और योग और अभ्यास की रीतियां भी जिनकी मुख्य मुख्य शिष्यों को शिक्षा दीगई थी लिखी गई हैं। अगर इनके लिखने में कुछ अशुद्धियां रह गई हो तो उसको लेखक की नकल की त्रुटि समजना चाहिये, क्योंकि ऊनके वचन केवल बतौर इशारे के लिख लिये गये थे। कुछ ज़बानी याद कर लिए थे, और जब समय मिला उनको लिख लिया गया, ऐसी दशा में ग़लती का होजाना सम्भव है, इसलिये पाठक मेरी लेखनी का अपराध समझ कर क्षमा करेंगे।

आसानी के विचार से इन वचनों को छ बाब (हिस्सों) में बिभाग कर दिया गया है।

(१) जीवन चरित्र (२) भजन व ज़िकर (भगवत स्मर्न की रीती) (३) वेदान्त (४) शिक्षायें (५) भिन्न भिन्न

वचन यानी ईरशाद ( ६ ) बीमारी के और परमात्मा में लय होजाने के समाचार।

इन के लिखने का कारण यह हुआ कि बहुत समय तक सत्सङ्ग करने और साथ रहनेके पश्चात् भी श्रीमहा-राज के शुभ नाम और जन्मभूमि तक से लोग अनभिज्ञ थे और सत्सङ्ग के समय इन बातों के पूछने का अवसर भी न मिलता था। अक्सर जब कभी शिष्यों व इच्छुकों ने इन बातों को मालूम करने की इच्छा प्रगट की थी तो आपने यह कहकर टाल दियाः—

आदमी रा ब चश्मे हाल निगर।
अज़ ख्याले परी व दा बगुज़र॥

अर्थात् आदमी की वर्तमान दशा पर ही ध्यान देना चाहिये और उसके भूत और भविष्य की दशा का कुछ विचार न करना चाहिए।

जब इस तरह आशा पूर्ण न हुई तो कुछ लोगों ने लेखक से भी कहा कि इस मामले में अगर तुम कुछ औ निवेदन करोगे तो श्री महाराज अवश्य स्वीकार करेंगे। एक दो बार तो मैंने उनको समझा दिया कि जो बात साधुओं के नियम विरुद्ध हो या उनकी इच्छानुसार नहो उस में ज़्यादा ज़ोर नहीं देना चाहिए, परन्तु उनके बार-म्बार कहने और उनकी श्रद्धा को देखकर एक उचित

समय और एकान्त में मैंने निवेदन किया कि इस सेवक पर आपकी जो कृपा है और जो कुछ उपकार इसका किया है उसका हज़ार जिह्वा से भी धन्यवाद नहीं दे सकता।

हरचन्द बाल बाल है शकले ज़ुबां मगर।
जिस से अदायें शुक्र करूं वो ज़ुबां कहां॥

अर्थ—जितने रोमांच शरीर में हैं यदि सब जिह्वा की शकल में हैं। परन्तु फिरभी वह ज़ुबां कहां से लावें जिससे आपका धन्यवाद वरनन् करूं, परन्तु चूंकि सदा से इस सेवक पर कृपा रही है उस भरोसे पर कुछ निवेदन करने की आज्ञा चाहता हूं—यह सुनकर कहाकि हां कहो मैंने सब की इच्छा और अपना आशय प्रकट कर दिया कि सब की इच्छा श्री महाराज के जीवन चरित्र मालुम करने की हो रही है, यदि श्री महाराज कष्ट सह कर के अपने जीवन चारित्र के सम्बन्ध में कुछ हाल कहें तो अत्यन्त कृपा होगी—यह सुन कर कहा कि तुह्मारा विचार उनके लिखने का है, देखो किसी प्रकार की यादगार अर्थात् स्मारक स्थापित करना राजा महाराजा और बादशाहों का काम है, जब अवधूत हो गये तो जीवन चरित्र आदि से क्या सम्बन्ध, सारे सन्सार के चरित्रों को हमारे चरित्र समझो—जब से हमने भेष धारण किया है हमारा सदा यही विचार रहा है कि न तो किसी को शिष्य

बनायेंगे और न किसी प्रकार का स्मारक बनावेंगे—न समाधि और मठ बनावाने का विचार है, बस परमात्मा का नाम सुनाना और सन्मार्ग के उपदेश देने की सेवा जो हमारे सुपुर्द हुई है वह इसी तरह से पूरी हो जावे, और ठाठबाठ पसन्द नहीं, सी कारण आज तक हमने अपना नाम तक भी न बताया और न वास्तव में जब अवधूत हो गये तो फ़िर नाम व गांव कैसा बल्कि यह भी एक प्रकार का अहङ्कार है कि हमारा यह नाम है और हम प्रसिद्ध होकर पुजें और हमारा गुण लोगों पर प्रगट हो और हमारे बचन सबको ग्राह्य हों और वास्तव में बात यह है कि हम उपदेश आदि कुछ नहीं करते वास्तव में पूर्ण ब्रह्म ही सब ओर से काम कर रहा है, कहीं गुरू बनकर उपदेश करता है कहीं शिष्य बनकर मानता, है फिर कुछ देर मौन रहकर कहा कि हमने बहुत आदमियों को टाल बतादी मगर तुमने टेढ़ी खीर अटकादी, अब तुह्मारे बिचार को कैसे टालें। कदाचित परमात्मा की यही इच्छा होगी जो सब लोगों की सम्मति से तुह्मारी राय भी मिल गई, खैर अगर तुम्हारा भी बिचार ऐसा ही है तो देखा जायगा परन्तु अभी बहुत समय है।

यह सुन कर कुछ आशा पूर्ण होने की सम्भावना हो गई और मैंने निवेदन किया कि वास्तव में आपका कहना ठीक है परन्तु आप जैसे ब्रह्ममय महात्माओं के

निकट देश और काल की अधिकता कोई वस्तु नहीं, क्यों कि आप का इन पर पूर्ण अधिकार है, परन्तु हम जैसे मनुष्यों का जो नित काल के गाल में पड़े हैं बहुत समय होने का क्या भरोसा है यह कहावत भी है।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
छिन में प्रलय होयगी, तु फेर करेगो कब ॥

यह सुन कर कुछ मौन रहने के पश्चात् कहा कि अच्छा अगर तुम्हारी इच्छा ऐसी ही है तो जब से चाहो हम बयान कर देंगे परन्तु यों ही मामूली तौर पर जो घटनायें याद आजावेंगी। क्योंकि घटनायें अति अधिक हैं और व्यर्थ बातों से कुछ लाभ भी नहीं; परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि हमारा चोला रहने तक यह सब बातें केवल अपने ही तक रखना उसके बाद तुमको अधिकार है जो चाहो सो करना। वह शुभ दिन इतवार पौष बुदि २ सम्बत १९६३ तारीख २ दिसम्बर सन् १९०६ का था जब कि आपने अपने श्रीमुख से यह इरशाद फ़रमाया।

(१) हमारे बाप दादा की पुरानी रहने की जगह छपरा थी। जो ज़िला सहारन सूबा बिहार में घोगरा नदी के निकट है। हमारे दादा श्रीमान् पंडित ख्यालीरामजी पाठक जाति ब्राह्मण सरबरिया शांडिल कूंचा नया बाजार में रहते थे, ब्राह्मणों के उस समय के धर्म्म और आचार के

अनुसार संस्कृत विद्या अच्छी तरह ग्रहण की थी और जीविका प्रोहिताई थी। आप के वंश को कौला धर्म्म का उपदेश था, परमात्मा ने आप को बुढ़ापे में एक होनहार पुत्र प्रदान किया जिन का शुभ नाम पंडित तुलसीरामजी पाठक था। आपके अच्छे स्वभाव, परोपकार और उपदेश से आसपास के हज़ारों मनुष्यों को लाभ पहुंचा। लेखक से इतना हाल कहकर कहा कि बस आज इतना ही रहने दो। इसके बाद भी श्रीमान् थोड़ा सा हाल कह कर ही उकता जाते थे। इस कारण मैं भी उसके सम्बन्ध में कुछ कहना या उस बात को छेड़ना उचित नहीं समझता था। इसी कारण संक्षिप्त जीवन चरित्र भी बहुत दिनों में कह सके। इस किताब के छपवाने का भी कोई निजी बिचार न था परन्तु श्री महाराज के निज धाम पधारने के बाद सत्सङ्गी लोगों के तकाज़े आने लगे, जल्दी में इच्छानुसार सिलसिले के साथ विषय भी न लिख सका। ऐसी दशा में इसको पाठकों के कर कमलों में समर्पण करते हुए सकुचाता था, परन्तु कुछ लोगों की इच्छानुसार जल्दी में ऐसा करना पड़ा, इस में से कोई बात भी श्री महाराज के शिष्यों व और लोगों को लाभदायक हुई तो इस परिश्रम का उचित बदला समझूंगा, इसलिये विनय है कि जहां कहीं अशुद्धियां देखें लेखनी का अपराध समझकर क्षमा करें और अशुद्धियों को शुद्ध करलें।

"गर कार आमद साबित शवद बो
क़बूल उफ़तद, ज़हे इज़्ज़ो शरफ़"

अर्थ—अगर यह लाभदायक विदित हुई और सबने इसको स्वीकार किया तो मैं अपना उचित सन्मान समझूंगा।

## * जय सच्चिदानन्द *

(२) एक दिन श्री मुख से यह इरशाद हुआ कि जब हमारे श्रीमान् पिताजी की आयु पांच वर्ष की हुई तो रीत अनुसार उनकी पट्टी पुजवाई गई और संस्कृत विद्या का आरम्भ हुआ, थोड़े ही समय में खूब विद्या प्राप्त करली। आपकी शादी रामधन पांडे चन्द्रातरमे गोत्र मांझी निवासी इलाक़ा नन्दपुर ज़िला सारन की लड़की से हुई थी यह अपने पति की बड़ी आज्ञाकारी थीं, यहां तक की नोकरों के होते हुए भी हमारे श्रीमान् पिताजी की कुल सेवा टहल अपने हाथों से करती थीं, जब हमारे दादा साहब का शरीर बरत गया तो हमारे श्रीमान् पिताजी उनकी जगह हुए और बुज़रगों का प्रोहताई का काम ही जारी रखा, चूंकि संस्कृत विद्या अच्छी तरह प्राप्त करली थी और स्वभाव बहुत ही शान्त और शीतल था और बड़े हँस मुख आदमी थे इसलिये शहर भर में आप की बड़ी प्रतिष्ठा थी और लोग बहुत मानते थे। आप को भी कोला धर्म्म का उपदेश था। अकसर शिष्यों को भी

इसी धर्म्म का उपदेश करते थे परन्तु आपको ब्रह्म विद्या का उपदेश भी एक महात्मा परमहंस जी मुक़ाम केदारघाट काशी से हुआ था, मगर आपने इसका उपदेश ख़ास ख़ास शिष्यों ही को किया था।

(३) एक दिन इरशाद हुआ कि हमारा जन्म सम्वत् १९०३ विक्रमी मुताबिक़ सन् १८४६ इस्वी में हुआ था, दिन इतवार, तिथि रामनवमी, पुष्य नक्षत्र, और सुकरमा योग था। रामनवमी के दिन जन्म होने से हमारा नाम रामरूप रखा गया। हमसे पहले हमारे पूज्य पिताजी की दो सन्तान मर चुकी थीं इसलिये उन्होंने जन्म उत्सव जन्म के दिन न किया वरन् यह विचार किया कि बालक के बड़ा होने पर करेंगे, जब कुटुम्बियों व सम्बन्धियों ने बहुत दबाया कि जन्म उत्सव अवश्य आज हो होना चाहिये, तो हमारे पूज्य पिताजी ने कहा कि हमारे घर उत्सव की ऐसी क्या ख़ास बात है, आज के दिन तो लगभग सारे भारत वर्ष में ही जन्मोत्सव का आनन्द मनाया जावेगा।

(४) एक दिन इरशाद हुआ कि हमारी आयु लगभग ८ या ९ महिने की थी कि हमारी पूज्य माताजी का अचानक शरीर बरत गया।

"ख़ुदा जहां ऐश देता है, वहां पर ग़म भी होता है।
जहां नक़्क़ार बजते हैं, वहां मातम भी होता है॥"

अब हमारे पूज्य पिताजी को हमारे पालन पोषण की चिंता हुई। यद्यपि हमारे पूज्य पिताजी के हज़ारों ही शिष्य और सेवक थे, परन्तु उनका खास प्रेम और ध्यान एक साहब लाला नरहर प्रसाद, जाति श्रीवास्तव कायस्थ पर था। यह साहब भी नये बाज़ार में रहते थे, विकालत व मुख़तारी करते थे। उनको भी कौला धर्म्म का उपदेश परम्परा से था। लाला गुलज़ारी लाल जो शेनी पट्टी बक्सर के रहने वाले थे उनकी लड़की के साथ आप का विवाह हुआ था। स्त्री व पुरुष दोनों ही बड़े भगत और साधु सेवी थे, और अपने गुरू यानी हमारे पूज्य पिताजी को बहुत मानते थे। लाला साहब के बड़े भाई लाला कृष्णमोहन लाल जो महाराजा बितिया के मुख़तार थे। इनका भी पाठक जी पर अधिक विश्वास था। लाला नरहर प्रशाद जी के एक पुत्र था जो हमसे लगभग छः मास बड़ा था। परमात्मा की ऐसी मरज़ी हुई कि हमारी पूज्य माताजी के देहान्त के एक महिने पहले ही वह जाता रहा ( मरगया ) इसलिये हमारे पूज्य पिताजी ने हमारी पूज्य माताजी के देहान्त के पश्चात् हमें लाला साहब को सौंप दिया ताकि हमारा पालन पोषण भी अच्छी तरह हो जावे और वह भी शोक को भूल जावें, और लाला साहब व उनकी शीलवान धर्म्म पत्नी ने भी हमारा लालन पालन सहर्ष स्वीकार कर लिया इस प्रकार हमारा कायथनी माई का दूध पीकर ही पालन पोषण हुआ और

वह दोनों भी हमको अपने निज पुत्र से अधिक प्यार करते थे और ऐसा लाड चाओ करते थे कि हमको कभी भी अपने माता पिता की याद न आती थी। लाला साहब ने एक बान्दी मिराचिया नामक और उसके लडके दिलसिंगार को हमारी देख भाल के लिये नियत कर दिया था इन दोनों ने भी हमारी बहुत सेवा टहल की।

(५) एक दिन इरशाद हुआ कि हमारे पूज्य पिताजी के शिष्यों में से जैसे प्रेमी और भगत लाला नरहर प्रसाद थे वैसे ही उनके सत्सङ्गियों और मित्रों में से लाला देवीप्रशाद जाति कायस्थ आमिष्ठ कौला धर्म्मी सरिस्तेदार फ़ौजदारी थे और जिस तरह उक्त नामक लाला साहब ने हमारा पालन पोषण किया था उसी प्रकार सरिश्तेदार साहब ने हमको विद्या व शिक्षा दी—क्योंकि लाला साहब व सरिश्तेदार साहब दोनों ही कायस्थ थे और उन लोगों में हिन्दी व संस्कृत के बदले फ़ारसी व अरबी का अधिक प्रचार था इसलिये जब हमारी आयु चार वर्ष और चार महिने की हुई तब से हमारी फ़ारसी और अरबी की शिक्षा आरम्भ हुई। सरिश्तेदार साहबकी तवज्जह और कोशिश से जल्द मुद्दआ (अभिप्राय) हांसिल करने के बाद विद्या ग्रहण करने का काम समाप्त हुआ। दूसरे यह कि लाला साहब के यहां रात दिन मुक़द्दमों ही की बाबत चरचा या मुक़द्दमे वालों का जमाओ या

खाना बनाने की चरचा हुआ करती थी क्योंकि लाला साहब को उत्तम और नये भोजन अधिक प्रिय थे। सदा नये नये खाने बनाने की रीति मालूम करके उसी प्रकार भोजन बनवाते और क्योंकि लाला साहब स्वयं सत्सङ्गी प्रतिष्ठित और बहुत मिलनसार मनुष्य थे। इसलिये बहुधा बड़े बड़े रईस व प्रतिष्ठित व सत्सङ्गी मनुष्य मिलने को आया करते थे। और सज्जन पुरुषों की बात चीत व संग से हमको बहुत लाभ होता था।

(६) एक दिन इरशाद हुआकि सम्वत् १६०८ में जब हमारी अवस्था पांच वर्ष की थी तब हमारे पूज्य पिताजी ने भी चोला त्याग दिया। पूज्य माताजी के देहान्त होने का तो हमको ध्यान ही क्या था। हां पूज्य पिताजी के देहान्त का अवश्य ध्यान है परन्तु लाला साहब और उनकी धर्म्म पत्नी ने ऐसे लाडचाव से पालन पोषण किया कि भूल कर भी माता पिता की सुध आजाने का अवसर नदिया। लाला साहब को ध्यान था कि जो लालसा व अभिलाषायें हमारे माता पिता हमारी ओर से अपने हृदय में लेगये हैं उनको यह अच्छे प्रकार पूर्ण करके उनकी आत्मा को शान्ती प्रदान करें परन्तु परमात्मा को यह बात स्वीकार न थी उसने तो हमको अपने ही कार्य के लिये उत्पन्न किया था इसलिये सब के आश्रय से निकाल कर अपनी शरण में ले लिया।

( ७ ) एक दिन इरशाद हुआ कि एक साहब पंडित भैरों शुक्ल नामक जो खलपुरा ज़िला सारन के निवासी थे। हमारे पूज्य पिताजी के पास रसोइये थे। पीछे उन्हों ने श्रीमान् पिताजी से विद्या भी पढ़ी और दूसरे अभ्यासों के विषय में भी उनको उपदेश हुआ मानो शिष्य का सम्बन्ध होगया था और कुछ रिश्तेदारी भी थी जिसके कारण हमारे पिताजी को मामा कहकर पुकारते थे। गुरुदीक्षा का कार्य्य और यज्ञोपवीत संस्कार उन्होंने ही कराया था। यह हमारा द्विज संस्कार लगभग नो वर्ष की अवस्था में हुआ था। यह हमको रामनारायण के नाम से पुकारते थे।

( ८ ) एक दिन इरशाद हुआ कि सम्वत् १९१७ में जब हमारी अवस्था १४ वर्ष की थी उस समय हमारे धर्म्म पिता श्रीमान् लाला नरहर प्रसाद साहब का भी स्वर्गवास हो गया उनके देहान्त हो जाने का हम को बहुत दुःख हुआ।

( ९ ) एक दिन इरशाद हुआ कि हमारे पूज्य पिता जी को परमहंस केदारघाट काशी वालों से ब्रह्म विद्या का उपदेश मिला था। इसलिये परमहंसजी अकसर उनके पास आया जाया करते थे और चूंकि लाला साहब ने पाठक जी से उपदेश लिया था इसलिये परमहंस जी का लाला साहब के यहां भी आना जाना था। लाला साहब के

देहान्त के बाद जब तक उनकी स्त्री जीती रही उस समय तक परमहंस जी महाराज का आना जाना बराबर बना रहा, इन महात्मा के विषय में अधिक तो हमको कुछ न ज्ञान हो सका परन्तु यह बड़े पहुंचे हुए थे। और हमसे अधिक प्रीती रखते थे और हमें हापू बाबा के नाम से पुकारा करते थे। सबसे पहले ब्रह्मविद्या और ब्रह्मज्ञानका उपदेश और आत्म विद्या का ज्ञान हम को इन्हीं महात्मा से प्राप्त हुआ था।

( १० ) एक दिन इरशाद हुआ कि श्रीमान् लाला नरहर प्रसाद जी के देहान्त के पश्चात् एक समय परमहंस जी महाराज पधारे तो हमने अपने मन का अभिप्राय उनको प्रगट कर दिया और ऐसी इच्छा प्रगट की कि मेरा बिचार गृहस्थ आश्रम न करके साधु होने का है इस में आपकी क्या आज्ञा है। यह सुन कर कहा कि भाई हापू देखो संसार में जो कार्य्य सिलसिले और रीति अनुसार किया जाता है वही भली प्रकार और उत्तमता के साथ होता है। तुम्हारा ब्रह्मचर्य्य अब लगभग समाप्त अथवा पूर्ण हो चुका है। प्रथम गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हो उसके पश्चात् वानप्रस्थ तत् पश्चात् सन्यास उचित है। यह साधु होने की तुमको अभी से क्या सूझी देखो गृहस्थ बन्धन नहीं है। जो मन से इसको मिथ्या समझ कर न्याय और परिश्रम से धन उपार्जन

करता है उस का यथोचित खर्च और ज़रूरत वालों की ज़रूरत पूरी करता है अपने सम्बन्धियों की सेवा ईश्वर इच्छा व धर्म समझ कर करता है वह भी स्वतन्त्र ही है। गृहस्थ आश्रम के बराबर हमने तो कोई आश्रम व धर्म देखा न सुना। युवावस्था में स्त्री ग्रहण कर पुत्र उत्पन्न करके कामदेव की अग्नि को बुझा के तीसरे दर्जे में वानप्रस्थ और पश्चात् सन्यास ग्रहण करे। जो ऐसा नहीं करते वह बहुधा अनुचित कर्म कर बैठते हैं। बिना गृहस्थ किये जो सन्यासी होजाते हैं और अन्त में संसार के आनन्द देख कर धैर्यता पर दृढ़ नहीं रहते उनका सन्यास भी नष्ट होजाता है और संसार का आनन्द भी हाथ से जाता रहता है और उन पर यह उदाहरण सच्चा होता है कि "धोबी का कुत्ता घरका न घाट का"। जो आरम्भ से ही सन्यास धारण करते हैं वह ग़लती पर हैं क्यों कि ईश्वरीय नियम के विरुद्ध करते हैं। जो डन्डा फलांगेगा अवश्य गिरेगा। काम बडा बलवान है। देखो विश्वामित्रजी ने पहले तीन हज़ार वर्ष तक निराहार तपस्या की और बड़े जितेन्द्रिय थे, परन्तु मेनका अप्सरा को देखकर मोहित होगये जिस से शकुन्तला कन्या उत्पन्न हुई। पारासरजी ने मछोदरी नामक खेवट की कन्या से भोग किया। ब्रह्माजी अपनी पुत्री के पीछे भागे।

यद्यपि यह वस्तव में उपमायें हैं, परन्तु इन उदाहरणों से तुम इस सारांश को ग्रहण करो कि प्रथम गृहस्थ

आश्रम ही उचित है । मैंने कहा कि आप का कहना ठीक है और मुझको भी गृहस्थी से कोई घृणा नहीं, परन्तु जहां तक मैंने देखा और विचार किया है इस में कुछ सार नहीं ज्ञात होता। मोह में फँस कर दीन व दुःखी रहना और भगवत भजन से विमुख रह कर व्यर्थ जीवन गंवाना है।

हम खुदा ख़्वाही ओ हम दुनियांए दूं ।
ई ख्याल अस्त ओ मुहाल अस्त ओ जुनूं ॥

अर्थ—हम परमात्मा को भी चाहें और दुनियां को भी यह ख़्याल जो है सो दुर्लभ है और पाग़लपन है। सारांश यह है कि दोनों बातें एक साथ नहीं हो-सकती ।

॥ दोहा ॥

जब लों सुमिरे ना हरी जो सन्तन के मीत ।
वो दिन गिनती में नहीं गये वृथा सब बीत ॥

यह मोह की ज़ंजीर बहुत ही कठोर है इस में पैर न पड़े जब ही तक अच्छा है, नहीं तो फिर इसका काटना कठिन वरन् असम्भव सा होजाता है।

"तदहेरव विरजते यदहेरव प्रव्रजेत"—अर्थात् जिस दिन वैराग्य हो उसी दिन सन्यासी हो जावे क्यों कि न-जाने फिर क्या विघ्न होजावे। दूसरे यह कि विषयों के

पास रहने से जितना वे आकर्षण करते हैं उतना वे दूर से नहीं करते इस लिए नरवेद दशा में गृह परित्याग करदेना ही उत्तम है, क्यों कि विवाह करके बुढ़ापे में स्त्री इत्यादि को सन्तोष करके सन्यासी होना बड़ी दुर्लभ बात है। और दूसरे स्त्री के सन्तोष का भी क्या ठिकाना है, क्यों कि पत्नी के निकट पति सदा युवा है, चाहे वह कितना ही बूढ़ा होगया हो। परन्तु उसकी स्त्री उसका अलग होना कदापि स्वीकार न करेगी। गृहस्थ आश्रम में रह कर रेशम के कीड़े की सी दशा होजाती है, जैसे वह अपने भीतर से एक तार निकालता है और उसकी गोली अपने ऊपर बना कर उस में कैद होकर नष्ट होजाता है। (मर जाता है) इसी प्रकार मनुष्य अपने मन से अभिलाषाओं का तार निकाल कर अपने को कैद कर देता है, और आपत्तियों में फसजाता है, गृहस्थ आश्रम में यह बातें अवश्य ही होती हैं, और यदि आप यह कहें कि स्वतंत्रता और कैद का कारण मनुष्य का ही मन है आश्रम पर इसका कोई बन्धन नहीं सो आप अच्छी तरह जानते हैं वैराग और अभ्यास से जब तक मन भली प्रकार वश में न करलिया जावे उस समय तक सम्भव नहीं कि गृहस्थ में फसकर कैद न हो! अवश्य हो और फिर अवश्य हो! हां जब पूरा ज्ञान हो जावे और अभ्यास से उसको वश में करके उस समय कुछ हानि नहीं चाहे गृहस्थ आश्रम में रहे चाहे सन्यासी हो

जावे इस लिये इस उपद्रवी को वश में कीये बिना गृहस्थी होने में मुझे डर ही है। "इक दिल में उल्फतें दोदो समा सकती नहीं"

॥ दोहा ॥

कबीर मन तो एक है भावे तहां लगाये।
चाहे हर की भगत कर चाहे विषय कमाये ॥

और फिर जीवन का भी क्या भरोसा है जैसे किसी ने कहा है:—

इस दम का करे भरोसा कौन बसे।
जब कि दम भर न खुद है सब्र इसे ॥

॥ शेर ॥

फिक्रे मुआश ज़िक्रे खुदा यादे रफ्तगाँन।
दो दिन की ज़िन्दगी में भला कोई क्या करे॥

अर्थ—इस थोड़े से जीवन में मनुष्य क्या २ रोज़ी की चिंता करे या परमात्मा का ध्यान करे या मरों की याद करे, इसलिये एक समय में एक काम ही ठीक हो सकता है। "दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम" दोनों और देखने में यह दशा होती है:—

है बहारे बाग़ दुनियां चंद रोज़।
देखले इसका तमाशा चन्द रोज़ ॥
पूछा लुक़मां से जिया तू कितने रोज़।

दस्ते हसरत मलके बोला चन्द रोज़ ॥
कब्र में रखकरके यों बोली कज़ा ।
अब यहां तुम सोते रहना चन्द रोज़ ॥
ग़ाफ़िलो यादे इलाही चाहिये ।
इस जहां में है बसेरा चन्द रोज़ ॥

यह सुन कर परमहंसजी ने कहा कि भाई साधू होना मानो संसार भरका बोझ अपने सिर पर लेना है और यदि तुम्हारा यह विश्वास है कि साधू होने में कोई चिन्ता न रहेगी सो भी ठीक नहीं क्यों कि और बातों के अतिरिक्त मुख्य चिंता खाने पहरने की हुआ करती है और इस से न गृहस्थी ही बचा हुआ है और न साधू ही स्वतंत्र है। मैंने कहा कि सच है यह काम दोनों आश्रमों के लिये हैं तो आवश्यक परन्तु साधू को इस की कुछ ऐसी अधिक चिंता नहीं है।

॥ शेर ॥

कार साज़े मा ब फ़िक्रे कारे मा ।
फ़िक्रे मा दर कारे मा आज़ारे मा ॥

अर्थ—परमात्मा को हमारे काम की फिकर व चिंता रहती है अर्थात् वह चाहता है कि हमारा काम पूरा हो जावे परन्तु हमारे काम की चिंता ही हमारे लिये एक प्रकार का रोग ही होता है।

"चिन्ता न कर अचिन्त रह तेरी चिंता मैं कौन ।
नया रोज़ रोज़ी नई कब तक तोहे ना दीन ॥

क्यों कि गृहस्थ आश्रम में तौ अपने शरीर के अतिरिक्त अपने सम्बन्धियों का पालन पोषण इत्यादि आवश्यक ही नहीं वरन् धर्म है और इस में तो केवल अपना ही शरीर है जिसतरह से चाहा रखा, मिल गया तो खालिया नहीं तो हरी इच्छा। यह कोई आवश्यक नहीं कि साधू होकर भीख ही मांगे और गृहस्थियों की कमाई में अपना साझा समझे, परमहंसजी ने कहा कि अच्छा आपतो कुछ उद्योग करे नहीं और भिक्षा मांगे नहीं फिर खाएं क्या, मैंने उत्तर दिया कि कन्दमूल फल फूल, इसके अतिरिक्त परमात्मा ने सैंकड़ों प्रकार की वनस्पति और उसमें स्वयं उगने वाली अनाज की तरह की वस्तुऐं मनुष्य के लिये उत्पन्न की है! कुछ भी खालिया, और यह भी आवश्यक नहीं कि हलुआ कलाकन्द और स्वादिष्ट भोजन ही हों तभी जीवन निर्वाह हो सकता है, क्या उनको खाकर मनुष्य जीवित नहीं रहसकता, जिसतरह से इस शरीर को रखना चाहो रहसकता है, दूसरे खाना पीना अन्न-जल के आधीन होना है जहां इस शरीर के निमित्त होता है स्वयं पहुंच जाता है।

॥ शैर ॥

चुनां पहन ख्वाने करम गुस्तरद ।
कि सीमुर्ग़ दर क़ाफ़ रोज़ी खुरद ॥

अर्थात् परमात्मा का भण्डार इतना बड़ा है कि कोह क़ाफ़ के पहाड़ पर भी (जहां कुछ भी खाने को नहीं होता) सीमुर्ग़ को खाना पहुंचाता है ।

परमहंसजी बोले निश्चय होजाना सरल बात नहीं है और सब से बढ़कर संस्कार होता । मैंने कहा कि मैंने तो अपना निश्चय ही प्रगट कीया है और रही संस्कारों की बात सो उनसे भी मेरी ही बात दृढ़ होती है । माता पिता स्त्री और छोटे छोटे बालकों के होते हुए साधू होना मना है क्यों कि प्रथम तो उनका पालन पोषण आवश्यक और धर्म होता है दूसरे उनकी आशायें नष्ट होजाने से उनके जी को दुःख पहुंचने की चिंता होती है । "किसी को कलपा कर आप कब कल पा सकता है" । इस लिये जब तक उनकी तरफ़ से संतोष नहो मनुष्य को संन्यासी होना उचित नहीं, परन्तु इन सब बातों से मैं बचाहुआ हूं क्यों कि माता व पिता का तो पहले ही शरीर बरत गया और स्त्री व पुत्र का अभाव ही हैं, अब संस्कारों में शेष रह क्या गया दूसरे आप स्वयं सर्वज्ञ है शेष बातों को आप स्वयं विचारलैं क्यों कि मुझको इस की कुछ हठ नहीं है, बरन् परमात्मा नें जो ऐसी हालतें उत्पन्न की है

उनसे यही विदित होता है कि उसने किसी मुख्य कार्य के लीये ही इस शरीर को उत्पन्न किया है।

जैसी हो होतव्यता वैसी उपजे बुद्ध।
होनहार हिरदे बसे बिसरजाय सब सुध॥

यह सुनकर परमहंसजी बड़ी देर मौन बैठे कुछ विचार करते रहे जब वहुत देर तक सन्नाटा रहा तो हाफ़िज़ का यह शेर पढ़ दिया—

दस्त अज़ तलब नदारम ता कामे मन बरायद।
या जां रसद ब जांनां या जां ज़तन बरायद॥

अर्थात् जब तक मेरा कार्य पूर्ण न हो उस समय तक मैं उसे नहीं छोड़ सकता या तो प्राण प्रेमी के पास पहुंच जायें या प्राण शरीर से निकल जावें।

यह सुनकर कहा कि अच्छा भाई हापू यदि तुम्हारा ऐसा ही विचार है तो ऐसा ही सही, परन्तु एक वात अभी तुमको मना करने वाली है, वह यह कि लाला नरहर प्रशाद व उनकी स्त्री ने तुमको अपने पुत्र की तरह पाला है और तुम्हारी हर प्रकार लाडनपालन पोषण कीया है, अब चुं कि लाला साहब का शरीर वरत गया है और उनकी स्त्री का सहारा और भरोसा तुम्हारे ऊपर ही है इसलिये वाहर भीतर सब जगह का प्रबन्ध और उनकी सेवा टहल सब तुम्हारा धर्म है।

जो बुज़ुर्गों के खिदमती होंगे ।
बे तरद्दुद वो जन्नती होंगे ॥

अर्थात् जो बड़े बूढ़ों की सेवा करेंगे वे बेरोकटोक स्वर्ग को जायेंगे ।

॥ दोहा ॥

तात मात से प्रान धन कपट करे जो कोय ।
ताको तीनों लोक में कभी भलो नाहि होय ॥

हां उनका शरीर बर्तने पर तुमको अधिकार है जिस तरह चाहो अपना जीवन व्यतीत करो, उपदेश के अनुसार बातनी (अन्तरिक) सब कार्य करते रहो परन्तु प्रगट होकर अलग होना ठीक नहीं वरन् अपना यह विचार भी उन पर प्रगट न होने देना नहीं तो इस बुढ़ापे में उनको व्यर्थ ही दुःख होगा ।

॥ शैर ॥

मुबाश दरपये आज़ार ओ हरचे ख़्वाही कुन ।
कि दर तरीक़त मा ग़ैर अज़ीं गुनाहे नेस्त ॥

अर्थात् किसी को कष्ट देने की इच्छा न कर और जो चाहे सो कर क्यों कि हमारे धर्म में इससे अधिक और पाप नहीं है ।

इसके पश्चात हमको परमहंसजी ने कुछ खास उपदेश

किया और कहा कि हमने तो दिल मूंडकर साफ कर दिया है माथा नाई से मुंडवा लेना।

(११) एक दिन श्री मुख से इरशाद फ़रमाया कि जब हमारी अवस्था लगभग नौ वर्ष की थी उस समय एक दिन सतसंग में यह ज़िकर हुआ कि बहुधा साधू महात्माओं को ऐसी सिद्धी हो जाती है कि गुटका मुख में लेकर इस स्थूल शरीर सहित आकाश में उड़ने लगते हैं। एक साहब ने कहा कि गुटका उटका कुछ नहीं है केवल विचार शक्ति से यह बात प्राप्ति होजाती है, हां प्राणों को कुछ अपने वस में अवश्य करना पड़ता है। यह सुनकर हमको विचार हुआ कि तुम को भी ऐसा ही अभ्यास करना चाहिये कि उड़ने लगो और जी चाहे जहां दम की दम में चले जाओ, पग पग पर इस भारी शरीर का बोझ उठाने की क्या आवश्यकता है। परन्तु इस की रीति न तो हमको मालूम थी न किसी से हमने पूंछी। स्वयं स्वांस को रोक कर और शरीर को संभाल कर यह ध्यान करके बैठ जाते कि अब मैं उड़ूं। कुछ समय के अभ्यास से थोड़ी सी देर में शरीर हलका सा मालूम होने लगता और ऐसा मालूम होता कि ऊपर को उड़ता है, थोड़े दिन के अभ्यास से तो शरीर पृथ्वी से ऊपर उठने लगा थोड़े दिन और प्रयत्न कीया तो फिर क्या था मकान के एक खन तक जाने लगा। एक दिन मैं

यह क्रिया कर रहा था कि लाला साहब व और लोगों ने देखलिया कि मैं उड़ा जाता हूं वह सब मुझे पकड़ने को दौड़े परन्तु मैं लगभग एक खन ऊंचा उठगया जब उन्होंने बहुत हल्ला मचाया तो मैं उतर आया उन्होंने मुझको बहुत कुछ डराया धमकाया कि तुम यह क्या कर्म करते हो इस का परिणाम बहुत बुरा होगा किसी दिन तुम बहुत ऊंचे से गिर पड़ोगे और हाथ पैर टूटजायेंगे और आश्चर्य नहीं कि मरभी जाओ, सारांश यह कि मैंने इस क्रिया को छोड़दिया, पश्चात् मालूम हुआ कि वो क्रिया प्राणों के रोकने की जो उस समय की थीं ठीक रीत्यानुसार ही थी। और उस की रीति और अभ्यास का उपदेश मानो मुझे अन्तरात्मा ही से हुआ था। मेरी आत्मा ही ने गुरु बनकर मुझको उपदेश किया था, और भी कई बातें इस प्रकार की हुई थीं परन्तु उनका वर्णन करना व्यर्थ है।

(१२) एक दिन श्रीमुख से इरशाद हुआ कि श्रीमान् लाला साहब के जीवन में ही हमारे स्वजाती और सम्बान्धियों ने हमारे विवाह इत्यादि की चरचा चलाई और कुछ ठीक ठाक हो भी गया था परन्तु लाला साहब की मृत्यु के कारण वह मामला कुछ ठंडा होगया जब इनकी मृत्यु को कुछ समय व्यतीत होगया तो लोगों ने फिर ज़ोर मारा और लाला साहब की स्त्री ने भी बड़ी लालसा से प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया, जब बातचीत

पक्की होने को आई तो हमने बहाने बनाने आरम्भ किये क्यों कि हमतो पहले ही परमहंसजी से इस बात को तै कर चुके थे और हमने उन लोगों को यह टाल बताई कि छोटी अवस्था में बिवाह होना ठीक नहीं होता है। कम से कम बीस वर्ष की अवस्था अवश्य होनी चाहिये इससे मामला रोक दिया गया।

(१३) एक दिन श्री मुख से यह इरशाद हुआ कि सम्वत् १९२० सामन मास में लाला साहब के देहान्त के लगभग तीन वर्ष पश्चात् जब हमारी आयु १७ वर्ष की थी लाला साहब की धर्मपत्नी का भी शरीर बरत गया उनके देहान्त होजाने का हमको महादुःख हुआ इनका अग्नि संस्कार इत्यादि सब कर्मकाण्ड हमारे ही हाथ से हुआ, रीत्यानुसार कुटुम्बी व सम्बन्धी पगडी आदि लेकर आ पहुंचे और पुरानी बातों की भी छेड छाड आरम्भ हुई परन्तु हमने मन में सोचा कि परमात्मा ने तुमको स्वतन्त्र किया है अब इस ओर तुम्हारा संस्कार नहीं है क्यों कि मन में तो कुछ और लगी हुई थी—

॥ शैर ॥

बेडियों से अय जनूं[१] रिश्ता मेरा जाता रहा।
जब से जुल्फों[२] में फंसा यह सिलसिला जाता रहा॥
किस का ग़म छाया है दिल पर है मुझे किस की तलाश।
किसको आंखे ढूंढती हैं हाय क्या जाता रहा॥

१ पागल पन २ केश।

इसलिये सबको इधर उधर की बातों में टालदिया।

१४ एक दिन श्रीमुखसे इरशाद हुआ कि परमहंस जी के उपदेशानुसार हमारी बातनी (आत्म अभ्यास का अन्तरिक कार्य) काररवाई गुप्तरूप से समाप्त होचुकी थी केवल लालासाहब की स्त्री के जीवित रहनेके कारण जाहिरदारीमें अलग न होसका था जब हम उनका कर्म-काण्ड करचुके और सब ओरसे सम्बन्ध टूट चुका तो फिर स्वतन्त्र होगये। और गुरू का भेप जो छिपा हुआ था सो प्रगट करलिया। अपने माता पिता व लालासाहब के कुल गृहआदि माल व सामान का मेरे अतिरिक्त और कोई दावादार न था परन्तु उन सबको परमात्मा को सौंप हम छपरासे बक्सर की ओर चलदिये।

शेर

वाइज़ो देख चुका हो जो किसी का जलवा।
हूरें नजरों में भला उसके समायें क्यों कर॥

अर्थ उपदेशकों जिसने परमातमा के दर्शन करलिये हों उसे हूरें (सुन्दर स्त्रियां) भला क्यों अच्छी लगनें लगीं।

दोहा

अरब खरब लों द्रव्य हो और उदय अस्त लों राज।
तुलसी जो निज मरन है तो आवे कौने काज॥

बीचमें बड़ा घना बन था और कई नदियां भी पड़ीं बक्सरमें पहुंचकर हमनें श्रीभागीरथी में स्नान किया और धोती इत्यादि जो कुछ वस्त्र पहने थे सब वहीं छोड़ दिये केवल एक लंगोट धारण करलिया । गंगाजी के गम्भीर प्रवाह को देखकर हमको महात्मा कन्हरदासजी का यह भजन याद आगया ।

भजन

जै गंगा जै जै जगजननी जय सन्तन सुखदाये ।
भगत भूप भागीरथ हित प्रघट आवन पराये ॥
चरण कमल अनुराग भागकर लै ब्रह्म उरलाये ।
प्रवल प्रताप कहां लग बरनूं शंकर शीस चढ़ाये ॥
चार खान जग जीव उद्धारन वेद विमल यश गाये ।
तरल तरंग पाप खल खण्डन महिमा बरणि न जाये ॥
गन गंधर्व अमर किन्नर मन रहत सदा लौं लाये ।
घोर धार गम्भीर विमल जल छुअत अधम तरजाये ॥
कनक शिखर सर ललित मनोहर उर जैमाल सुहाये ।
जाकी कान्ति देख यम किंकर करुणांकर फिर जाये ॥
रामनाम गंगा कुल केवल और न कछू उपाये ।
कान्हरदास धन जै जगमें वसत सदां सिरनाये ॥

जिस गङ्गा की महिमा महात्मा कान्हरदासजी ने की है उससे अभिप्राय है परमात्मा से ( जैसा कि अरबीकी इस आयतमें भी कहा है )

"नहनो अक़रबो इलय हे मिन हब लिल्ल वरीद" अर्थात् जैसे नसें हममें हैं इसीतरह परमात्मा भी हमारे बहुत ही निकट है यह गङ्गा तो केवल उसका एक नमूना है।

१५ एकदिन श्रीमुख से यह इरशाद हुआ कि बक्सर से अकबरपुर के जंगल की ओर जानेका विचार किया। बरसात की ऋतु और सावन मास समाप्त होने को था परन्तु उस समय वर्षा न थी। राहमें बक्सर से लगभग डेढ़ कोस निकलनेपर वर्षा आरम्भ हुई और इतना पानी बरसा कि धान के खेतोंमें लगभग कमर कमर पानी होगया। वहांसे एक नोहटा गांव निकट था। बड़ी कठिनाईके साथ श्यामतक वहां पहुंचे। क्योंकि चित्त में वैराग था इसलिये किसीके घरपर जाना उचित न समझा—एक ज़मींदार भुइन्हार ब्राह्मणके द्वारेपर पक्का कूआ था उसके पास जाकर बैठगये। निकट ही थोड़ी दूर पर वर्षा होरही थी। उस ब्राह्मण ने हमारी ओर तनिक भी ध्यान न दिया और न किसी कामके लिये ही हमसे पूंछा। सत्संगी आदमी न मालूम होता था और जी भी कुछ कठोर था। जब वर्षा बन्द होगई तो मर्द और औरतें पानी भरने को कूएपर आये परन्तु किसीने ध्यान न दिया। हम वहीं भीगी लंगोटी बांधे बैठे रहे। अकस्मात् एक सरकारी सिपाही उस ज़मींदारके नाम परचा लाया और उसको बहुत धमकाया डराया और उसको पकड़कर

लेजाना चाहा कि तुमको अदालत में हाज़िर होना है। उसने बहुत कुछ लल्लोचप्पो की बहुत कुछ लालच भी दिया यहांतक कि पन्द्रह रुपये नक़द देने चाहे परन्तु सिपाहीने ज़राभी ध्यान न दिया और किसी न किसी तरह लेजाना चाहा। उस गांव में कोई फ़ारसी पढ़ा न था जो उस परचेको पढ़ता—जब हमनें देखा कि इतनी दीनता और लालच पर भी सिपाही किसीतरह भी नहीं मानता तो ज़मीदार की दशापर दया आगई और सिपाही से कहा कि ऐसा क्या हुक्म है तनिक मुझे तो दिखलाओ उसनें समझा कि यह कोई वे लिखा पढ़ा आदमी है क्या समझेगा इसलिये ताने के साथ परचा निकाल कर देदिया उस में लिखाथा कि फलाने अपराध के कारण तुम्हारा हाज़िर होना आवश्यक है यदि दो दिन के भीतर हाज़िर न होगे तो तुमपर जुर्माना किया जावेगा। वह विषय सबको पढ़कर सुनादिया और कहा कि दो रोज़ का समय तो हाज़िर होनेका ही है, और यदि तुम हाज़िर न होगे तो जुर्माना भुगतोगे तुमको पकड़कर लेजाने का कोई हुक्म नहीं है। केवल इत्तला पाई करा कर लेजाओ। यह सुनकर ज़मीन्दार अत्यन्त प्रसन्न हुआ और फिर तो हमारी ऐसी आवभगत की जैसे शिष्य गुरू की या पुत्र बड़ों की करते हैं। तापनेके लिये तुरन्त आग सुलगादी। लंगोट धोकर सुखा दिया बड़े तकल्लुफ़ से बिछोना बिछाया—मालीना आदि ओढ़ने को लाया पूड़ियां आचार और भैंस का दूध व दही आदि

खाने को लाया और उस सिपाही की ओर ध्यान भी न दिया और खाने तक को न पूंछा । हमने विचार किया कि तुमको तो सुख होगया परन्तु इस बिचारे सिपाही पर अन्याय हुआ, यह बात तो बहुत अनुचित है, इस का व्यर्थ ही जी दुखेगा। हमने ज़मीन्दार को समझाया कि भाई इन लोगों का तो यही काम है। बहुत कहने सुनने से कुछ पानी तमाखू की पूंछी। परन्तु उस के अनुचित व्यवहार से बहुत दुखी था । लाचार हमने अपने खाने में से सिपाही को खाना और बिछौना आदि ओढ़ने बिछाने को दिये ।

(१६) एक दिन अपने श्रीमुख से यह इरशाद फ़रमाया कि नौहट्टा गांवों में ब्राह्मण के बहुत हट करने से दो रोज़ तक ठहरे, जब चलने लगे तो गांव वालों ने हमको पालकी में बैठाल कर भेजा, कुछ दूर जाकर हमने पालकी लौटादी और लगभग दो कोस चल कर हमने लँगोट आदि भी फेंक दिये और बिलकुल नग्न होगये।

॥ शेर ॥

तने उरयानी से बहतर नहीं दुनियां में लिबास ।
यह वो जामा है कि जिसका नहीं सीधा उलटा ॥

अर्थात्—संसार में नंगे रहने से अच्छा कोई भी कपड़ा नहीं है, क्यों कि यह वह वस्त्र है कि जिस का सीधा व उलटा ही नहीं ।

॥ दोहा ॥

मांटी ओढ़ना मांटी बिछौना मांटी का सिरहाना है।
मांटी का कलबूत बनाया मांटी में मिलजाना है॥

पश्चात डेरीघाट होते हुए दक्षिण की ओर तलोथू एक जगह है वहां गये, तलोथू में थाने के समीप ठहरे वहां से बन बहुत निकट था। एक रात्रि को लगभग बारह बजे उठ कर जङ्गल की ओर चले गये तो क्या देखते हैं कि चन्द्रमा की तरह एक प्रकाश पृथ्वी पर दिखाई दे रहा है। और एक फ़रलोंग (२२० गज़) तक फैला हुआ है, उसकी चौड़ाई लगभग दस गज़ थी मगर यह पता नहीं लगा कि यह प्रकाश कहां से और किस वस्तु से निकल रहा था। दो चार वर्ष के बाद चरचा हुई तो मालूम हुआ कि सांप की मणि का प्रकाश होगा और कई महात्माओं से पूछने पर भी यही बात प्रमाणित हुई, परन्तु वैसी बात फिर कभी देखने में नहीं आई।

(१७) एक दिन इरशाद हुआ कि तलोथू से अकबरपुर गये, इस जगह जङ्गल व पहाड़ बहुत हैं, और बड़ा सुन्दर स्थान है। यह जगह हमको बहुत अच्छी लगी, और लगभग छः वर्ष वहां ठहरे परन्तु कोई मठ या झोंपड़ी बना कर या किसी गृहस्थी के घर पर नहीं। बलके इसी तरह से नग्न और स्वतन्त्र। यहां तक कि कोई वस्तु जैसे करपात्र तक भी अपने पास न था। इस

बीच में हमने मौन धारण कर रखा था, किसी से बात न करते थे। इस जगह महाराजा हरिश्चन्द्र का बनवाया हुआ गढ़ है इसलिये इस जगह को हरिश्चन्द्रगढ़ी भी कहते हैं। और यह भी कहा जाता है कि महाराजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहतास ने भी इस जगह राज्य किया था, इस लिये इस जगह को रोहतासगढ़ भी कहते हैं। इस जगह जङ्गली जानवर जैसे शेर, चीता, रीछ, भेड़िया अधिक थे, और दिन में पांच छः बार देखने में आजाते थे। और हिरन आदि तो बहुत ही निकट फिरा करते थे, परन्तु वैराग के कारण हमको उन से कुछ भी भय न लगता था और न उन से कभी किसी तरह की हानि पहुँची।

॥ शेर ॥

मरद आरिफ़ कीस्त बेबाक अज़ हमां।
आब साफ़ी चीस्त ओ पाक अज़ हमां॥

अर्थात्—पहुँचा हुआ सन्त वह है जो सब से निडर हो और साफ़ पानी वह है जो सब से पवित्र हो।

(१८) एक दिन इरशाद हुआ कि अकबरपुर में जब तक रहे हम केवल फलाहार करते थे। वहां पर एक बाबू बालमुकुन्दसिंह इन्सपेक्टर पुलिस थे, उनको हमारी सेवा का अधिक ध्यान था। और चूंकि वह अफ़सर

होकर सेवा करते थे इसलिये उनके नीचे काम करने-वाले सबइन्सपैक्टर व जमादार व कानिस्टबिल सब ही सेवा करते थे । इनके अतिरिक्त चाहे हिन्दू हो चाहे मुसल्मान सबको हमारी सेवा करने का ध्यान था । हां जब तक इन्सपैक्टर साहब से मिलाप न हुआ था उस वक्त तक बहुधा बिना भोजन ही रहजाना पड़ता था । उस का कारण यह था कि हम किसी से मांगते न थे । वैराग की दिलेरी की वजह से जाकर मांगना चित्त को अप्रिय था और इस फ़ारसी के "शैर" पर दृढ़ विश्वास था :—

चुना पहन ख़्वाने करम गुस्तरद ।
किसीमुर्ग़ दर क़ाफ़ क़िस्मत ख़ुरद ॥

अर्थात—परमात्मा का भण्डार इतना बड़ा है कि सीमुर्ग़ (एक प्रकार का पक्षी) को भी कोहक़ाफ (एक पहाड़ का नाम है) में भी खाना पहुँचाता है ।

(१६) एक दिन इरशाद हुआ कि जब अकबर-पुर में हमको बहुत दिन होगये तो एक रोज़ स्वप्न में गुरू महाराज के दर्शन हुए उन्हों ने हँस कर कहा कि बैठने से देशाटन ठीक है । यह वचन सुन कर फिर देशाटन का ध्यान हुआ—

"रमता जोगी बहता पानी, ठहरे गदला होय"

प्रातःकाल ही वहां से चलदिये और चौगायें, नवा नगर, तलोथू, डेरीघाट घूमते हुए डमराओं में ठहरे, यह सब स्थान क़सबे की तरह हैं।

(२०) एकदिन श्रीमुख से यह इरशाद हुआ कि एक साधु मिसरोलिया गांव में पहुंचा—गांव से बाहर खेत में एक ब्राह्मण मिला—उसने साधु को आचार व सत्तू आदि जो उसके साथ वहां थे खिलाए उस समय साधुने दो दिन से कुछ न खाया था। इस भोजन को ही बहुत कुछ समझा और अति प्रसन्न होकर उससे पूछा कि तुम्हारे बाल बच्चे व स्त्री प्रसन्न हैं—उस ब्राह्मणने कुछ उदास होकर कहा कि महाराज न तो कोई बालबच्चा है और न स्त्री है, यहां तो केवल मेरा ही दम है "जोरू न जाता और अल्ला मियां से नाता"—उस फ़कीर (साधु) ने पूछा कि कुछ बालबच्चे की चाहना व अभिलाषा है। उसने विनय की कि महाराज एक भतीजा है उसको लड़के की तरह मानता हूं। यदि अपने कोई औलाद हो तो क्या ही बात है। नहीं तो हारेको यही लड़के के बराबर है। साधु ने कहा कि तुम अपना विवाह करलो यदि परमात्मा ने चाहा तो तुम्हारे दो पुत्र होंगे एक का नाम बद्रीनाथ और दूसरे का केदारनाथ रखना। यह कहकर वहां से चलदिये। ब्राह्मण अवस्था में ढला हुआ था परन्तु उसको कुछ ऐसा विश्वास होगया कि तुरन्त विवाह करलिया और उसके

दो पुत्र भी हुए संयोगवश पांच या छः वर्ष उपरान्त उस साधु का फिर उसी गांव में आना हुआ—उस समय सब खेत पके खड़े थे बड़े भारी बादल होरहे थे और मेह बरसना आरम्भ होगया—एक दो बोछार ओलोंकी भी आई सब लोग त्राहि त्राहि पुकारेन लगे—उस ब्राह्मण का साधु महात्माओं में बहुत निश्चय होगया था इसलिये सब गांव वालों को इकट्ठा करके तुरन्त उस साधु के पास ले आया सबने प्रार्थना की कि महाराज कोई ऐसा उपाय कीजिये कि यह ओला बन्द होजावे नहीं तो हम सब अकाल मृत्यु को प्राप्त होंगे। साधु ने कहा कि उपाय तो मैं कुछ जानता नहीं। पर हां तुम सब बैठकर राम राम कहो यदि परमात्मा ने चाहा तो ओला बन्द होजायगा। उन सब लोगों ने राम राम कहना आरम्भ किया। परमात्मा की कृपा से तुरन्त ओला बन्द होगया। सब लोग उस के बहुत कृतज्ञ हुए और उसकी बड़ी आओ भगत की साधु ने कहा कि इसमें मेरा क्या कर्तव्य है जो बात होनहार थी सो होगई और यदि कुछ समझो भी तो उस राम की कृपा हैं जिसका तुमने नाम लिया है उस ब्राह्मण ने साधु को भोजन खिलाया उसकी स्त्री ने भोजन परोस कर खिलाया और दोनों पुत्र भी वहीं थे और उन दोनों का नाम भी ब्राह्मण ने साधु के आज्ञानुसार ही रक्खा था—उन दोनों पुत्रों को साधु के चरणों में डालकर कहा कि आप ही जैसे एक महात्माके आशीर्वाद और कृपा से इनका मुख

देखना प्राप्त हुआ है और सब हाल कह सुनाया परन्तु साधु ने न तो स्वयं ही अपने को प्रगट किया और न वह ब्राह्मण ही उसको पहचान सका—यह कहकर कहा कि यह सब बातें सिद्धी से सम्बन्ध रखती हैं परन्तु आत्मज्ञान और ब्रह्मानन्द यानी फ़क़ीरी और ही वस्तु है।

हर कश्फ़ बरां चहरा नक़ाबे दिगर अस्त।
हर बहर दर ईं राह सुराबे दिगर अस्त॥
अज़ रफ़ए हिजाबे ख़ेश मग़रूर मबाश।
की रफ़ा हिजाब हम हिजाबे दिगर अस्त॥

अर्थः—तमाम कश्फ़ या करामात की बातें उस चहरेपर एक दूसरा ही नक़ाब या परदा होता है। हर दरया इस रास्ते में एक मृगतृष्णा बना होता है। अपने परदे के दूर होजाने से घमन्ड या अभिमान मत कर क्योंकि परदा का हट जाना (यह विचार भी होना) दूसरा परदा बन जाता है।

मतलब यह है कि साधक को जब सिद्धियां प्राप्त होजावें और कोई करामात का काम बन आवे तो इसका अभिमान भी रुकावट करता है। असली दरया को भी मृग तृष्णा समझना चाहिये। साधक को यह विचार होना भी कि मेरे घटके पट या परदे दूर होगए एक दूसरा परदा या रुकावट बनजाता है। वरन् मुमुक्षु साधक को मालूम

होना चाहिये कि सार व असार के विचार और गृह व कुटुम्ब के त्याग करने से मन निर्मल होकर भगवत् स्वरूप का प्रकाश जिस जिस भांति प्रगट व साक्षात् होता जाता है उसी उसी भांति परोक्ष व अभूत बातका जानना और सत्य होजाना वचन आशीर्वाद व श्राप का और प्राप्त होजाना मन वांछित फल का जोकि आत्मा आदिक अष्ट सिद्ध प्रसिद्ध की सम्बन्धी हैं—यह सब अधिक होजाता है। जो कहीं उस विरक्त योगी का चित्त उन सिद्धियों की ओर लग गया तो सब जाता रहता है, फिर ठिकाना कठिन है। सो उस समय मन को ऐसा संभाले कि तानिक भी मन उन सिद्धियों में न लगे। ऐसा त्याग करे जैसा वान्त भिष्टा को घिनोना जानकर छोड़ देते हैं जो उस समय संभल गया तो तुरन्त मन वांछित पद को पहुँचगया जो उन बटमारों [डाकुओं]ने लूट लिया तो फिर पता लगना कठिन है। परन्तु यह स्थान बहुत कठिन है। बड़े बड़े चतुर व बुद्धिमान इस दरजे में रह जाते हैं और जब तक उनको छोड़ न दे साधु होना कठिन है।

॥ कवित्त ॥

चढ़ गजराज चतुरंगनी समाज संग जीत छतपाल सुरपाल सों सजत हैं। विद्या अपार पढ़ तीरथ अनेक कर यज्ञ और दान बहु भांति सों करत हैं॥ तीन काल में न्हाये इन्द्रियों को वस लाये करे बनवास

विषै वासना तजत हैं। जोग और जग जप तप
अनेक करे बिना भगवन्त भगत भव ना तरत हैं ॥

जलें गढ़ें वढ़ें उड़ जायें—परकाया प्रवेश करायें।
और पराये मन की जाने—चल कर जायें तहां मन माने ॥
भूलें जहां चतुर और ज्ञानी—उनको तजे भगत तृण जानी

॥ शैर ॥

सरमद ग़मे इश्क़ बुल हविस रा न दहन्द ,
सोज़े दिले परवाना मगस रा न दहन्द ।
उमरें बायद के यार आयद बकिनार ,
ईं दौलते सरमद हमा कस रा न दहन्द ॥

अर्थ—ऐ सरमद झूठी हवस रखने वाले को इश्क़ हक़ीकी या भगवत प्रेम का सच्चा दर्द (पीर) हासिल नहीं हो सकता। (जो सच्चा प्रेमी होगा केवल वही परमात्मा के प्रेम में लवलीन हो कर उस की पीर वा दुःख को सहन कर सकता है।) पर वाना (पतङ्ग) जैसा हर समय प्रेम की अग्नि से जलने वाला दिल, खाली भिन भिन करने वाली मक्खी को नहीं मिल सकता। एक उमर व्यतीत करने को चाहिये तब कहीं अपने प्यारे यार (प्रीतम) से मिलना हो सकता है। सरमद—यह वह दौलत है कि जो हर एक को नहीं दी जा सकती।

॥ शैर ॥

चाशनीये दर्दे इश्क क़ाबिले हर सिफ़ला नेस्त ।
ज़हर ज़ ख़्वाने शहां नामवरे रा दहन्द ॥
इसरारे मुहब्बत रा हर दिल न बुवद क़ाबिल ।
दुर नेस्त बहर दरिया ज़र नेस्त बहर काने ॥

अर्थ—इश्क़ या भगवत प्रेम की पीर की चाशनी को पाने का अधिकारी हर कमीना (साधारण वृत्ती का मनुष्य) नहीं हो सकता । मतलब यह है कि भगवत भक्ती के दरद और मिठास भरे प्रेम रसको पा लेना साधारण मनुष्य का काम नहीं है बादशाहों के दस्तर ख्वान से ज़हर उसी मनुष्य को दिया जाता है कि जो प्रसिद्ध हो चुका हो । मतलब यह है कि बादशाह के दरबार में दाखिल हो कर जो बादशाह का कृपापात्र बनकर मशहूर होगया उसको ज़हर मिलने से अपने प्रान भी तजने पड़ते हैं ।

भगवत प्रेम के गुप्त भेदों को जान लेने का अधिकारी हर एक का दिल नहीं होसकता, हर दरिया में मोती नहीं होते न हर खान से सोना निकल सकता है ।

लेखक:—

वह साधु साहब पवित्र आत्मा (परमहंसजी महाराज जिन का जीवनचरित्र लिखा जारहा है) स्वयं ही थे, परन्तु ऐसी बातों को अपनी की हुई नहीं बताते थे, बलके इनको तुच्छ समझते थे ।

॥ शेर ॥

खुद शनासी कार बाशद अय फ़लां ।
कारे दीगर हेच ओ पोच ओ हेच दां ॥

अर्थ—अय फलाने अपने आप को पहचान लेना ही असली काम है। निज आत्मज्ञान होजाना ही जीवन का कर्तव्य है। और दूसरे सब काम हेच पोच या वृथा ही है। अकसर लोगों की तो यह लालसा होती है कि—

॥ शेर ॥

यारब चे खुशस्त बे दहां खन्दी दन ।
बे वास्तये चश्म जहां रा दीदन ॥
बनशीनो सफ़र कुन कि बग़ायत खूबस्त ।
बे मिन्नते पा गिर्दे जहां गर दीदन ॥

अर्थात्—हे परमात्मा ! यह कैसी अच्छी बात हो कि हम बग़ैर मुँह के हँसें, बग़ैर नेत्रों की सहायता के तमाम संसार की लीला देख सकें, बैठ कर सफ़र करें, यह कितनी अच्छी बात है। और पैरों का अहसान उठाये बग़ैर तमाम संसार भर का चक्कर लगा सकें (यह भी कितनी अच्छी बात है)। (यह सिद्धियां सन्त महात्माओं और प्रेमी साधन करने वालों को ही हासिल हो सकती है, पर योग सिद्धियों को दिखाते फिरना असली सन्त का काम नहीं है)।

(२१) एकदिन श्रीमुख से यह इरशाद हुआ कि जब हम डुमराओं में पहुंचे तो हमनें केले के पत्ते की कोपीन धारण करली। यहां लग भग दो तीन मास तक ठहरे। महाराज साहब के तालाब पर ठाकुरजी का मन्दिर था, वहीं बैठ रहते थे और बहुधा नन्दन वन की ओर जो वहां से निकट था सैर करने चले जाते थे। और बिलकुल स्वतन्त्र रहते थे। उज्जैन नगरी के प्रतापी महाराजा वीर-विक्रमादित्य के कुटुम्ब में से राओ महाराजा राधाप्रशादसिंह जी उस समय राज करते थे। उन्हों ने ग़दर के समय सरकार की बडी मदद की थी इस लिये सरकार उनका बडा सनमान् करती थी। महाराजा साहब के अतालीक़ बाबू जैप्रकाशलाल की स्त्री और भावज बड़ी हरिभक्त थीं, और उन का साला शिवदत्तलाल नामक जो उनके पास ही रहता था हमारी बडी सेवा करता था। बहुधा हमारे खाने पीने की चिन्ता यही रखते थे। और स्त्रियां उनके हाथ या बांदी के हाथों खाने पीने की वस्तु हमारे लिए भेजतीं थीं। दूसरे तीसरे दिन कभी हम भी उन के घर चले जाते। स्वयं तो मास्टरसाहब अधिक भगत न थे। उनके साले साहब कहा करते थे, कि मास्टर साहब से मिलने पर वह आपकी बड़ी खातिर करेंगे और महाराजा साहब से भी भेंट करादेंगे परन्तु हमें इसका कुछ भी ध्यान न था।

(२२) एकदिन इरसाद हुआ कि डुमराओं में एक

महात्मा के दर्शन हुए देखने से उनकी आयु ९५ वर्ष की मालूम होती थी, और रूप व देह में हमारे गुरु श्री परमहंस जी महाराज केदारघाट वालों से मिलते थे। किसी से बातचीत या उपदेश तक की बात न करते थे परन्तु मौन भी न थे। अपनी खुशी कुछ बोला करते थे, यदि कोई बातचीत करना चाहता तो कानों पर हाथ धर के कान मलते हुए भाग जाते थे। उनको खाने पीने में जाति व धर्म्म का कुछ विचार न था। चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान जो कोई बेचाहना के ले जाकर और अपने हाथसे कौर बनाकर खिलाता तो एक दो कौर खा लेते और चल देते। वस्त्र में केवल एक लंगोट था उसकी भी कुछ सुध न थी, कभी लांग लगी है तो कभी खुली है। चाहे शरीर दीखा करो यदि किसी ने लांग लगादी तो कुछ नहीं और खुली रहे तो कुछ नहीं। इस से ज्ञात होता था कि उनको स्वयं इसका विचार न था। उनका नित्य-नियम था कि बाग़ या तालाब या नन्दन बन की ओर से आते और सीधे बाज़ार में हो कर निकल जाते। हम से बहुधा मिलते थे परन्तु बात चीत कभी न करते थे और न हमने ही कोई काम के सम्बन्ध में कभी पूंछा। पहचान से ऐसा ज्ञात होता था कि महात्माओं की अन्त की पदवी तक पहुँचे हुए थे। यानी कुल रास्ता समाप्त कर चुके थे। उन की वृत्ति मजज़ूबों की सी थी, परन्तु बकने या चिल्लाने की दशा न थी। किसी को कठोर वचन

भी न कहते थे केवल अपने को बचाते थे। ऐसी मजज़ूबी सिल्क में ही गिनी जाती है। वहां के लोग कहते थे कि इन महात्मा का ३६ वर्ष से इस बाज़ार में आना जाना है। इस कुल समय में उन्हों ने दो बार दो मनुष्यों की ओर देख कर बात की है। यानी एक मनुष्य को आशीर्वाद दिया और दूसरे को श्राप। वह दोनों बातें उन की पूरी हो गईं उन का वर्णन यों है:—

जिस आदमी को आशीर्वाद दिया था उनका नाम लाला ईश्वरीप्रसाद था, और यह महाराजा साहब के परम्परा के खानदानी मुंशी थे। तेरह रुपये मासिक वेतन था। उनके दो लड़के थे, जिनका नाम रणधीरप्रसाद व मथुराप्रसाद था। उनका वेतन इतना कम था कि बड़ी कठिनाई से घर का खर्च चलता था, परन्तु बड़े ईमानदार और सत्सङ्गी थे। उनके घरकी ड्योढ़ी में एक लकड़ी का तख्त बिछा हुआ था। और यह महात्मा अकसर वहां जाकर लेट रहते और लाला साहब का यह नियम था कि थोड़ी रोटी और दाल इत्यादि जो घर में बनती उस तख्त पर उन महात्मा के लिये रख देते वो जब कभी आते और मौज़ होती तो खा लेते थे। स्त्रियां बहुधा लाला साहब से कहतीं थीं कि तुम उन महात्मा से आशीर्वाद के लिये प्रार्थना करो, परन्तु वह टाल देते थे, और कहते थे कि मेरे बड़े भाग हैं जो कभी दर्शन देकर परशाद पाजाते हैं. कहीं प्रार्थना करने से अप्रसन्न हो

गये तो आना भी बन्द करदेंगे। परन्तु जब उन लड़कों आदि के विवाह का समय आया तो स्त्रियों ने बहुत कहा सुना, उस रोज़ साहस किया कि अच्छा आज कुछ कहेंगे। और खाना लेकर नीचे उतरे, अकस्मात् महात्मा भी वहां उपस्थित थे। लाला साहब को देख कर बिना विनय कीये ही स्वयं ही कहा कि "तुमको तेरह लाख का आदमी किया" इतना कह कर चुप होगये। लाला साहब ने भी अधिक कुछ न पूंछा, परन्तु बडे आश्चर्य में थे कि कहां मैं और कहां तेरह लाख? परन्तु उनके बचन पर पूरा विश्वास था। उन्हीं दिनों में राओ महाराजा महेश्वरसिंह राजपाट का काम छोड़ कर काशीजी तप करने को चले गये, और उनके पुत्र राओ महाराजा राधाप्रसादसिंह गद्दी पर बैठे थे। उन्हों ने उस समय जो दीवान थे उन से कहा कि इन इन तालुकेदारों ने बहुत समय से सरकारी लगान नहीं दीया और न आपने उन के हिसाब किताब की जांच कराई। अब इस का तुरन्त प्रबन्ध होना चाहिये। दीवान साहब ने विनय की कि उन तालुकेदारों से हमारा पुराना कुटुम्बी सम्बन्ध है, इसलिये मैं स्वयं तो उनके हिसाब की जांच नहीं कर सकता, उन का हिसाब अवश्य बुरा है! व्यर्थ अनबन होगी, और दूसरा कोई भरोसे का आदमी मिला नहीं। हां एक आदमी ईश्वरीप्रसाद नामक भरोसे का है, उसको कल जाने को कहूंगा। दूसरे दिन लाला साहब को अहेरिया गांव

की जांच करने की आज्ञा मिली। जाकर हिसाब देखा तो लाखों रुपये का पता न था। पांडे तालुक़दार ने बड़ी चापलूसी की, और कहा कि यदि आप इस बात को दबा दें तो आपको चार लाख रुपया दूँगा। यह वहां से आये और दीवान साहब से कुल हाल कह सुनाया। दीवान साहब ने कहा कि महाराजा साहब से तुम स्वयं जाकर सब हाल कहदो। उन्हों ने महाराजा साहब से कुल हाल कहा, उन्हों ने दीवान साहब को बुला कर कहा कि देखो यह आदमी कैसा ईमानदार है कि इसने चार लाख रुपये को भी स्वीकार नहीं किया। अब मेरा यह विचार है कि उन लोगों से सरकारी रुपये मिलने की तो कोई आशा है नहीं अगर इस ग़रीब का भला होजाय तो क्या हानि है इसलिये उनको बुला कर कहदिया जाय कि तुम जाकर वो चार लाख रुपया लेलो। सारांश कि लाला साहब ने वो चार लाख रुपया ले लीया।

इस के पश्चात् चैनपुर और भवान गांव की जांच की आज्ञा हुई और महाराज साहब ने यह भी कह दीया कि यह लोग हमारे भाई बन्धु हैं इन पर हम कुछ ताड़ना नहीं कर सकते, सरकारी रुपये मिलने की तो कोई आशा नहीं है जो कुछ तुमको दें अवश्य लेलेना। सारांश उन दोनों गांव के तालुक़ेदारों ने भी लगभग आठ लाख रुपये दीये। और एक लाख के लगभग राज से इनाम मिला, और वह तेरह लाख रुपया पूरा होगया। इस के

पश्चात् महाराजा साहब को इन से ऐसी प्रीति होगई और निजी तौर पर यहां तक कह दीया कि यदि राज के खम्भे तक बिक जावें उस समय तक भी परमात्मा ने चाहा तो हमारी तुम्हारी प्रीति में अन्तर न पड़ेगा; और उन के कारण से लाला साहब को और बहुत कुछ प्राप्ति हुई।

और आप का हाल इस प्रकार है कि जब लाला ईश्वरीप्रसाद को यह आशीर्वाद मिला तो और लोगों को भी लौ लगी, और महात्मा का पीछा पकड़ा। एक साहब वासिलउद्दीन इन्सपैक्टर पुलिस ने तो यह हाल कर दीया कि हर समय आशीर्वाद के ही फ़िराक़ में रहते। एक दिन यह थाने में कुरसी पर बैठे थे कि वह महात्मा भी थाने में चले आये और उनके सामने ही एक कुरसी पर बैठ कर कहा कि "वासिलउद्दीन तुम बरखास्त" (यानी नौकरी से अलग) यह कह कर चल दीये। अब क्या था ? इन्सपैक्टर साहब का खून सूख गया। श्याम की डाक खोली तो हुकुम मिला कि उस मनुष्य बध के मुक़द्दमे में तुम ने सचाई को छुपाया इस कारण तुम नौकरी से अलग कीये गये। अब इन्सपैक्टर साहब ने अपने बालबच्चों व सारे सामान को तो घर भेज दिया और महात्मा के पीछे हो लिये कि अब इस बुढ़ापे में ऐसी नौकरी तो मिलने से रही अब जायें तो कहां जायें।

यदि कुछ आशा पूर्ण होने की आशा है तो उन्हीं महात्मा से है। जब इन्सपैक्टर साहब को बहुत समय घूमते हो-गया तो एक दिन खड़े हो कर कहने लगे कि "चला जा रांची" और फिर भाग पड़े। बस इन्सपैक्टर साहब उसी दिन रांची चले गये, वहां अफ़ीम की कोठी में बड़े बाबू की जगह खाली थी। साहब बहादुर ने एक बकस रखवा दिया और आज्ञा दी कि सारे पदाभिलाषी सुबह अपनी अर्ज़ी उस में डालें और आज्ञा पाने के लिये ठहरें। उन्हों ने भी अपनी अर्ज़ी डाली। अफ़्सर ने उन की अर्जी तो ले ली और सब की अर्जियां लौटा दीं और फिर बाहर आकर इन से पूंछा कि वासिल उद्दीन तुम ने हम को पहचाना। उन्हों ने कहा कि हज़ूर मैंने तो आप को नहीं पहचाना। फिर साहब बहादुर ने अपना नाम लिया तब उन्हों ने कहा कि हां हज़ूर उस जगह आप सुपरिन्टैन्डैन्ट पुलिस थे और मैं वहां इन्सपैक्टर था फिर साहब ने सब हाल पूंछ कर वह जगह उन को दे दी। और सब पदाभिलाषियों को कहा कि आप लोग जावें यह हमारा पुराना कर्मचारि है हमने इस को पसन्द किया। और अस्सी रुपये महीना वेतन और तीन हज़ार रुपया कमीशन की गुमाश्तगीरी की जगह दी।

(२३) एक दिन इरशाद हुआ कि डमराओं से चलने के समय स्वयं ही ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि

कोई कितनी भी सेवा व हठ करे परन्तु तीन दिन से अ-
धिक ठहरना किसी भी स्थान पर उचित नहीं है।
सारांश पटने की ओर चल दीये। और जितने भी गांव
इत्यादि रास्ते में पड़े दो रात्रि से अधिक कहीं न ठहरे।
बहुधा प्रातःकाल से दिन के आठ या नौ बजे तक चलते
थे, और जंगल या नदी या तालाव के किनारे या बरगद
(बड़) या पीपल के वृक्ष के नीचे ठहरते थे। राह में
महाराज गंज, बढ़पुर, बीसूपुर, बिलौटी, आरा, वेहटा,
खगौल, दीनापुर, बांकीपुर इत्यादि स्थान पड़े। यहां से
लोदी, कटडा आदि की सैर करते हुए पटना पहुँचे।
यहां पर एक लाला जैप्रकाशलाल पटना निवासी कर्मचारी
मोहकमः अफ़ीम बड़े हरिभक्त और सत्सङ्गी थे। उन्हों
ने हमारी बड़ी सेवा की। दो चार वर्ष जब तक पास के
स्थानों में घूमे घूमते फिरते इन्हीं के यहां ठहरा करते थे।
भ्रमण दशा में दस पांच दिन कभी मास दो मास के
लिये मौन धारण करलेते थे। और केवल चने या
सूखी रोटी खाते थे। इन स्थानों में अधिक
ठहरने का कारण यह था कि यह स्थान गंगाजी के
किनारे पर हैं। जल आदि का हर प्रकार का सुख था
और जहां तहां तालाव व नदी थीं। यों कि बि-
छौना इछौना व लोटा झोली तो कुछ थी नहीं, किसी
ने पानी पिला दिया तो हरीच्छा वरना यों ही कटती थी।
मोसम जाड़े ग़र्मी का भी अधिक ध्यान न था। केवल

दिशा शौच के सुख का ध्यान था । यदि किसी के घर कभी अकस्मात् जाना होता तो पहले तालाब आदि पर दिशा इत्यादि से निवृत्त हो कर जाते थे । इस लिये जहां जल का सुख मिलता था वही स्थान अच्छा लगता था । यहां से चल कर मोतीहारी, सोनपुर, हरीहर क्षेत्र, गंगा जल इत्यादि में भी भ्रमण करते रहे । सोनपुर में बाबू बिहारीसिंह क्षत्री और गंगाजल में ठाकुर गोबिन्दराजसिंह क्षत्री व स्थानबघी में बाबू नन्दलाल बड़े भक्त थे, भ्रमण करने की दशा में एक दो दिन के लिये कभी कभी इन सज्जनों के यहां ठहरना होता तो बडी सेवा करते थे, इस से अधिक ठहरने का कभी अवकाश न हुआ ।

(२४) एक दिन श्रीमुख से यह इरशाद हुआ कि जब हम मोतीहारी इत्यादि ज़िलों में भ्रमण कर रहे थे, तो एक दिन एक गांव में उस का नाम हमको ठीक याद नहीं है, दो तीन दिन ठहरना हुआ । एक दिन उस गांव के दश बारह आदमी हमारे पास आये, और कहने लगे कि इस गांव के दक्षिण और एक बरसाती नदी है, उस की परली पार एक बाग़ और तालाब बहुत अच्छा है, हम सब लोग वहीं जाते हैं । आप भी साथ चलिये । वह स्थान भी साधु महात्माओं के देखने व ठहरने योग्य है । और आश्चर्य नहीं वहां किसी साधु के दर्शन हो जायें ।

तो 'एक पन्थ दो काज' की कहावत होजाय । हम भी उन के साथ होलिए । वह सब आदमी लगभग एक ही अवस्था के थे, और न तो अधिक सत्संगी थे, और न बिलकुल विमुख । साधारण योग्यता के मनुष्य थे, इस लिये वह सब खेलते कूदते वहां पंहुचे ठंडाई आदि बनी। चांदनी रात होने के कारण सैर सपाटा करते देर होगई । वह स्थान वास्तव में बड़ा रमणीय था, और गांव से दो मील दूर था, वहां से आठ नौ बजे लौटे । रास्ते में जो नदी पड़ती थी, उस में बहता हुआ पानी तो न था परन्तु जहां तहां गढ़ों में पानी भरा हुआ था और गांव के मुर्दे वहीं जला करते थे । वह सब लोग चाँदनी रात के कारण और कुछ भांग के नशे में खूब हँसते खेलते और गाते हुए चले आरहे थे, जब नदी के निकट पहुंचे तो अकस्मात् एक बहुत ही लम्बा और काला आदमी लग भग पचास गज़ की दूरी पर दिखाई दिया । वह कभी तो इतना लम्बा ज्ञात होता था कि उसके शरीर का अन्त ही नहीं दिखाई देता था और कभी उस का शरीर जांच में आजाता था । शरीर उसका पतला था और सब शरीर के देखते सिर बहुत ही बड़ा और बेडोल था । नदी के किनारे इधर से उधर और उधर से इधर बड़े वेग से दौड़ता था परन्तु कुछ बोलता न था और उसी जगह पर एक आदमी के डील की प्रतिमा जिस के वस्त्र बहुत ही सफ़ेद थे और लम्बी सफ़ेद डाढ़ी थी एक हाथ में लकड़ी लिए नदी के किनारे धीरे धीरे

चल रही थी और यह कहती जाती थी— "मुझे जाना है बड़ी दूर वत्तीस कहार चाहिये ज़रूर"—उस समय चांदनी इतनी स्वच्छ थी कि उन की सूरत व शक्ल हमको भली भांति दिखाई देती थी। इन दोनों सूरतों को देखकर उन सबके नशे हिरन होगये। हंसना गाना सब भूल गये। बिलकुल सिट्टी जाती रही। सुध बुध बिगड़ गई और ऐसे डर गये कि मुंह से बात भी न निकलती थी। केवल इतना कहा यह भूत हैं। इन के बारे में गांव के लोंगो से भी हम ने सुना है अब आप हम को बचाइए और सब हमारे गले से चिपट गये। हमने कहा कि डरो मत और मुझको छोड़ दो। यदि तुम इस तरह से पकड़ोगे तो हम और तुम सब यहीं रहजावेंगे। मैं आगे आगे चलता हूँ और तुम सब मेरे पीछे चले आओ और उनके जी समझाने को कह दिया कि मैं कुछ मन्त्र पढ़ता हूँ डरना मत। तुम सब लोग राम राम कहो। यह कह कर हम आगे होगये और वह सब हमारे पीछे हो लिये। हम लोगों का रास्ता तो वही था जहां यह दोनों प्रतिमायें फिर रहीं थी। परन्तु मैंने थोड़ा कतरा कर और उनके रास्ते को बचा कर चलना शुरू किया, जब हम लोगों ने नदी उतरली तो वह सब हमारे आगे हो लीये और हम उन के पीछे रहे और लगभग आधे मील तक वह बोल सुनाई दिया, और वह सूरत दिखाई दी। जब हम गांव में पहुँचे तो सब लोगों से उसके बारे में

बात चीत हुई उन्हों ने कहा कि बहुत समय से यहां यह बात दिखाई देती है। और बड़े बूढ़ों से ऐसा सुना है कि कोई धनाढ्य या व्यापारी अपने नौकर चाकरों के साथ यात्रा कर रहा था और इस स्थान पर उसे डाकुओं ने लूटा उस का सब सामान ले गये और उसेका भी मार डाला उसी की आत्मा अपनी दूर की यात्रा और कहारों की आवश्यकता कहा करती है और काली सूरत या तो उस अमीर के किसी नोकर की रूह है या उन डाकुओं में से किसी की है जो उस के नौकर चाकरों के हाथ से मारा गया हो।

(२५) एक दिन इरशाद हुआ कि गङ्गा की दक्षिण ओर के इलाकों में देशाटन करने के पश्चात् फिर बलिया, ग़ाज़ीपुर, सारन, चम्पारन आदि स्थानों में जो गङ्गाजी के उत्तर की ओर हैं घूमते रहे यह सब गङ्गाजी सोनभद्रा, देवहा व गन्दक के आस पास बसे हुए हैं। यहां से चल कर उत्तर की ओर बितिया के राज में चले गये। देशाटन के समय कई अच्छे अच्छे महात्मा और योग अभ्यासी साधुओं से भेंट हुई इन लोगों ने जो हम पर कृपा की उसके प्रगट करने की आज्ञा नहीं दी गई वरन एक महात्मा ने उस को प्रकट करने के लिये बिलकुल मना किया था परन्तु हमने प्रेमवश एक आदमी से प्रगट कर दी। इस बात पर उन्हों ने बड़ा दुःख माना

और कहा कि खैर जो तुम ने किया सो किया आगे को ध्यान रखना इस भेद के कहदेनेसे हम को महान दुःख हुआ और हमारी दशा में कुछ अन्तर पड़ गया परन्तु वह अन्तर नाम मात्र थोड़े दिनों के लिये था फिर भी उसके कारण पहले विचारो में बहुत भेद होगया जिस के कारण अब तक लोगों के मकान पर ठहरने का योग हो जाता है और प्रेमवश हो जाता हूं इस से पहले मोह व प्रेम अच्छा नहीं लगता था और सांसारिक बातों के विषय में जो बात चीत करता था सो अच्छी नहीं लगती थी हां सत्संग की बात चीत अच्छी लगती थी वैराग की दशा में यह भजन अति अच्छा लगता था—

भजन

हम से कूकर को मत नीको ।
जा जा तू रसना राम के भजन में, जो बोयो सो फीको ॥
हम से०
कूकर रहत किसान के द्वारे, जो देवे सो पावे ।
मेरो मनुआ ऐसो लोभी दर दर मोहि भरमावे ॥ हम से०
कूकर रहत है नैम धरम से, निरख निरख कंठ खोले ।
मेरो मनुआ ऐसो लालची पलक पलक चित डोले ॥ हम०
कूकर अपनो काज संभारे, हम ऐसो काज बिगाड़े ।
कहे गुरु नानक नाम देओ, कूकर सरन पड़े निस्तारे ॥ हम०

(२६) एक दिन इरशाद हुआ कि वितिया में रानी

जी के तालाब पर स्थिति थी, महाराजा साहब व रानी जी साहिबा दोनों बड़े साधू सेवी और हरि भक्त थे। उनकी ड्योढ़ी यानी फाटक के ऊपर एक गोसांई जी रहते थे। बहुत सुन्दर, सूरत के अच्छे, बलवान और बलिष्ट जवान थे। वह हमारा बड़ा ध्यान रखते थे, और दूध इत्यादि लाया करते थे। इन गुसांई जी महाराज व महाराजा व महारानी जी की सेवा व संभाल से वहां पर अकसर साधू महात्माओं का निवास था। गुसांई जी जैसे दिखनौटी जवान व सूरत शकल में अच्छे थे वैसे ही स्वभाव में भी एक ही थे।

(२७) एक दिन इरशाद हुआ कि सम्वत् १९२० से १९३६ विक्रमी तक अथवा १५ या १६ वर्ष बराबर भ्रमण करने के बाद जब बितिया राज में थे उस समय एक दिन मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि कोई स्थान शहर के बाहर मिलता जहां दिशा व जल आदि का सुख होता तो अपनी मर्ज़ी से वहीं ठहरते। इन विचारों के उत्तर में गुरू की ओर से यह आज्ञा हुई कि इस ओर का देशाटन छोड़ कर काठियावाड़ देश व द्वारिका जी आदि का देशाटन करो।

(२८) एकदिन इरशाद हुआ कि गुरू की आज्ञा पाते ही हमने चलने का इरादा करलिया, और श्री अयोध्या जी की ओर चल दिये। रास्ते में मुंघेर से दो तीन

साधू साथ होलिये और इसी तरह मिलते मिलते लगभग छैः मूरती होगये। उन सब ने हमको अपना सिरधरा अथवा मण्डली का महन्त मान कर सेवा टहल करनी आरम्भ की। हम उनको बारम्बार समझाते और मना करते थे परन्तु यह सेवा करनी नहीं छोड़ते थे। हमको खाली पृथ्वी पर नहीं सोने देते थे वरन् खोर या मृगचर्म जो कुछ मोजूद होता गद्दी की तरह बिछा देते थे। गांव के बाहर किसी पेड़ के नीचे खूब आसन लगा दें और घी चांवल आदि मांग कर लावें और रसोई बनाकर हमारे हाथ धुलाना इत्यादि जो सेवा महन्त की होनी चाहिये करते थे। और गांव के दूसरे मनुष्य भी ऐसा ही करते थे। राह में जो साधू मिलते गये साथ होलिये यहां तक कि अयोध्या जी पहुँचते पहुँचते लग भग १२ मूरती होगईं। पहले तो हमारा विचार द्वारिका जी तक का ही था परन्तु राह में जो साधू मिलते गये उनके कारण अभी मथुरा वृन्दावन तक का हुआ। जब बहुत मूर्तियां होगईं तो जी उकताने लगा, कुछ तो हम उन लोगों के तकल्लुफ़ से घबराये हुए थे ही, अब हम ने अलग होने का एक उपाय सोचा, अर्थात् कभी मील कभी दो मील चलकर ठहरना आरम्भ किया, क्यों कि हम यहां लौट कर पीछे आना तो चाहते ही नहीं थे केवल दिन काटते थे, परन्तु इन लोगों को यात्रा करके अपने स्थानों को पीछे आना था इसलिये इनकी हानि होने लगी। फिर तो उन लोगों ने

एक एक करके अलग होना आरम्भ किया। कोई राह में पीछे रह गया कोई टिकने के स्थान से चला गया। सारांश पांच सात दिन में सब साधू किनारा कर गये, केवल एक आदमी साथ रह गया। हमने बहुत चाहा कि किसी तरह यह भी चला जाये तो इकले ही रहें, परन्तु उसने साथ न छोड़ा। हां अकसर बात चीत होने में यह कहा करता था कि वह लोग जो चले गये हैं अब मथुराजी पहुँच गये होंगे और व्रज की सैर करते होंगे, देखो हम कब पहुँचते हैं। हमको उसकी दशा पर बहुत दुःख हुआ कि इसको साथ छोड़ना भी स्वीकार नहीं और उन लोगों के पहले पहुँचने का भी दुःख और परेखा है। अन्त में उसकी दशा पर ऐसी दया आई और विचार कीया कि किसी स्टेशनमास्टर से जाकर उसकी सिफ़ारश करके टिकट दिलवादें। हमको घर छोड़े सोलह या सत्रह वर्ष का समय होगया था, परन्तु इस समय में चाहे अपने लिये चाहे किसी और के लिये कभी किसी मनुष्य से कुछ मांगा न था; इस लिये कुछ सोच विचार था परन्तु उसकी हालत ने लाचार कर दिया, और हमने सोचा कि अब संग छोड़ना ही अच्छा है क्यों कि साथ रहने से सुख व स्वतन्त्रता नहीं है, वरन् इसके मोह और संग से आज मांगने तक की नौबत आगई। साधुओं को सङ्ग बिलकुल मना है।

---

(३६) एक दिन इरशाद हुआ कि जब उस साधू की दशा ने लाचार कर दिया तो वहां से जो बहुत पास रेल का स्टेशन था वहां जाकर बैठ गये और यह तै कर लिया कि अगर कोई भक्त या सत्संगी आकर हमारी तरफ़ ध्यान देगा तो उस का चरचा कर देंगे नहीं तो खुद बात चला कर किसी से न कहेंगे। दैव इच्छा से स्टेशन वालों ने हम से पूंछा तो हमने उस के बारे में चरचा करदी। उन्होंने सलाह कर के उसके लिए कानपुर तक का टिकट कटवा दिया और मेरे लिए भी पूंछा तो मैंने मना कर दिया कि मैं तो पैदल ही जाऊंगा। मुझको इकला रहना अच्छा लगता है। जब गाड़ी आकर ठहरी तो उस साधु को अलग होने का बहुत दुःख हुआ यहां तक कि फूट फूट कर रोने लगा। स्टेशन वालों ने हम को अपने पास ठहराने का इरादा कर लिया था मगर उस की हालत देख कर मुझको भी कह सुन कर ऐन गाड़ी के चलने के समय बैठाल दिया और रेल के गार्ड से मेरे लिये बहुत कुछ कह दिया, जिस समय उस की हद पूरी हो चुकी तो उसने दूसरे गार्ड से सिफ़ारिश करदी। हम को यह मालूम न हुआ कि गार्ड मुझको खुद ही लाया था, या उन लोगों ने आपस में कुछ हिसाब किताब कर लीया था क्यों कि मेरे पास कोई टिकट न था। हां गार्ड हर स्टेशन पर आकर पानी आदि के लीये पूंछलेता था और कुछ बात चीत

भी करता जाता था। हमारे साथी साधू का टिकट कानपुर तक का था इसलिये वहां पर गाडी से उतर पड़े परन्तु हमको इसका बहुत सोच रहा कि देखो संग दोष से यहां तक नौबत आगई।

(३०) एक रोज़ इरशाद हुआ कि कानपुर से चलने के समय लौटने का विचार न था केवल दिन बिताने से ही अभिप्राय थाः—

शैर

(१) बरंगे आसिया संगस्त हाले जिस्म ज़ारे मन।
वदस्ते दीगरे उफ़तादा अम नाचार मी गरदम॥
इनाने इख्तियारे खेश तन दारम वदस्ते ऊ।
व रफ्तारोकि ख्वाहद वर हमा रफ्तार मी गरदम॥

(२) रिश्तए दर गरदनम अफ़गन्दा दोस्त।
मी बरद हर जा कि ख़ातिर ख्वाह ओस्त॥

अर्थः—(१) मेरे खराब हालत वाले शरीर की दशा वैसी ही है जैसी कि पत्थर की चक्की की हुआ करती है कि मैं दूसरों के हाथों में पडा हुआ मजबूर होकर घूम रहा हूं। मेरे अखतियार की बाग डोर उस के हाथ में है, वह जिस चाल से चलाना चाहता है उस ही चाल से घूम रहा हूं।

अर्थः—(२) मेरे दोस्त (प्यारे प्रीतम) ने एक डोरी मेरी गर-

दन में डाल रखी है, वह जहां उसका जी चाहता है मुझे ले जाता है। सारांश कभी पूरब कभी पच्छिम इसी तरह से रमते हुये पैदल ही मथुरा जी पहुंचे। यहां पर एक महापुरुष के दर्शन हुये। बहुत ही प्रेम और कृपा से मिले और सूरत देखते ही कहने लगे कि "परमहंस रामयाद आओ मिलो" और बड़े प्रेम से मिले। उन से मिलते समय भांति भांति के राजसी बाजे का सा शब्द और चित्त में ऐसी प्रसन्नता और ऐसा प्रकाश मालूम होता था कि जिस का वर्णन नहीं हो सकता। प्रकाश में न गरमी मालूम होती थी न सरदी। एक अद्भुत आनन्द था—प्रातःकाल के चार बजे के चांद की चांदनी की तरह सुहावना था।

शैर

दिखला रही है दिल की सफ़ाई जहां की सैर।
क्या आईना लगा हुआ अपने मकां में है॥

जिधर देखें उधर प्रकाश ही मालूम होवे और राग और बाजे ही सुनाई दें, कभी बन्द न हों। प्रसन्नता पूर्वक आनन्द में फिरते रहे। घंटे आध घंटे किसी जगह घाट आदि पर बैठने का अवकाश हो तो खूब मिठाई फल और पैसा बतौर भेंट के लोग चढ़ावें और चाहें कि ध्यान से उन से बात चीत करें, परन्तु हमारी इच्छा बोलने चालने और बात चीत करने को नहीं चाहती थी

और न कुछ उनकी ओर ध्यान देते थे, वरन् उठ कर चल खड़े होते थे। उस चढ़ावे इत्यादि को हमारा साथी साधु ले लेता था। उस समय नन्दगांव, गोकुल, मथुरा, वृन्दावन आदि अर्थात् व्रज की सैर बहुत अच्छी मालूम होती थी। और जो दृश्य उस समय देखने में आया वो वर्णन नहीं हो सकता। और जो इन नेत्रों से देखने में आता है उस से अधिक भिन्न था। यहां पर कई मास रहने का अवकाश हुआ।

हर भक्तन के दरस की महिमा कही न जाय।
जन्म जन्म के पाप सब छिन में जात नसाय॥

(३१) एक दिन इरशाद हुआ कि मथुराजी से चल कर पैदल ही जैपुर पहुँचे। चूं कि यहां के महाराजा अकसर दातार और हरभक्त होते रहे हैं। यहां तक कि सारे राज्य की आमदनी का तीसरा हिस्सा पुन्य धर्म के लिये निकल जाता है। और दूसरे यह कि शहर के पास ही पहाड़, जङ्गल, झरने, बन्द, तालाव, बाग़ इत्यादि मनभावने स्थान हैं; इस कारण यहां साधु महात्माओं का अकसर ज़ियादा विश्राम रहता है। खाने पीने व धूनी पानी के सिवा और हर तरह से साधुओं का आदर-भाव होता है। यहां केवल थोड़े रोज़ ठहर कर सांभर चले गये। वहां पर एक भक्त बाबू शिवनरायण नाज़िम जयपुर राज्य के थे। उनके पास ठहरने का अवकाश

हुआ। यहां पर देवदानी बड़ा तीर्थ का स्थान है। उस की प्रशंसा में ऐसा कहा गया है कि "देवदानी और सब तीर्थों की रानी"। उसके पास ही सरमिश्टा का तालाब है। इसकी कथा पुरानों में लिखी हुई है। यहां थोड़े रोज़ ठहर कर अजमेर चले गये। पुष्करजी इत्यादि तीर्थों की सैर करते हुए उन ब्रज वाले महापुरुष से मिलने को जी चाहा इस लिये फिर मथुराजी लौट आये।

(३२) एक दिन इरशाद हुआ कि मथुराजी में उन महापुरुष को बहुत ढूंढा परन्तु उनका कहीं पता न चला। एक दिन उनको ढूंढने में बहुत ही घूमे और थक कर कालीदह के पास एक वृक्ष के नीचे उन्हीं के ध्यान में पड़ कर सोगये तो स्वप्न में उनका दर्शन हुआ उन्होंने कहा कि "मुझको क्यों ढूंढते फिरते हो, अपने आप को देखो। क्या मैं और तुम कोई जुदा २ हैं। फिर मुझे ढूंढने से क्या लाभ"। हमने उसी दशा में निवेदन कीया "अभी मुझको स्वयं अपने तईं देखने की शक्ति नहीं है। इसलिये आप जैसे महात्माओं के दर्शनों की अभिलाषा है"। यह सुन कर हंसे और कहा कि अगर तुम किसी महात्मा से मिलो तो जिस प्रकार मुझ से हाथ मिला कर मिलना हुआ है उस प्रकार हाथ मिला कर कदापि न मिलना वरन् अलग से ढोक नमस्कार कर लेना। मैंने कहा कि आज्ञा का पालन कीया जायगा; परन्तु यह बताइये कि इस प्रकार मिलने से क्या हानि होती है।

उन्हों नें कहा कि किसी मनुष्य का ऐसा स्वभाव होता है कि यदि किसी दूसरे की दी हुई वस्तु देख पाएं तो उसको छीन लेते हैं क्यों कि उस पुरुष को तो उस दुर्लभ वस्तु का मूल्य मालूम नहीं होता। हां अपनी कमाई और महनत हो तो उसमें ऐसे मनुष्यों का कुछ बस नहीं चलता। क्यों कि अधिकारी को उसका मूल्य मालूम होता है। इसके पश्चात् वह अन्तर्ध्यान होगये, उस दशा में व्रज की सैर ऐसी भली मालूम होती थी कि उसका अन्दाज़ा अनुभव पर ही है। भगत भाव और प्रेम से छाती उमड़ती थी। यह भजन बहुधा गाते थेः—

॥ भजन ॥

कर हूं मैं भक्ति सिंगार नाथ महारानी हुइयों।
सत के सेंदूर ईंगुर सुकरत
मन्दरा काजल देंयों।
मांग टीका त्रिकुटी लौ लागे
दर्शन हरी जी के पहियों॥
करहूं भक्ति०

बाजूबन्द ज्ञान दृढ़ तलरी
नथिया बुध चमकैयो।
मन करबंधी संतोष की चूड़ी
पीया हीया हरी छिब रहियों॥
ओढो महारानी होइयों।

दया के कङ्गन अक्रोध पछेली
धरम की हसली पहनहियों ।
कनक फूल अनहद सावित
बेसर विषय झुलैयों ॥
नाथ महारानी होहियों ।
सार सुरत की अंगिया साज के
सुमति की साढ़ी उढ़ैयों ।
सहज समाधि बुद्धी लेंहगा
पलही में पीया कूं रिझैयों ॥
नाथ महारानी हुइयों ।
राम याद प्यारी पीया होके
सोती माया तमकैयों ।
सुहागिन हुइके पीया को रिझाइ
रज तम मेल दुरैयों ॥
करूं मैं भगति सिंगार ओहो महारानी हुइयों ।
दर द्वार दरपन भये
जित देखूं तित तोहि ।
कांकर पाथर ठींकरी
भयी आरसी मोहि ॥

(३३) एक दिन इरशाद हुआ कि हम इसी तरह पर वृज में घूमते थे कि एक और महात्मा के दर्शन हुए, हमको देखते ही वह भी ऐसी ही प्रीति से मिले जैसे

पहले महात्मा मिले थे। इनके प्रसन्न मुख और प्रीति पर हमको पहले महात्मा की मना की हुई बात का तनिक भी ध्यान और याद न रही। जब वह हम से हाथ मिला कर चले गये तो हम को ऐसा मालूम हुआ कि पहले महात्मा से मिलने पर जो कुछ प्राप्त हुआ था उस में से एक अंश भी बाक़ी न रहा। वरन् वैराग्य की प्रसन्नता और आनन्द से भी बुरी दशा होगई। और ऐसा मालूम हुआ कि जो कुछ हमारे पास था सो सब लुट गया। जिस तरह धनवान के पास से लक्ष्मी लुट जाती है, परन्तु हमको इसकी कुछ अधिक परवाह न थी, और न हमने इस बात को किसी से कहा।

ग़म न कीजे ग़म का और शादी न कीजे ऐश की।
दोनों हालत देखिये मुंह से न कुछ फ़रमाइये॥

(३४) एक दिन इरशाद हुआ कि हम बृज से चल कर मथुरा सदर बाज़ार में आये। रास्ते से चले जाते थे कि एक सालिगराम नामक खत्री अपने द्वारे पर बैठे थे उन्होंने उठ कर बड़ी आधीनता से पैरों पर गिर कर हमको और हमारे साथी साधु को अपने घर बुला लिया और खाने पीने की बड़े तकल्लुफ़ से तय्यारी करायी और अपनी भक्ति भाव से हमें एक दिन ठहरने को लाचार कर दीया। उसने मन्त्र आदि और संतसङ्ग के बारे में बहुत कुछ बात चीत की और हालात पूंछे

परन्तु उस के विचार सांसारिक बातों की ओर अधिक थे, किसी एक ही प्रकार की पूजा पाठ की ओर अधिक ध्यान न था। इस लिये सांसारिक ज़रूरतों के पूरा होने आदि के जो मन्त्र थे वह उनको बतला दीये। यहां केवल एक ही दिन रहे और चलने का विचार करते थे कि उसी दिन स्वप्न में यह अनुभव हुआ कि "तुम्हारा विचार एक स्थान पर बैठ कर भजन करने का था, परन्तु चूंकि तुम द्वारिकाजी का विचार कर चुके हो इसलिये जयपुर होते हुए द्वारिकाजी जाना" सारांश १६४० संवत् में फिर जयपुर गये शहर से बाहर फतहसिंह की सराय में ठहरे वहां हमारे साथी साधु ने दाल बाटी बनाई और भोजन करने के पश्चात् शहर में गये—

(३५) एक दिन इरशाद हुआ कि जब शहर जयपुर में घुसे तो पहले मुहल्ला पान दरीबा में जाना हुआ यहां एक आदमी गूजर जाति का बैठा था, उससे पूंछा कि यहां कोई साधू संत का स्थान है। उसने निकट ही पर एक स्थान का पता बताया, हम पूंछते जाते थे कि एक कबीसुर कन्हैयालाल ने हम को साथ लेकर राधा-किशन के कुंड के पास श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में पहुंचा दिया वहां जो वैष्णव साधू थे उनका नाम हनूमान जी था, और एक स्त्री मीराबाई नामक बड़ी भगत भी वहां रहती थी, इन दोनों ने हर प्रकार हमारी सेवा की। इन

महात्मा के स्वभाव में अत्यन्त आधीनता थी यहां तक कि स्वयम् हमारे पैर दबाने को बैठ गये परन्तु हमने कर जोड़कर प्रार्थना की कि आप महात्मा हैं क्षमा कीजिये, परन्तु बाई जी ने बहुत मना करने पर भी न माना, वह साधु रामायण अच्छी तरह जानते थे, उसकी कथा हमको भी सुनाई, वास्तव में उनकी बानी में और अर्थ कहने में एक प्रकार की विचित्रता थी, जो पहले हमको कभी मालूम न हुई थी, श्री जगन्नाथजी के मन्दिर में दिन में कई बार भोग लगता था और हर बार वह हमें खाने को लाचार करते थे और उन्हों ने हम को दो दिन ठहर ने को लाचार करदीया और दिन दिन उनकी भक्ति बढ़ती जाती थी। और उनकी यह इच्छा थी कि हम वहीं ठहरे, परन्तु चूंकि दो दिन हमको होगये थे इसलिये अधिक ठहरना न चाहा और उनसे शहर में घूमने की आज्ञा लेकर चल दिये ।

(३६) एक दिन इरशाद हुआ कि श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर से चल कर जब हम मुहल्ले में घुसे तो पहले जुआरियों से भेंट हुई, कुछ आदमी जूआ खेल रहे थे उनसे पूंछा कि यहां किसी सत्संगी का मकान है तो एक बूढ़े आदमी ने जिसका नाम गौरीशंकर था हमको बड़ी घृणा की दृष्टी से देखा और बहुत कड़ेपन से बात चीत की. एक आदमी शङ्करलाल नामक भी वहां था

उसकी माता बहुत ही सत्संगी और हरभक्त थी, बुरी संगति से इनको जूए की लत लगगई थी परन्तु मा बाप का प्रभाव संतान में आये बिना कब रहता है:—

मा पत पूत पिता पत घोड़ा।
बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा॥

हमको देखकर खड़ा होगया और बड़ी नम्रता के साथ दण्डवत् करके कहा कि एक आदमी बाबू महावीर-प्रसाद हैं आइये मैं आपको बताऊं यह कहकर हमको उनके घर के पास तक पहुंचा कर एक आदमी मंगूलाल से कह आया कि इनको बाबू साहब से मिला दो, वह हमको मकान के आंगन में पहुंचा आया, हमारे संगी साधु ने "भगत महावीर प्रसाद" कहकर पुकारा, उनका छोटा भाई जो अंग्रेजी की पुस्तक याद कर रहा था आटा आदि लाया हमने उससे कहा कि हमें आटा नहीं चाहिये केवल बाबू साहब से मिलना है, बाबू साहब छापे खाने में नौकर थे और वहां जाने के लिये कपड़े पहिन कर तैयार थे तुरन्त नीचे उतर आये और नियम पूर्वक नमोनरायण करके आंगन में एक चौकी पर बैठ कर कुछ सत्संग की बात चीत की वहां से हमको हकीम श्यामसुन्दर लाल के मकान पर ले गये, राह में द्वारिकाजी जाने आदि की कुछ बात चीत हो चुकी थी, इसलिये उन्हों ने हकीम साहब से कहा कि इनके टिकट आदि का प्रबन्ध कर देना चाहिये

और स्वयम् छापे खाने चले गये इसी बीच में एक लाला प्रभुदयाल जी जो बख्शी खाने फ़ोज में नौकर थे वहां आगये और उनसे सत्संग की बात चीत होती रही।

(३७) एक दिन इरशाद हुआ कि लाला प्रभुदयालजी हमें एक महात्मा के पास ले गये उनका नाम किरपालसरन जी और उनके गुरू का नाम महावीरसरन जी था। श्री अयोध्याजी से वैष्णव धर्म्म भेष धारण कीया था, और श्री अयोध्याजी में जुगलासरनजी की गद्दी में से थे, उनके साथ एक जानकीदास जी उनकी गुरु बहन भी वहां थीं, दोनों नें भेष के बारे में बहुत कुछ पूंछा और उत्तर से सन्तुष्ट होगये। हमको उन्हों ने कच्ची रसोई खिलाई। हमारे सथी साधु ने कच्ची रसोई खाने से मना किया इसलिये उस के लिये बाज़ार से पकवान मंगा दीया। और हमको अपने पास ठहराने के लिये बहुत हट की जब लाला महावीरप्रसाद जी श्याम को छापेखाने से लौटे तो हमको यहां से एक और महात्मा के पास लेजाने को कहा, तो उन्हों ने बड़ी नम्रता के साथ हमको रोका, परन्तु लाला साहब हमको लौटा देने का वचन दे कर ले गये और एक महादेवजी के मन्दिर पर लेजा कर कहा कि यहां पानी आदि का पूरा प्रबन्ध है, जब तक इच्छा हो यहां ठहरिये, हम लोग भी कचहरी से लौटकर सत्सङ्ग का लाभ उठाया करेंगे। उस स्थान

पर एक साधु चन्द्रनाथजी रहते थे, उन्हों ने बड़ी नम्रता से कहा कि हम आप के दास और बालका हैं, आप यहां ही ठहरिये, हम जहां तक हो सकेगा आपकी सेवा करेंगे। और लाला साहब ने जिस जिस सेवा और बात के लिये कहा वह उन्हों ने सब स्वीकार करलीं।

(३८) एक दिन इरशाद हुआ कि साथी साधु को चन्द्रनाथजी के पास छोड़ कर, हम और लाला महावीरप्रसाद जी एक और महात्मा से मिलने गये, वह महात्मा घाट दरवाज़े धाभाई दरोग़ा रामचन्द्रजी की हवेली पर रहते थे, और दरोग़ा साहब के गुरू थे, उनका नाम स्वामी आनन्दपुरी था। इनके साथ सत्संग और वार्तालाप होने पर उन्हों ने कहा कि तुम्हारे बोल चाल और सत्सङ्ग से तुम्हारा कायस्थ होना प्रगट होता है, या तुम्हारी संगति इन लोगों से बहुत रही है। उस पर हमने लाला नरहरप्रसाद जी व लाला देवीप्रसाद जी से पालन पोषण व विद्या पाने का सब हाल कह दीया। यह बात सुनकर बहुत खुश हुए और कहने लगे कि लाला नरहरप्रसाद पूर्व जनम (गृहस्थाश्रम) में मेरी भानजी को व्याहे थे, इस रिशते से वह मेरे भानजी दामाद थे। और हँस कर कहा कि इस तरह पर तुम मेरे नवासे हुए। फिर उन्हों ने अभ्यास के बारे में पूछा, परन्तु हमको जो गुरू ने बतलाया था वह हमने उनसे नहीं कही। और

यह कहा कि मैं अभी यह बात चाहता हूँ और इस बात की खोज में हूँ कि आप जैसे किसी महात्मा से कुछ सीखूं। अभी मुझे ब्रह्मचारी की तरह पाठक ही समझिये—

माखन परम गोपाल से या विधि राखो हेत ।
ज्यों निर्धन धन पाय के भेद न काहू देत ॥

सारांश बड़े प्रेम पूर्वक कहा कि मैं उपदेश करूंगा। फिर हमको अपने सामने बिठा कर बड़े ध्यान के साथ प्राणायाम और उसकी कुंजी (यानी ज़र्ब) बतलाई और दिल पर ऐसा खिचाव और ध्यान दीया कि हम को उस वक्त ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे सूर्य की किरण किसी जगह पड़ती है उसी तरह हमारे चित्त पर उनके ध्यान से किरण अनुभव हुई, परन्तु यह अभ्यास हमारे लिये कोई नया न था, क्यों कि इसका उपदेश हम पहले ही अपने गुरु से पा चुके थे। और दूसरे और महात्माओं से भी सत्संग में प्राप्त हो चुका था। परन्तु गुरू की आज्ञा थी कि किसी से न कहना इसलिये हमने इस बात को छुपा ही रखा। जब यह सब कुछ हो चुका तो लाला महावीरप्रसाद ने कहा कि जो लोग यहां उपस्थित हैं उनको कुछ प्रसाद मिलना चाहिये और महात्मा के संकेत करने पर कोठे में से कलाकन्द व बतासे आदि जो पास में थे लाकर सब को प्रसाद के तौर पर बांट दिये और सब लोगों को यह भी प्रत्यक्ष कर दिया कि यह हमारे गुरू भाई हुए। श्याम के

लगभग पांच बजे थे। वहां पर हम तीन आदमियों के अतिरिक्त एक सनाढ्य ब्राह्मण पुजारी और एक स्त्री वुद्ध-नाथ नामक जो महात्मा से उपदेश लेने आती थी और भी कोई साधु थे। इन सब को इस बात की बड़ी प्रसन्नता हुई, क्यों कि यह सब उन महात्मा के शिष्य थे। और उनके जी में यह चिन्ता रहती थी कि हमारे गुरुमहाराज अब वृद्ध हो गये हैं, परन्तु कोई ऐसा योग्य आदमी नहीं है जिसको इनके बाद जानशीन माना जाय। इस लिये लाला साहब ने महात्मा से निवेदन किया कि हमारा यह विचार है कि आप के बाद हम इनको मानें। उस पर महात्माजी ने हमारी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि बहुत ही योग्य महात्मा हैं, परन्तु जान-शीन होने और हम को पास रखने के बारे में कुछ विशेष ध्यान न था। और होने में कुछ अप्रसन्नता भी न थी। इस ओर उनके विचार सामान्य से थे। फिर लाला साहब ने हमारे ठहरने के बारे में पूंछा कि इनको अपने पास ठहराइयेगा, या मोतीदरवाज़े गणेशजी के मन्दिर में जहां आपका स्थान है, या मैं अपने साथ ले जाऊँ तो उत्तर दीया कि जहां इनका और आप का विचार हो वहीं ठहरें। हमें स्वीकार है। उस वैष्णव साधु के लिये पूंछा तो कह दीया कि यह कोई पढ़ा लिखा नहीं है केवल हिन्दी के अक्षर पहचानता है उसे कहां ठहराया जाय तो कहा कि जहां अब ठहरे हैं वहीं रहने दो या एक

वैष्णव साधु रंगरामादास जी हैं. उन से मैं कहदूंगा वहां ठहरने में बहुत सुभीता होगा। ठाकुरजी का भोग मिला करेगा। उस का परशाद पाया करेगा। परन्तु जब हम से ठहरने के बारे में पूछा तो हमने कहदीया कि जहां हमारा साथी साधु ठहरेगा वहीं हम ठहरेंगे उसको अलग नहीं कर सकते। सारांश वहां से चल कर एक सज्जन कृष्णबल्लभ जी के घर गये यह बड़े सत्सङ्गी थे। वहां और भी बहुत से सत्सङ्गी इकट्ठे थे। वहां से रात को आठ बजे महादेव जी के मन्दिर से अपने साथी साधु को साथ लेकर लाला महावीरप्रसाद जी के घर आये। लाला साहब की माता भी स्वामी आनन्दपुरी जी की शिष्य थीं वह भी हम से बड़े प्रेम से मिलीं। हम सब ने साथ खाना खाया। रात को सत्संग होता रहा और हाफ़िज़ की ग़ज़ल पढ़ते रहे और फिर सोये भी वहीं

(३९) एक दिन यह शेर पढ़ाः—

चला था काबे की सिम्त को मैं,
तो मैकदे में हुआ गुज़ारा।
खुला यह उस वक्त राज़ मुझको,
किसी के मैं इख़्तियार में हूं॥

अर्थ—काबे (जो मुसल्मानों का पवित्र स्थान है) की ओर मैं जा रहा था कि शराब खाने (कलाली) में चला गया। उस समय मुझे यह अनुभव हुआ कि मैं भी

किसी के वश में हूं। और कहने लगे कि देखो अन्न-जल भी एक अद्भुत वस्तु है द्वारिकाजी का विचार था परन्तु जयपुर में ही पड़ाव पड़ गया। हम वन में घूमने वालों को शहर में ठहरना महा क्लेश था क्यों कि टट्टी आदि की ओर से चित्त को बड़ी चिन्ता रहती थी। इसलिये हमने लाला महावीरप्रसाद से कहा कि हमें बाहर टट्टी जाना अच्छा लगता है यदि इसका प्रबन्ध हो जावे तो अच्छा हो। उन्होंने हमको मोती दरवाज़े पर गणेशजी का स्थान दिखलाया, वह हमको भी अच्छा लगा। एक पुजारी पारीक जाति का रहता था। भेषधारी तो न था परन्तु उसने स्वामी आनन्दपुरी जी से उपदेश लीया था और उसके ऐसे विचार थे कि स्वामी जी के बाद वह उस स्थान पर अधिकारी हो जावेगा, कारण कि उनके और कोई चेला आदि तो था ही नहीं। लाला साहब ने उस से कहा कि यह महात्मा बड़े योग्य हैं, तुम इन से पढ़ना लिखना और इन की सेवा करना। उसने प्रत्यक्ष में तो स्वीकार कर लिया परन्तु मन में बड़ी चिन्ता हुई कि यदि यह यहां रहेंगे तो मेरा इस स्थान पर कब अधिकार होसकता है। हमने यह अनुभव कर के विचारा कि किसी का जी दुखी करके ठहरना उचित नहीं, इसलिये हमने लाला साहब से कह दीया कि खैर देखा जावेगा। प्रथम जो साधु हमारे साथ है उस का प्रबन्ध करलें। यह कह कर चन्द्रनाथ जी के पास चले आये।

श्याम को लाला साहब हम को अपने घर फिर ले गये और अपनी माताजी से कहा कि यह साधु जो साथ है इस को भी यहां ही रहने दो ताकि यह भी रहें नहीं तो यह स्वतन्त्र आदमी हैं चले जायेंगे तो हमारा मनोरथ पूरा न होगा। उन्हों ने भी इस को स्वीकार कर लीया और हम वहीं रहे। फिर वह हम को छापेखाने ले गये। मैनेजर छापेखाने का भी नाम लाला महावीरप्रसाद था बड़े योग्य और कम बोलने वाले थे। बड़े भगतभाव से आदर कीया और हम को घर ले जाने के लिये कहा। हम ने कह दीया कि हम जब आप घर नहीं थे आपके यहां हो आये हैं। आपके भाई कृष्णवल्लभ जी वहां थे। फिर बहुत सत्संग के पश्चात् उन्हों ने जाति आदि पूंछे तो हमने उत्तर दीया कि यहां जाति आदि का क्या काम। भेष के बारे में जो चाहें पूंछलें वह मैं कह सकता हूं। पूर्व जन्म की बात से क्या सारांश निकलता है। हाल की बात करनी चाहिये भूत और भविष्य की बात करने से क्या काम—

॥ शैर ॥

आदमी रा व चश्मे हाल निगर।
अज़ ख्याले परी व दी व गुज़र॥

अर्थः—आदमी को उसकी मोजूदा हालत के लिहाज़ से देखना, उस की पिछली या आगे होने वाली बातों पर ध्यान न देना चाहिये।

(४०) एक दिन श्रीमुख से यह श्लोक पढ़ा :—

सङ्ग सर्वात्मना त्याज्य सचेत त्यक्तं न शक्यते ।
ससद्भिः सह कर्त्तव्यः सतां सङ्गो हि भेषजम् ॥
कामः सर्वात्मना हेयो हातुञ्चेच्छक्यते नसः ।
मुमुक्षां प्रति तत् कार्य्यं सैव तस्यापि भेषजम् ॥

अर्थ—साधु को संग बिलकुल त्याज्य है, यदि वह त्याग न कीया जावे तो सज्जनों के साथ करना चाहिये क्यों कि सत्पुरुषों का संग औषधि रूप है । कामना का बिलकुल त्याग कर देना चाहिये । यदि यह न हो सके तो मुक्ति की कामना करनी योग्य है । वह भी उस की औषधि है । सारांश संग करना तो सज्जनों का करना और कामना करनी तो मुक्ति की करनी इस के अतिरिक्त जो संग कीया जाता है उस का फल अच्छा नहीं होता ।

और कहा कि लाला महावीरप्रसाद के जितने सत्संगी भाई थे उन के यहां किसी के यहां सुबह किसी के यहां श्याम को हमारे भोजन होने प्रारम्भ हुए । हर मुहल्ले में हर जगह क्या स्त्री क्या मरद सब की यही इच्छा थी कि सब हम को भोजन करावें चाहे दावत के तौर पर चाहे मामूली तौर पर और जहां हमारा भोजन होता था वहीं लाला साहब भी भोजन करते थे । इन के घर पर केवल हमारा साथी साधु ही भोजन करता था ।

इस बीच में साथी साधु से केवल रात को ही मिलना होता था। इस वीच में लाला साहब की माता व उन की मोसी आदि को उस साथी साधु से बात चीत करने का अच्छा अवकाश मिला। वह दिन भर उसे सब हाल पूछतीं रहती थीं। जब उस से उस की जाति और माता पिता का हाल और उस के विवाह आदि के बारे में पूंछा तो उस ने सब हाल कह दीया कि मैं गयाजी का रहने वाला हूँ और मेरे यहां खेती बाड़ी का काम होता है खेती बाड़ी के काम में बड़ा परिश्रम करना पड़ता था। पहले तो बालक समझ कर कुछ कम काम लीया जाता था परन्तु जब मेरा विवाह हो गया तब काम की ओर अधिक ध्यान दिलाया गया और मेरी ओर से आलस्य होने पर कुछ ताड़ना भी की गई। मेरे ही जितनी आयु के और मेरे ही जैसे विचार के तीन चार और लड़के भी थे हम सब ने एक दिन सलाह की कि यह काम तो इतना कष्ट कारक है उस पर भी किसी प्रकार का चैन नहीं फिर घर वालों की ताड़ना और भी कष्ट है। क्या करना चाहिये। यहां से कहीं भाग चलें तो यह दुःख निवारण हो और खाने पीने की तो चिन्ता ही क्या है कहीं महनत मज़दूरी या नौकरी कर लेंगे। परमेश्वर ने चोंच दी हैं तो चुगा अवश्य देगा। ऐसी सलाह कर के हम पांच लड़के वहां से भागे। धन और ज़ेवर जो जिस के हाथ पड़ा उसने अपने अधिकार में कीया और वहां

से चल कर काशी में आये । दो चार रुपये या चांदी की हलकी चीज़ें जो हमारे पास थीं वो रास्ते में खाने पीने में खरच होगईं । जब काशी पहुँचे तो लंघन करने की नौबत आगई । नौकरी बहुत खोजी परन्तु अंजान आदमी को जिस का कोई नहीं मददगार न ज़ामिन उसे कौन नौकर रखता है । लाचार भूंख से तंग आकर भीख मांगने पर कमर बांधी । एक जगह महन्त के यहां साधुओं के भोजन होरहे थे । हम सब वहीं जा डटे और उन का ठाट बाट और इन्तजाम देख कर जी में आया कि सब झगड़े से तो साधु ही हो जाओ । देखो यह किसी के नौकर न चाकर फिर भी कैसे स्वादिष्ट भोजन खाते और चैन करते हैं ।

करे नौकरी आवे चोट । सब से भले भीख के रोट ॥

जब वह लोग खाने बैठे तो हम को भी निर्धन समझ कर खाना खिला दिया । परन्तु खाने के बाद भी हम वहीं बैठे रहे—तो उन्होंने कारण पूंछा और कहा कि अब तुम क्या चाहते हो । हम सब ने एक स्वर होकर कह दीया कि महाराज हम साधु होना चाहते हैं हम को अपना चेला बना लीजिये । उन्होंने हमारे और हाल चाल व शादी विवाह के सम्बन्ध में पूंछा तो हमने उलटा सीधा उत्तर देदीया । और विवाह होने से मना कर दीया । और भजन करने की अभिलाषा से साधु होने का विचार प्र-

गट कीया। भजन का नाम सुनकर वहां क्या देर थी तुरन्त मूड़न होने लगा। कुछ समय तो बड़े चैन से निकला। हलवा पूरी खाना और मौज उड़ाना। परन्तु जब महन्त जी और दूसरे साधुओं ने भजन पूजन की ताड़ना करनी आरम्भ की तब तो वहां से पैर उखड़े और हम सब निकल भागे और द्वारिका जी की ठानी। अयोध्या जी के निकट इन स्वामी जी से भेंट होगई। इन को हम महन्त की जगह मानते थे। परन्तु भीड़भाड़ में इनका चित्त उकता गया। और थोडी २ दूर चल कर ठहरना आरम्भ कर दिया इस कारण वह सब साधु तो संग छोड़कर चले गये। उन्होंने मुझ से भी बारम्बार आने को कहा परन्तु मैंने स्वीकार नहीं किया। जब से इनके ही साथ हूं और मुझको इनके साथ ऐसा आराम व सुख मिला है और यह ऐसी प्रीति करते हैं कि इन को छोडने को जी नहीं चाहता। यह कथा सुनकर सब स्त्रियां रोने लगी और कहा कि तुम्हारा योग सब भ्रष्ट हो जायेगा तुमने अपनी मा और युवा स्त्री की आत्मा कल्पाई। तुम भी कभी कल न पाओगे। उन की कल्पना तुम पर पड़ेगी और जितने आंसु उन के गिरेंगे उतने ही वर्ष तुम को नरक में रहना पडेगा। यदि तुम को ऐसा ही करना था तो विवाह क्यों कीया। तुम्हारा हृदय कठोर है। तुम भजन क्या खाक करोगे। तुम अभी प्रेम का मूल्य नहीं जानते। प्रेम की बराबर संसार में कोई वस्तु नहीं है। फिर स्त्री

का प्रेम देखना चाहिये ।

प्रेम सगा सोई सगा हाडा सगा न जान ।
मात खड़ी तिरिया जले यही प्रेम को वान ॥।

सारांश उसको बिलकुल मोह के जाल में फसा लिया । साधु भी उन की दशा देख कर रोने लगा और कहा अब मैं क्या करूँ । घर भी नहीं जा सकता । स्वामी जी महाराज से अलग होने को जी नहीं चाहता । संयोग से उस दिन स्वामी आनन्दपुरी जी भी वहां गये । स्त्रियों ने उन से साथी साधु का सब हाल कहा और अनुरोध कीया कि महाराज आप भी उन को ऐसी ही सलाह दीजिये कि यह घर लौट जावें क्यों कि यह स्त्री आदि को छोड़ कर आये हैं । स्वामी जी ने भी उन के कथनानुसार साधु से कहा कि यदि यथार्थ में तुम्हारी दशा ऐसी ही है और तुम को उन का ध्यान है और मोह दूर नहीं हुआ है तो पीछे घर जाने में क्या हानि है । ब्रह्मचर्य्य में भी तो घर से अलग गुरू के पास रह कर फिर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते हैं । तुम भी इस को ऐसा ही समझना । औंगते को ठेलते का बहाना चाहिये । द्वारिका जी जाने के टिकट आदि के लिये लाला साहब ने जो चन्दा कीया था वह सब उस साधु के पास ही था । इस के सिवाय और रुपया भी था । बस विस्तर गुस्तर लेकर वह तो घर लौट जाने का नि-

चार कर के सीधे स्टेशन को चल दीये। यह सब कुछ हमारी अनुपस्थिति में हुआ। जब हम श्याम को वहां आये और साधु को घर पर न पाया तो महादेवजी के मन्दिर पर गये। वहां चन्द्रनाथ जी से मालूम हुआ कि लाला साहब की माता आदिने उसको समझा दीया है इसलिये वह सामान लेकर स्टेशन पर गया है। वह अब काशी जी या द्वारिका जी न जावेगा वरन् अपने घर गया जी जावेगा। यह सुनकर हमने फिर लाला साहब की माता आदि से कुछ न पूंछा। साथी साधु के निज के बारे में हमको कुछ भी मालूम न था। क्यों कि इन बातों का पूंछना साधुत्व के नियम के विरुद्ध है।

(४१) एक दिन इरशाद हुआ कि हम जयपुर में एक लाला साहब के घर पर गये वहां एक साधु जो कम्बल पहने थे ठहरे हुए थे। अकस्मात उस दिन लाला साहब के पुत्र को कै होने लगी। बहुत इलाज कीया परन्तु कुछ लाभ न हुआ लाला साहब ने उस कम्बल ओढ़े हुए से निवेदन कीया तो उन्होंने उसी जगह पृथ्वी से कुछ वस्तु उठाकर पानी में घोल कर लाला साहब को देदी कि बच्चे को पिला दो। उसके पिलाते ही तत्काल कै बन्द होगई। तत्पश्चात् लाला साहब ने फ़कीर साहब से पूंछा कि महाराज अब तो उसको कै न होंगी तो उन्हों ने उत्तर दीया कि अब कै न होंगी

और भविष्य में जब कभी कै होतो फिर उसके जीने की आशा नहीं है। उस दिन से अब तक फिर उनको कभी कै न हुई। एक दिन एक कश्मीरी पंडित ने उसका अनुभव करने के लिये एक गिलास में पानी भर कर और बहुत सी मक्खियां मार कर उसमें डाल दीं और फिर कुचल कर उनके पर आदि गिलास में निकाल ली। हमने पूछा पंडित साहब आज यह क्या कार्य्य कर रहे हो तो उत्तर दीया कि एक औषधि के लिये आवश्यकता है और अपने नौकर से कह दिया कि यदि आज वह लाला साहब आकर पानी मांगे तो तुम मत लाना हम स्वयम् उनको पिलावेंगे। थोड़ी देर बाद लाला साहब आये और नौकर से पानी मांगा तो पंडित साहब स्वयम् उठकर उसी गिलास के पानी में शरबत बनाकर लाये और उनको पिला दीया और इस बातको देखते रहे कि अब कै होती है या नहीं। लाला साहब तीन-चार घंटे बराबर बैठे रहे परन्तु उनको कै नहीं हुई। पीछे मैं ने पंडित साहब से कहा कि आपने बड़ा अनर्थ कीया यदि कै हो जाती तो उनके लिये तो मृत्यु का सामना था। ऐसा करना उचित नहीं है। वह भी अपने जी में बड़े लज्जित हुए।

जब श्री महाराज यह कह चुके तो एक व्यक्ति ने पूछा कि यह फकीर (साधु) कौन थे। तो आपने उत्तर

दीया कि यह वही कम्बल ओढ़ने वाले थे. जो बहुधा देहली में रहते थे। यह महात्माओं की सब से उच्च श्रेणी तक पहुंचे हुए थे। यहां तक कि संसार भर के निधि और हर एक जड़ी बूटी का गुण और उनका सफल प्रयोग वह जानते थे। कोई वस्तु उनसे छुपी न थी। यह वह श्रेणी है कि जहां विना प्रयत्न और परिश्रम के धार्मिक मत् भेद आदि स्वयम् ही लोप हो जाते हैं। वस इनका भी यही हाल था। क्यों कि धार्मिक आचार विचार के वन्धन से मुक्त थे इसलिये मुसल्मानों का तौ इन पर विश्वास कम था। परन्तु देहली के हिन्दू इनका बड़ा विश्वास करते थे स्वयम् तौ अपने शरीर पर एक कम्बल के अतिरिक्त दूसरी वस्तु न रखते थे परन्तु यह दशा थी कि राह चलते यदि किसी हिन्दू दुकानदार से कह देते कि अमुक व्यक्ति को दस सेर मिठाई देदे तो वह प्रसन्नता पूर्वक उसका पालन करता परन्तु यह भी उसको लाभ पहुंचाये विना न रहते थे किसी न किसी भांति उसका दस गुना लाभ पहुंचा देते थे। अर्थात् यह हर प्रकार से पूर्ण साधु थे।

(४२) एक दिन इरशाद हुआ कि जिस समय स्वामी दयानन्द सरस्वती जयपुर पधारे और महाराजा रामसिंहजी से मिलना चाहा तो सारे ब्राह्मणों ने इकट्ठे हो कर इस बात का प्रयत्न कीया

कि महाराजा साहब इन से न मिलें, क्योंकि वह जानते थे कि ब्राह्मणों में किसी का साहस नहीं है जो स्वामी जी से शास्त्रार्थ कर सके और महाराजा साहब को सत्यता ऐसी प्रिय है कि स्वामी जी से मिलने पर यदि मूर्ती-पूजन के खण्डन का उन को निश्चय हो गया तो सारे मन्दिरों की ईंट से ईंट बजवा देंगे। इस लिये सब ब्राह्मण जमा होकर बड़ी महारानी साहिबा के पास गये और प्रार्थना की कि हम में से किसी को स्वामी जी के साथ वार्तालाप करने की सामर्थ नहीं है। यदि आप महाराजा साहब को मिलने से न रोकेंगी तो मूर्ती पूजन का नाम मिटा देंगे। सारांश बड़ी महारानी साहिबा यानी महा-राजा रामसिंह की माता नें महाराजा साहब को बुला कर मना कीया कि स्वामी जी से न मिलें। कुछ दिवस और रह कर स्वामी जी वहां से पधार गये।

(४३) एक दिन इरशाद हुआ कि गोसाईं गोकुल पुरी जी जैपुर के महाराज श्री माधोसिंहजी के गुरू थे उन से भी मिलने का अवकाश हुआ। बड़ी अच्छी तरह से मिले। इन के चरित्र भी अद्भुत हैं। जब यह छोटे ही थे तब ही इन के माता पिता का शरीर वर्त गया। यह अपने बड़े भाई के पास रहते थे। इनकी भावज का बरताओ इन के साथ बहुत बुरा था। एक दिन उस ने बहुत ही बुरी तरह बरताओ कीया और

श्याम को जब इन के बड़े भाई आये तो उन से भी उलाहना दीया उन्हों ने भी उसकी ओर लेकर के इन को बुरा भला कहा । इस बरताओ से इन के चित्त को ऐसी बुरी चोट लगी कि आत्महत्या करने पर उतारू हो गये और घर के ऊपर जाकर वहां से नीचे गिर पड़े वहां एक अद्भुत बात हुई । पृथवी पर गिरने से पहले इन को ऐसा अनुभव हुआ कि किसी मनुष्य ने हाथों पर रोक कर इन को ज़मीन पर खड़ा कर दीया । जब आंख खोल कर इन्हों ने उसकी ओर देखा तो एक मनुष्य जिस का सदाशिवजी का सा भेष है सामने खड़ा है। उस ने इन से कहा कि बच्चा ऐसी निराश होने की क्या बात है कि तुमने प्रान होमने की ठान ली । जिस बात की तुम चिन्ता करते हो उस का कष्ट तुम को भविष्य में न होगा और किसी के निर्भर न होंगे । और एक यह आज्ञा भी हमारी ओर से है कि दो बातें तुम्हारी पूरी होंगी । अथवा दो बातों के लिये तुम जिस से जो कुछ कहदोगे वह वचन तुम्हारा अवश्य पूरा होगा । यह कह कर वह सूरत अन्तर्ध्यान होगई ।

(४४) एक दिन इरशाद हुआ कि गोसाई गोकुल-पुरी जी को दो वचनों का वरदान मिला था उस में से एक तो उन्हों ने महाराजा साहब गवालियर से कहा था कि तुम्हारे घर में लड़का होगा वह पूरा हुआ । और दूसरा

महाराजा माधोसिंहजी को जब वह जैपुर की राजभूमि छोड़ कर वृन्दावन में रहते थे उस समय इन्हों ने कहा था कि तुम को राज्य मिलेगा वह भी सिद्ध हुआ।

(४५) एक दिन यह शेर पढा:—

एकन को देत फिराये के एकन को बैठे देत है।
एकन को मांगे न देत एकन को देत न लेत है॥

और यह वचन कहे कि महाराजा रामसिंह जी जयपुर ने सचाई की खोज में हज़ार तरह से यत्न कीया और लाखों रुपया खर्च कीया। उनका यह नियम था कि सप्ताह में एक दिन अधिकतर वृहस्पति को हर एक मति और समाज के आदमियों का दरबार आम होता था और उसमें हर मनुष्य अपने नियमों को कहता था और उस पर वादाविवाद होने के पश्चात् जो बात सच्ची मालूम होती थी उसको बग़ैर भेद भाव के ग्रहण करते थे। और भी इसी प्रकार के कार्य्य प्रचलित थे। फिर भी सचाई की खोज न हुई। इसका कारण यह हुआ कि जो लोग धन की खोज में थे वह तो इस राह को जानते ही न थे और साधु सन्तों में उन्हों ने इस बात की खोज न की। अन्त समय में उन्हों ने बीबी नवाज़न को जो एक बड़ी महात्मा थीं बुलाया। लोग उनको बुलाने गये भी परन्तु वह उस समय नहीं आईं। जब लोग उनके

पीछे पड़े तो उन्हों ने यह वचन कहे "दुर्गन्ध आती है दुर्गन्ध आती है" और वहां से उठकर चलदीं और महाराजा साहब से मिलने न आईं।

(४६) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर में हाफ़िज जी (जो कुरान शरीफ़ कण्ठाग्र कर लेते हैं वह हाफ़िज कह लाते हैं) त्यागी बड़े भारी महात्मा थे इनको नेत्र शक्ति अति अधिक थी यानी यदि किसी को कोप दृष्टि या प्रसन्न दृष्टि से देख लीया तो बस रङ्ग दीया फिर वह सांसारिक काम का कदापि न रहता था पागल होकर और कपड़े फाड़ कर निकल जाता था।

(४७) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर में हकीम मौहम्मदशाह जी गृहस्थी भी बड़े अच्छे महात्मा थे। जिस किसी को उपदेश करते थे सिलसिलेदार होता था। नैत्र शक्ति जो हाफिज़ जी को थी वह इनको भी थी परन्तु उसका उपयोग करना और किसी के सांसारिक काम नाश कर देने यह उनको उचित न लगता था। इनकी सारी कार्रवाई सलूक की थी। इस कारण इनका दरज़ा हाफ़िज जी से कुछ अधिक था। इनको महाराजा साहिब जयपुर की ओर से ४) रुपये रोज़ की जागीर मिली हुई थी।

(४८) एक दिन इरशाद हुआ कि जब हम जैपुर

में थे उस समय वहां तीन मुसलमान साहब (१) हकीम मौहम्मदशाह जी गृहस्थी, (२) हाफिज़ जी त्यागी, (३) वीवी नवाज़न और पांच साहब हिन्दू अच्छे महात्मा थे (१) स्वामी आनन्दपुरी जी, (२) स्वामी गणेशपुरी जी, (३) भगवानदास जी मस्त व स्वतन्त्र, (४) सांवलदास जी सड़वा निवासी, (५) भारती जी। आख़िर के दो तो मामूली दरजे के थे। पहले तीन महात्माओं से दरजे में कुछ कम थे। इन सब में स्वामी आनन्दपुरी जी वहुत पहुँचे हुए थे उन को इस बात से प्रीति थी कि औरों को कुछ बतावें और उपदेश करें परन्तु मान अपमान का ध्यान विलकुल लोप होगया था। यहां तक कि यदि यह पृथ्वी पर बैठे हों और कोई आदमी चारपाई आदि पर बैठ जावे तो उन को इस बात का कुछ भी विचार न था। औरों में यह बात न थी परन्तु इन सबों से मुसल्मान महात्मा कुछ बढ़े हुए दरजे के थे।

(४६) एक दिन इरशाद हुआ कि स्वामी आनन्दपुरी जी की आयु जब ९० साल से अधिक होगई और मृत्यु रोग की कोई औषधी न हो सकी तो दरोग़ा धाभाई और उन के दूसरे चेलों ने उन से निवेदन किया कि आप ने किसी को अपना अधिकारी नहीं बनाया जिस को हम आप के बाद माने तो उन्हों ने हमारे लिये कहा कि मेरा अधिकारी उन्हीं को बनाना

क्यों कि वह मेरा धेवता है और इस योग्य है । और यदि वह स्वीकार न करे (क्यों कि वह स्वतन्त्र आदमी है) तो फिर मेरा अधिकारी किसी को न करना, हम को अधिकारी की आवश्यकता नहीं है । और साथ ही यह कह दीया कि वह स्वतन्त्र आदमी है हमारी तरह इस जगह पर उन के ठहरने की आशा न रखना । जब यह बात हुई हम सांभर में थे । पत्र भेज कर हमें बुलाया। जब हम पहुँचे तो दशा शोचनीय थी और बहुत निर्बल थे परन्तु बड़ी प्रीती के साथ आदर कीया। कलाकन्द आदि मगा कर खिलाया और अधिकारी बनाने के लिये लाला छोटेलाल के कहने पर कागज कलम मगवाया और उर्दू में यह लिखा "रामयाद को मानो" । लाला महावीर प्रसाद ने यह लिखावट सब को पढ़कर सुनाई और हमको भी दिखलाई । उस वक्त नित्यानन्द और राघोदास ने निवेदन कीया की हमारे लिये क्या आज्ञा है तो एक को ११) रुपये और दूसरे को ५) रुपये देने की आज्ञा दी । दरोगा जी के नोकर रामप्रताप ने जो २००) रुपये दरोगा जी की ओर से लाया था यह रुपया उनको देदिया । रात के ग्यारह बजे दरोगा रामचन्द्रजी आये और निवेदन कीया कि मेरे लिये क्या आज्ञा है तो महात्मा जी ने उत्तर दीया "अपनी करनी पार उतरनी" और कहा कि "तीन वर्ष तक हमारा ध्यान तुम्हारे घर पर और रहेगा उसके पश्चात् तुम जानो और तुम्हारा काम

जाने" दूसरे दिन दस बजे दिन के महात्मा जी ने शरीर त्याग दीया। इस समाचार को सुनकर दम की दम में हज़ारों आदमी इकट्ठे होगये और लोगों ने कहा कि महात्मा के शरीर को वहुत समय तक मकान में न रखना चाहिये इसलिये शीघ्र विमान बना कर मोतीदरवाज़े लाल डूँगरी गणेशजी के स्थान पर ले गये और वहीं उन को समाधि दी।

(५०) एक दिन इरशाद हुआ कि राजपूताने की रीति अनुसार स्वामी आनन्दपुरी जी के जीवनकाल में ही दरोग़ा रामचन्द्रजी ने उन का नुकता व भन्डारा बड़ी धूम धाम से सम्वत् १६४४ में कीया था परन्तु इन के समाधि लेने के पश्चात् भी उन्हों ने फिर भन्डारा कीया। भन्डारे के दिन महावीरप्रसाद हमारे पास भी गये और कहा कि आज कुछ भंडारा आदि है और गणेशजी के स्थान पर बड़े बड़े साधु एकत्र हैं आप भी चल कर दर्शन करें। सारांश हम को वहां लेजाकर एक आसन पर बैठाल दीया। कुछ सत्संगी महात्माओं से वार्तालाप होती रही। जब भोजन हो चुका तो उन के शिष्यों ने चादर उढ़ाने की तैयारी की परन्तु इस से पहले हम को इस का कुछ हाल मालूम न था। महाराजा जयपुर की माजी बड़ी राठोर जी स्वामी आनन्दपुरी जी को बहुत मानती थीं और उन की धवायें स्वामी ज़ी

की शिष्य थीं इसलिये नोहरे की ओर से उन्हों ने बड़ी मूल्यवान चादर भेजी थी। पहले कुछ महात्माओं ने वह चादर हमारे ऊपर डाली और पीछे दरोगा रामचन्द्रजी ने अपनी लाई हुई चादर डलवाई। नित्यानन्द मौनी जो कि ब्रह्मचारी देवानन्दजी का चेला था परन्तु उस के गुरू ने उस को निकाल दीया था और वह स्वामी आनन्दपुरी जी के पास रहा करता था इस लिये छुपे छुपे कुछ लोगों ने वहका दीया कि तू भी इस समय चादर ओढ़ले तो इस स्थान का स्वामी हो जावेगा। और सब तेरे शिष्य कहलावेंगे। स्वामी जी ने मृत्यु समय जो रुपये उस को दिलवाये थे उस से उस ने गुड़ का हलुआ बनवा कर दस वीस संयोगी स्वामियों को जिमाया और उसी दिन उसी स्थान के नीचे महादेव जी के मन्दर पर उन लोगों के हाथ से चादर ओढ़ी। पीछे उस ने घासीराम टहलुए की मिन्नत से सार्टिफिकेट के लिये एक अरज़ी दे दी। यह बात स्वामी जी के शिष्यों को बुरी मालूम हुई और उन्हों ने उस के विरुद्ध अरज़ी दी। न्यायालय दीवानी से आज्ञा हुई कि घासीराम गृहस्थी है निहंग महात्मा का अधिकारी नहीं हो सकता और नित्यानन्द को आज्ञा हुई कि तुम्हारे गवाह (साक्षिदाता) सब संयोगी हैं कोई निहंग महात्मा या प्रतिष्ठित मनुष्य उन के शिष्यों में से गवाह नहीं इसलिये तुम्हारा निवेदन पत्र भी स्वीकार नहीं। नित्यानन्द तो चुप हो बैठा परन्तु घासी-

राम ने न्यायाधीश जज के यहां और हाईकोर्ट में अपील की। परन्तु प्रत्येक न्यायालय से अपील अस्वीकृत हुई। जब यहां तक दशा हुई तो उन के सारे शिष्य एकत्र हो कर हमारे पास आये और कहा "कि घासीराम ने गुरू महाराज की आज्ञा को नहीं माना है यह सेवा टहल के योग्य नहीं आप इस को अलग कर दीजिये क्यों कि यह अधिकारी बनना चाहता है और हम उस को अपने गुरू का अधिकारी नहीं मान सकते और उन्हों ने मिल मिला कर थोड़े दिन के लिये उस को अलग भी कर दीया। और उन का विचार था कि उस को बिल्कुल अलग करदें। परन्तु हमने सब को बुला कर समझाया कि गृहस्थी होने के कारण निहङ्ग की गद्दी का अधिकारी नहीं होसकता। परन्तु स्वामी जी से उपदेश तो उस को अवश्य मिला है और २०—२५ वर्ष से स्थान पर रहता और सेवा टहल करता है अब भी समाधि पर दीया बत्ती कीया करेगा क्यों कि हमारे ठहरने का क्या भरोसा है आज यहां कल वहां। इन मकानों की हमारे कौन देख भाल करेगा। हम भजन पूजन और भगवान का ध्यान करने के कारण साधु हुए हैं यदि मठ व गद्दी की लालसा होती तो हम अपनी ज़मीन घरद्वार छोड़ कर ही क्यों आते। हम स्वयम् एक को छोड़ दो दो स्थान के स्वामी थे। और जब स्वामी जी ही इन स्थानों को छोड़ गये तो हम क्या छाती पर धर कर लेजावेंगे।

और हम को इस अधिकारी होने आदि की भी आवश्यकता न थी केवल तुम लोगों ने अपने प्रेम से ऐसा कीया है तो अपनी इच्छा और प्रीति तक ही रहने दो सांसारिक दिखावट से क्या प्रयोजन । सारांश इस प्रकार समझा बुझा कर घासीराम को फिर रखवा दीया और अपना पीछा छुड़ाया । वह लोग भी लाचार होकर चले गये । यद्यपि मोती दरवाज़े का स्थान बड़ा रमणीक था परन्तु इन लोगों के निराश होने के कारण हम कभी वहां जाकर भी न रहे । अब तक सारी ज़मीन जायदाद इसी तरह पड़ी है । लोग अब भी हमारे पीछे पड़े हैं कि हम वहां जाकर ठहरें परन्तु हम को बन्धन में रहना अच्छा नहीं लगता ।

(५१) एक दिन इरशाद हुआ कि स्वामी आनन्दपुरी जी को पहले शाक्तिधर्म का उपदेश मिलाथा और उस में उन्होंने उच्चपद प्राप्त कर लिया । आमेर में देवीजी के मन्दिर में बारह वर्ष तक तप कीया देवी और भैरों की उपासना की जब पूजन समाप्त हुआ तो अपनी जीभ काट कर चढ़ा दी और फिर देवी जी की कृपा से जीभ फिर जैसी थी वैसी होगई । पीछे एक पहुंचे हुए महात्मा की कृपा से पराया नाम ( प्राणायाम ) और अजपा का उपदेश पाया इस में भी बहुत उच्चपदको प्राप्ति कर लीया था । जब हमारा इनसे मिलना हुआ था उस समय उनकी

आयु लगभग ६४-६५ वर्ष की थी परन्तु उस समय भी शरीर पुष्ट और पराक्रम ठीक थे जल्दी चलने वाले इतने थे कि अच्छे अच्छे युवा भी पीछे भागने ही दिखाई देते थे। यह एक बडे धनाढ्य कमसरियट के गुमाश्ते के पुत्र थे। जब वैराग्य हुआ और गृह त्याग किया तो एक लाख रुपया नक़द व जवाहिरात अपने साथ लिया और यह प्रण किया कि कभी किसी से भिक्षा न मागेंगे। और उन को इसकी कभी आवश्यकता भी न हुई। सैंकड़ों बड़े २ रईस व महाराजा इनके शिष्य थे। महाराजा शिवनाथसिंह जी खेतड़ी के तो इनके बडे भारी विश्वासी थे जब कभी यह वहां जाते थे तो हजारों रुपया इनकी भेंट करते और इनकी सारी सेवा टहल अपने हाथ से करते यहां तक कि इनको अपने हाथ से चिलम तक भर कर देते थे। एक समय स्वामी जी खेतड़ी गये तो उनके पोते महाराजा अजीतसिंह ने जो आगरे में बाग़ सिकन्दरे की बुर्ज से गिर कर मर गये नक़द भेंट करने के बदले एक चिट्ठी लिख कर देदी और प्रार्थना की कि इसका रुपया ख़जानची जी (कोषाध्यक्ष) से ले लेना स्वामी जी ने हंस कर चिट्ठी लोटा दी और कहा कि हमको रुपये की तनिक भी आवश्यकता नहीं है केवल तुम्हारी प्रीति से चले आते हैं। यह सुनकर वह बहुत लज्जित हुए और क्षमा मांगी और नक़द रुपये भेट किये। जो कुछ रुपया इनके पास आता था सब निर्धन और अपाहजों को दे देते थे। अपने रुपये में से भी लग-

भग पचीस हजार के खरच कर दिया था। बाकी पिचहत्तर हज़ार जो बचा था उस के लिये दरोग़ाजी ने पूंछा तो हमारे लिये कह दिया कि उनको अधिकार है। पीछे दरोग़ाजी वह कुल रुपया हमारे पास लाये और कहा कि आप उनके अधिकारी हैं और उन्होंने ऐसी आज्ञा दी हैं कि आप को इसका अधिकार है इसलिये आप स्वयम् ले लीजिये या दान पुन्न में या जैसे चाहें खरच करिये। हमने कहा कि तुम अच्छी तरह से जानते हो कि रुपये पैसे को कभी हाथ भी नहीं लगाता फिर इस रक़म का क्या करूंगा। वह तुम्होर भी गुरू थे तुम्हीं जिस तरह से चाहो इस को काम में लाओ। उन्होंने कहा कि इसका अधिकार आप को ही है। हम तो जैसे सेवक उनके थे वैसे ही आपके भी हैं और बहुत ज़िद करने लगे परन्तु हमने उस रुपये को नहीं लिया वह उन्हीं के पास रहा और उनकी भगतन व और नोकर चाकर उस रुपये को उड़ा गये।

(५२) एक दिन इरशाद हुआ कि स्वामी आनन्दपुरी जी का चित्त बहुत परोपकारी था। यदि कोई आकर कहता कि मेरेलिये उस आदमी से यह कह दीजिये तो चाहे उसे जानते हों या न जानेत हों शीघ्र ही उद्यत हो जाते थे। इन का यह कहना था कि तन, मन, धन, जिस से भी किसी की सेवा हो सके करनी चाहिये। एक समय एक बुढ़िया रात्रि में रोती हुई आई और वड़ी

लाचारी से कहा कि मैं आप के शरण हूं मेरे केवल एक ही युवा पुत्र है उस को राज के आदमियों ने मारडालने का अपराध लगाकर पकड़ लिया है और न्यायाधीश ने फांसी की आज्ञा दे दी है। कल हाईकोर्ट में उस की अ-पील होगी। मेरे बुढ़ापे का सहारा और आखों का तारा है। मैंने सैंकड़ों हाकिमों से पुकार की परन्तु किसी ने सुनवाई न की। आप का नाम सुन कर आई हूँ। उन्हों ने कहा कि धीरज रखो और कहो कि तुम मुझ से क्या चाहती हो। उस ने कहा कि आप हाईकोर्ट के न्याया-धीश से कुछ कह सुन दें तो उस के छूट जाने की आशा हो जावे। आप ने उत्तर दीया कि मैं तो न्यायाधीश को जानता भी नहीं हूँ परन्तु खैर गुरू महाराज स्वामी हैं। यह कह कर उसी समय रात्रि को बुढ़िया को संग ले जज साहब के घर पर पहुँचे। समाचार मिलने पर और नाम सुन कर जज साहब स्वयं बाहर निकल आये और बड़ी भक्ति से दर्शन देने का कारण पूंछा तो आप ने बुढ़िया की ओर संकेत कर कहा कि इस से पूंछ लो। इस का काम ही हमारा काम है। जज साहब ने बुढ़िया को समझा बुझा कर भेज दीया और लड़के के छूट जाने का भी कुछ उपाय बता दीया। दूसरे दिन अपील में उस उपाय के कारण उस को छोड़ दीया गया। जब लोगों को यह ज्ञात होगया कि यह महात्मा केवल परोपकार के ही कारण कहने सुनने चले आते हैं और

इस काम के अतिरिक्त कभी बुलाने से भी नहीं आते तो उन के आने को भी सौभाग्य समझते और अपने भाग्य सराहते । और भरसक उनके काम में परिश्रम करते और इन की आज्ञा का पालन करते । इन की ओर से योग अभ्यास का उपदेश केवल दो मनुष्यों को था एक धाभाई दरोग़ा रामचन्द्र जी और दूसरे बाबू शिव-नरायन मन्त्री प्रधान कौंसिल यह दोनों बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य थे और बड़े आदर से सत्कार करते थे । दोनों ऋतुओं का कपड़ा पहले स्वामी जी को भेंट कर लेते थे तत् पश्चात् आप काम में लाते थे । सरदी का कपड़ा कातिक के महीने में और गरमी का वसन्त पञ्चमी या सूरज सप्तमी को चढ़ाते थे । उन का ठहरना दरोग़ा रामचन्द्रजी के घर होता था और उन्हों ने इन के ठहरने के लिये उचित प्रबन्ध कर रखा था । एक रामप्रताप ना-मक ब्राह्मण और एक राजकिशोर नामक रसोइया इन की सेवा के लिये नियत कर दीये थे ।

(५३) एक दिन इरशाद हुआ कि हम लाला महावीरप्रसाद के घर जारहे थे कि राह में एक बख़्शी शिवनरायण रहते थे उन्हों ने जाते देख राह में आकर पैर पकड़ लिये और हाथ जोड़ कर कहा कि आप बहुधा इस रास्ते से जाते आते हैं कभी हम सेवकों पर दया नहीं करते । आज यहीं पर भोजन कीजिये । हम ने कहा कि

आज तो महावीरप्रसाद के यहां जाता हूं फिर किसी रोज सम्भव है। सारांश उन्हों ने दिन और दोपहर का समय नियत कर दिया। हम ने स्वीकार कर लिया। नियत दिवस को हमारा शरीर कुछ अस्वस्थ था और ज़ुकाम आदि होगया था। परन्तु बचन दे आये थे इसलिये नियत समय पर बख़्शी जी के घर पर गये और नौकर के द्वारा उन को ख़बर कराई। बख़्शी जी ने उत्तर दीया कि बाहर बिठाल दो। हम बाहर एक तख़्त पर बैठ गये। बख़्शी जी राज के एक प्रतिष्ठित सरदार थे और दस बारह रुपये रोज़ को जीविका राज से मिली हुई थी। तिस पर भी उन को जूआ खेलने की लत थी। और उस समय भी वह अपने दो चार साथियों के साथ जूआ खेल रहे थे इसलिये हमारी चिन्ता न की—

सीप गह्यो मोती भयो कदली भयो कपूर।
एही गुन गह्यो तो विष भयो संगत को फल सूर॥

हम पहले ही से अस्वस्थ थे बाहर बैठने से जो ठंडी हवा लगी तो ज्वर चढ़ आया और धीरे २ इतना अधिक हो गया कि जी व्याकुल होने लगा। और कई बार चाहा कि उठकर चले चलो! परन्तु मोहवश न गये और यह विचार कीया कि यदि हम चले जावेंगे तो बख़्शी जी को बुरा लगेगा और कहेंगे कि तनिक भी राह न देखी। और दुबारा उन को ख़बर भी करानी

14520

उचित न समझी क्योंकि उस समय वह ऐसे ही काम में लीन थे कि कदाचित् उन को बुरा लगता और जाने क्या कह बैठते। सोचा कि बैठने को कहा है, सो बैठे रहो। यदि साफ़ उत्तर मिलजावे तो चलने में कोई दोष नहीं। इसलिये लाचार उस चढ़े ज्वर में भी तीन घंटे रात तक बैठे रहे। लगभग दस बजे रात को बख़्शी जी बाहर आये तो हम को बैठे देख पसीने पसीने हो गये। बड़ी लाचारी प्रगट की और भोजन कराने को भीतर ले गये और सब से ऊपर की छत पर खुले में बिठाल दीया। वहां पवन वेग से ज्वर और भी अधिक हो गया। ज्वर के कारण भूख तो पहले ही विदा हो चुकी थी परन्तु हमने सोचा कि दो चार कौर तो अवश्य ही खाने चाहिये। ताकि इन का मन भी रह जावे। बख़्शी जी को थूकने की बहुत आदत थी। उस समय भी उन्हों ने थूका। हमने केवल एक ही कौर खाया था और दूसरा उठाने को थे कि वह खकार हमारी थाली में आकर गिरी। बस खाने से हाथ खींच लीया परन्तु बख़्शी जी को यह कुछ भी मालूम न हुआ। और उन्हों ने खाना समाप्त करदेने का कारण पूछा तो हम ने खकार के बारे में तो कुछ कहा नहीं केवल यही कहा कि आप देखलें मुझे कितना अधिक ज्वर है। आप के मोह वश और वचन पूरा करने को चला आया हूँ। परन्तु ज्वर के कारण भोजन करने से लाचार हूँ। सारांश हाथ धोकर लौट आये।

(५४) एक दिन इरशाद हुआ कि प्रातःकाल ही लाला नारायणसहाय मिलने आये और पूछा कि कल रातको मैं बड़ी देर तक यहां हाज़िर रहा, आप कहां पधार गये थे। हमने कहा कि कल बख़शीजी के यहां भोजन था। उन्होंने पूछा कि क्या खाना खाया। वह हमारे वडे प्रेमी थे इसलिये हमने हस कर सब कथा सुना दी कि ऐसी ऐसी दशा हुई। इतने में ही बख्शी जगन्नाथ जी भी आगये। यह बड़े सत्संगी थे और साधुओं के हालात पूछने का बड़ा शौक़ था। जिस किसी साधुको देखते एक वक्त भोजन कराये विना तो जाने ही नहीं देते थे और यदि उस का भेद मिल जाता तो फिर उसकी ओर अधिक ध्यान न रहता था। हां भेद न मिलने तक रोज़ घर पर लाते भोजन कराते और सेवा करते। परन्तु इन की तबियत कहीं न मिली। जब हम से मिले तो कुछ ऐसी शान्ति होगई कि खोज व तलाश सब बन्द होगई और कहते थे कि उमर भर ढूंढ़ा परन्तु पाया तो आपको पाया। इन को दर्शनों का ऐसा नियम था कि जाड़ा गरमी बरसात चाहे कुछ भी हो यदि आधी रात तक भी समय मिल जाता तो एक बार तो मिलने अवश्य आते थे और यह दशा थी कि सुबह से श्याम तक जितनी बातें खाने पीने की यहां तक कि घर की बातें भी जो देखी व सुनी हों सब हम से आकर कहा करते थे। हमने बहुत समझाया कि हमारे पास आ-

कर कोई सत्संग की बात कीया करो। ये क्या बखेड़े ले बैठते हो। परन्तु उनही ने अपनी आदत न छोडी। जब हम ने कई वार मने करदिया तौ उन्होंने लाचार होकर कह दीया कि चाहे आप प्रसन्न हों या अप्रसन्न मैं लाचार हूं। जब तक कुल कच्चा हाल आप से न कह दूं तब तक मुझको चैन नहीं पड़ता। हम भी क्या करते चुप हो रहे। हर रोजकी तरह उन्हों ने प्रातःकाल आकर यह दुःख दायक घटना सुनाई कि न मालूम कौन से अपराध पर बख़शी शिवनरायन का सारा घर द्वार आदि सरकार ने छीन लिये और घर के सारे कागज़ पत्तर राज में ले लिये गये और बख़शी साहब राज में बन्दी हैं सब आबरू धूल होगई। चूंकि उन की जागीर में इन का भी रुपये दो रुपये का हिस्सा था इसलिये इन को बहुत शोच व दुःख हुआ। और उसकी जुआ खेलने की आदत की शिकायत करने लगे। उस समय लाला नारायणसहाय से न रहा गया और बोल उठे कि सच मुच वह इसी योग्य थे। कल स्वामीजी को भोजन का न्योता देकर जो दुःख इनको दीया उसका परिणाम भी तो कुछ मिलना चाहिये था और सब हाल बख़शी जगन्नाथ को सुना दीया चूंकि इन का हमारे ऊपर बहुत विश्वास था। इन का ध्यान जम गया कि यह सारी आपत्ति महाराज जी के अपमान करने का परिणाम है। और उन्हों ने कुछ अप्रसन्न हो कर श्राप दीया है। और यदि

कुछ होना है तो इन के ही आशीर्वाद से होना है । और हमारे पीछे पड़ गये कि आप कुछ आशीर्वाद दें । हमने उन को समझाया कि हम तो सदा यही चाहते हैं कि तुम सब लोग आनन्द पूर्वक रहो । और हमने अप्रसन्न हो कर कुछ नहीं कहा । और हम अप्रसन्न होते भी क्यों । उन्हों ने हमें भोजन कराया, सेवा की , इस में अप्रसन्न होने की क्या बात थी । यह सब उन के कर्म्मों का फल है हम इस में क्या कर सकते हैं । परन्तु उन की समझ में एक न आई । प्रथम तो हम पीछा छुड़ाने के अभि-प्राय से जयपुर से सांभर चले गये । कुछ दिनों के पश्चात् जब पीछे आये तो उन्हों ने फिर वही चर्चा छेड़ी और बख़्शी शिवनारायण के लड़के डालचन्द को भी हमारे पीछे लगा दीया । फिर हमने सोचा कि यह भगत आदमी है और बहुत समय से मिलने आता है अपने जी में क्या कहेगा कि तनक सा काम भी न कीया । इस लिये हम ने साफ़ कह दीया कि जागीर दिलवाना या उन को छुड़वाना तो हमारे हाथ में नहीं है । हां भजन आदि के करने से स्वप्न में यह मालूम हो जावेगा कि यह काम हो जावेगा या नहीं । वह इस बात पर राजी हो गये । और हमने ४० दिन का भजन आरम्भ कीया तो यह बात का अनुभव हुआ कि इन के बड़े बूढ़ों को किसी महात्मा ने एक टोपी दी थी उस को ले कर जब दहली से जयपुर आये तो उस की बरकत से

मुसाहबी मिल गयी । त्यौहार आदि पर उस टोपी को धूप आदि दीया करते थे परन्तु अब उन्हों ने वह सब काम बन्द कर दिया है और उस टोपी को निरादर से डाल रखा है इस कारण से यह सब जबती आदि हुई है। यह भी अनुभव हुआ कि बख़शी जी की व और दूसरे लोगों की जागीर पीछे मिल जावेगी । परन्तु बख़शी जी की निज की जागीर न मिलेगी । और बख़शी का पद भी न मिलेगा । यह बात ज्ञात होने पर खोज की गई तो सचमुच ही एक टोपी निकली उसे धूप आदिक दी गई । कुछ समय पर्य्यन्त परमात्मा की कृपा से और लोगों की जागीर मिल गई और बख़शी शिवनारायण छूट भी गये ।

(५५) एक दिन इरशाद हुआ कि राज्य जैपुर में एक चन्द्रभान नामक सेठ रहते थे उनके पास जो रसोइया था वह ऐसा पेटू और खाने वाला था कि चार पांच सेर खाना वह प्रत्येक दिन खाता था । ब्योपार के कारण सेठजी बंबई में जा रहे तो यह रसोइया भी उन के साथ गया । वहां पर सेठजी ने बहुत सा धन खर्च कर के एक पुस्तकालय व धर्मशाला बनवाई और साधु महात्माओं के ठहरने का अच्छा प्रबन्ध कीया । और उस रसोइये को उस की देखभाल व प्रबन्ध करने पर रख दीया । बहुधा साधु महात्मा वहां ठहरा करते थे और वह रसोइया उन की बड़ी सेवा करता था । एक

समय एक साधु वहां आकर बहुत दिनों तक ठहरे और उस रसोइये ने उन की बड़ी सेवा की और सेठजी के प्रबन्ध से भी अति प्रसन्न हुए। जब जाने लगे तो सेठ जी से कहला भेजा कि अब हम जाने वाले हैं हम से आकर मिल जाओ। जब वह आये तो उन से एकान्त में पूंछा कि किस आशा और अभिप्राय से यह सब कार्य तुम ने जारी कीया है, जो तुम्हारी कामना हो सो कहो आज पूरी हो जावेगी। सारांश जो कुछ उन को कहना सुनना था सब कह सुन लिया। तत्पश्चात् महात्मा जी ने उस रसोइये को बुलाया और कहा कि भाई तुमने भी हमारी बहुत सेवा की है बोलो उस के बदले में क्या चाहते हो ? उस ने कहा कि महाराज मैं इस पेट पापी से बड़ा लाचार हूं कोई ऐसी बात बताओ जिस से मेरी भूंख जाती रहे। उन्हों ने कहा कि अच्छा आज से भूंख न लगेगी। महात्मा जी तो वहां से चल दीये। अब उस रसोइये की यह दशा होगयी कि कहां तो चार पांच सेर प्रत्येक दिन खाता था कहां एकदम भूंख प्यास सब जाती रही। और कुछ निर्बलता भी न मालूम हुई। चित्त और भी प्रसन्न रहने लगा और वैसा ही हट्टा कट्टा बना रहा। थोड़े दिन के पश्चात् सेठ जी से छुट्टी लेकर घर चला आया और फिर पीछे लोट कर न गया। और गृहस्थी त्याग कर साधु होगया। जब सेठजी भी देश लोट कर आये और उस के साधु होजाने का समाचार

सुना तो जहां वह धूनी रमाता था वहां मिलने गये और लगभग पांच सात सेर कलाकन्द और कुछ और वस्तुऐं भी भेंट को ले गये ! बहुत देर तक बातचीत करने के उपरान्त सेठ जी ने कहा कि कुछ इस में से भोग लगाइये । तो उसने हंसकर उत्तर दीया कि हम ने तो खाना पीना सब कुछ त्याग कर रखा है और चूंकि अन्न पानी कीये बहुत वर्ष व्यतीत होगये हैं इस कारण तनकसा भी बहुत हावी करेगा । सेठ जी को यह सुनकर और उसकी पहले की दशा को स्मरण करके विश्वास नहीं हुआ । और खाने के लिये बहुत हठ की तो उसने लाचार होकर कहा कि अच्छा आप की खातिर ऐसा करता हूं परन्तु बहुत कष्ट होगा और यह कह कर एक सींक पृथ्वी से उठाकर जितना मीठा उसकी नोंक पर आया उतना उस पर रखकर खा लिया । बस उस का खाना था कि घंटे दो घंटे के पश्चात् शरीर सूजना आरम्भ हुआ और यहां तक दशा हुई कि थोड़ी ही देर में सूजकर ढोल होगया अब तो सेठजी घबराये और शीघ्र ही डाक्टर वैद्य को बुलवाया और बडे यत्न और इलाज से बहुत दिनों में वह अच्छा हुआ । फिर सेठजी ने उससे पूंछा कि यह बात तुम को कैसे प्राप्ति हुई । तो उसने सब हाल उस महात्मा का सुनाया । आपने जाने उससे क्या मांगा था । हमने केवल उस से भूंख बन्द होने की प्रार्थना की थी । उसके आशीर्वाद से यह दशा है कि भूंख नाम मात्र को नहीं

लगती। उस दिन के पीछे आप के सामने सींक की नोंक पर रख कर मिठाई खाई थी उस का जो फल हुआ सो आपने स्वयम् अपनी आंखों देख लीया। अब विचार करिये कि उसने महात्मा से मिल कर भी मांगा तो क्या मांगा। सच है—

तिही दस्ताने क़िस्मत रा च सूद अज़ रहवेर कामिल।
कि ख़िज्र अज़ आवे हैवां तिश्ना मी आरद सिकन्दर रा॥

अर्थ—जो कि भाग्य हीन हैं उन को कैसा ही सच्चा रस्ता बताने वाला क्यों न मिल जावे उन को कोई लाभ नहीं हो सकता। जैसे सिकन्दर, बादशाह, ख़िज्र (जो मुसलमानों के एक फ़रिशता हुए हैं) के जीवित रखने वाले जल या अमरत के स्थान पर पहुँच कर भी प्यासा ही लौट कर आया।

(५६) एक दिन इरशाद हुआ कि बख़शी जी को हमारे चालीस दिन भजन करने का समाचार सत्यानन्द पहरेदार से कारागृह में ही ज्ञात होगया था। जब वह छूट गये तो बहुधा हमारे पास आया करते थे।

॥ दोहा ॥

विपत बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय।
लोग कुटुम परिवार मित्र जी जान पड़े सब कोय॥

एक दिन कहने लगे कि दो चार दिन में हज़ूर साहब यानी महाराज साहब जैपुर की सालगृह ( वर्ष-गांठ ) होने वाली है आप दरोगा रामचन्द्र के द्वारा हमको भी बुलवा दीजिये तौ हमारा आना जाना आरम्भ होजावे। तत्पश्चात् इसी तरह पर क्या ठीक है, कि जागीर भी हमें पीछे मिल जावे। एक समय वह था कि हमारे द्वार पर भी गाड़ी वहली खड़ी रहती थीं और आज यह समय है। ऐसे जीने से तौ मरना अच्छा है। परन्तु मैं बड़ा पापी हूं। अपने कर्म्मों की तरफ़ जब देखता हूं तौ जागीर पीछे मिलने की आस टूट जाती है। मैंने निर्धन और अपाहजों को कदाचित् ही कभी कुछ दीया होगा। एक समय मैं बन्ध की घाटी पर गया। वहां एक भारती महात्मा रहते थे। उनका लोटा आदि लेकर काम में लाया था। चलते समय एक आना उन की भेट कीया तौ उन्हों ने कहा कि हमको कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आप स्थान पर चढ़ाते हो तौ अपनी योग्यता के अनुकूल चढ़ाओ। मैंने उत्तर दीया कि आज तक किसी साधु को कभी कुछ नहीं दिया है। तुम इस एक आने को भी वहुत कुछ समझो। और इन बातों पर पछतावा प्रगट करके आखों में आंसू भर लाये। और बड़े दुःख के साथ कहने लगे कि आप ही से अब कुछ भलाई की आशा है। आप ही मेरे लिये कुछ प्रार्थना कीजिये। उनकी लाचारी और दुःख को

देख कर हमारा चित्त वे वश होगया। और हम ने कहा कि भाई सज्जनों को ऐसी दशा में हमसे भी नहीं देखा जाता और हम तौ सदा शुभचिन्ता ही करते रहते हैं। और कुछ बेअख्तयारी की दशा में हाथ उठा कर कहा कि भाई मैं इस समय भी भगवान से प्रार्थना करता हूं कि परमात्मा तुम्हारी जागीर तुम्हें पीछे दे दे। अब तुम्हारे कर्म्मों में से यदि कुछ शेष रह गया हो तौ उसके बदले में मेरा कसास हो जावे। लो इस से अधिक मैं भगवान से क्या प्रार्थना कर सकता हूं। यह सुन कर उनको शान्ति हो गई। परमात्मा सर्वशक्तिमान है जो कुछ उसको करना स्वीकार होता है किसी न किसी प्रकार करता ही है। दो चार दिन में ही कोई कारण उनकी जागीर पीछे मिल जाने का निकाल दीया।

(५७) एक दिन यह इरशाद हुआ कि जिस दिन बख़्शीजी को जागीर पीछे मिली। उसी रात को हम ने एक स्वप्न देखा कि एक महात्मा हम से कहते हैं कि अब तक तो तुम्हारी तरवियत जमाली तोर से हुई और बरसों तक तुमने जमाली मंज़लें तै की हैं अब जलाली मंज़िलों को तै करना है। इसलिये जलाली तोर पर उस की कारवाई होगी क्योंकि जबतक तुम अपने मन पर कष्ट न सहन करोगे तब तक तुम्हारा काम खूबी से पूरा न होगा और परमात्मा की पैदा की हुई

खलकृत नयामत हिदायत से महरूम रहेगो। तुम ने यह काम अपने ऊपर ले तो लिया है, परन्तु जैसे और साधु महात्मा व ओतारों ने धर्म्म के कारण कष्ट और दुःख उठाये हैं क्या तुम भी उसी भांति दुःख व कष्ट उठाने को तय्यार हो। तो हमने उत्तर दीया कि कष्ट और उस के सहन करने की ताकृत दोनों एक ही जगह से हैं जब समय आवेगा देखा जावेगा।

पहुंचेंगे जब कहेंगे पहले कहा न जाय।
इस मन का बौरा नहीं लड़े कि भागा जाय॥

प्रातःकाल उठकर हम महात्मा महावीरसरन परमहंस जिन से हमारी अयोध्याजी में भेंट हुई थी उन के एक महात्मा शिष्य के यहां शामभरी पूजन में चले गये वहां से जब लौट कर आये तो हमने इस स्वप्न को अपने मिलने वाले कुछ सज्जनों से जो वहां उपस्थित थे कह सुनाया और इसका फल पूछा। वह इस स्वप्न को सुन कर इतने शोच और चिन्ता में होगये कि बड़ी देरतक कुछ उत्तर न दिया। हमने उन की चिन्ता दूर करने के लिये कहा कि भाई तुम एक स्वप्न के कारण इतना किस चिन्ता में पड़ गये। स्वप्न मिथ्या भी होते हैं और सच्चे भी, मान भी लिया जावे कि यदि सच्चा भी हो तो चिन्ता की कौन बात है। रज़ा मुकाम तो यही है कि जमाल और जलाल महबूब हकीकी को समान समझे।

प्रीतम् को कष्ट देना उस के सुख देने से अधिक स्वादिष्ट होता है । क्यों कि जमाल और आराम में तो हमारी और हमारे प्रीतम की भी इच्छा और मनोकामना मिली झुली होती है परन्तु जलाल और दुःख में केवल हमारी ही इच्छा व कामना होगी । यह बातें हो ही रहीं थीं कि एक मनुष्य विद्याधर नामक ब्राह्मण पधारे और बात चीत करने लगे वह उस समय शराब के नशे में चूर थे किसी बात पर अप्रसन्न होकर पहले तो हम को बुरा भला कहा और फिर गालियों पर उतर आये । उपस्थित सज्जनों को यह बात बुरी लगी और उन का कुछ और विचार था परन्तु हमने सब को मना किया और समझाया कि इस समय तुम न बोलो । हमको बुरा भला कह रहे हैं तुम बीच में क्यों बोलते हो । वह सब तो खून का सा घूंट पीकर बैठ रहे परन्तु पण्डितजी महाराज चुप न हुए और हमको छोड़ हमारे गुरू को भी बुरा भला कहना आरम्भ कीया तब तो हमने डांट कर कहा कि देखो यह बात बहुत अनुचित है । हम को चाहे जैसा बुरा भला कहलो कोई बात नहीं । परन्तु तुम जानते हो कि गुरू की पदवी साधुओं के निकट कैसी मानी गई है, हम लोग इस शरीर को नाशवान समझते हैं और गुरू के नाम पर इसको न्योछावर कर देते हैं दूसरे गुरू महाराज की इस समय क्या चरचा है अब तुम ऐसी बात न करना । परन्तु वह न माने और फिर गुरू को दुष नाम देकर

कहने लगे कि बहुत से देखे हैं, देखें तुम क्या करोगे। उस समय हमने एक शस्त्र जो वहां पड़ा था उठाकर ताड़ना के विचार से हाथ में मारा जिसकी चोट से उन की अंगुलियां कट गईं। बस फिर क्या था उसने सीधी कोतवाली की राह ली और वहां रिपोर्ट लिखाई कि अमुक साधु ने विना अपराध के मुझ को मारा है। मुक़दमा फौजदारी में चलाया गया और हम फंस गये। लोगबाग सिफ़ारिश व रिशवत आदि देकर हमारी हर प्रकार से सहायता करने पर उतारू होगये। परन्तु हम-ने सब को समझा दीया कि आप लोग व्यर्थ को परि-श्रम न करें। आपलोगों के प्रयत्न से कुछ न होगा। जिस न्यायाधीश (मजिस्ट्रेट) के मुक़दमा सुपुर्द हुआ वह बहुत ही न्याय करता और सचाई के प्रेमी थे। सब मामले को सुन कर यह न्याय कीया, कि मुद्दई का विना अपराध मारने का बयान विलकुल मिथ्या है सच मुच में जैसा महात्माजी ने कहा है ठीक है कि मुद्दई ने उनके गुरू को बुरनाम दीया। लेकिन अगर महात्मा जी पहले ही उस को मार देते तो उन को बरी कर देना ठीक था। परन्तु महात्माजी कहते हैं, कि पहले तो उन्होंने उसको समझाया और जब उसने फिर भी वैसी ही बातचीत की तब उसको मारा। इस से कुछ विचार उसको ताडना देने का प्रगट होता है और चूंकि चोट

गहरी है, इसलिये तीन वर्ष की क़ैद महज़ की जाती है। सम्वत् १६-५० में यह बात हुई थी।

(५८) एक दिन इरशाद हुआ कि जब हम जैल में पहुँचे तो वहां के सुपरिन्टैन्डैन्ट जो दरोग़ा रामचन्द्रजी के सत्संगी थे मिलने आये और कहने लगे कि आप मुझको अपना दास समझना। मैं आप के बारे में सब जानता हूँ जो सेवा मेरे योग्य हो आज्ञा देते रहें। इन की ऐसी कृपा देख कर सब आदमी ऐसे हो गये कि हम को हाथों हाथ रखने लगे! जैल के दरोग़ा स्वामी आनन्दपुरी जी के शिष्य और एक तरह से हमारे गुरुभाई थे। छोटे दरोग़ा महावीरप्रसाद के मिलने वाले थे और उन्हों ने उन से हमारी बड़ी बढ़ाई करदी थी। सिरिश्तेदार हमारे उपदेशी ही थे। इन के सिवाय भैरोंबक्स कम्पौन्डर व मोदी गोदाम जैल खाना व और चन्द महाफ़िज मेट व पहरेदार व सिपाही भी हमारे शिष्य थे। इन लोगों के अच्छे सलूक की क्या बढ़ाई करें। बस हम को यह मालूम ही नहीं होने दीया कि हम क़ैदी हैं या स्वतन्त्र। एक आदमी महमूद अली नामक क़ौम सय्यद जो भरतपुर के इलाक़े का रहने वाला था और जो मुजरिम था न मालूम उस को क्या पता लग गया कि वह हमारे पास आकर कहने लगा कि यदि आप मेरे लीये दो सौ रुपये का प्रबन्ध करादें तो मैं छूट जाऊँ।

आप के सेवक बहुत बडे और धनाढ्य हैं आप के केवल इशारे की देर है। हम ने कहा कि रुपये पैसे के बारे में हम कहना नहीं चाहते। परन्तु जब उस ने उन लोगों के नाम पूंछे तो हमने कुछ सज्जनों के नाम बता दीये। उस समय तो वह सुन कर चुपका होगया। पीछे अपने छोटे भाई को एक पासवान के हाथ बुलवा कर गंगासिंह के पास जो पहले मले राओ प्रधान अलवर के पासवान थे अलवर भेजा और वहां से लगभग नौ सौ रुपये यह बहाना करके मँगाये कि यदि आप रुपया देदें तो स्वामी जी के छुट जाने का यत्न हो सकता है। उन्हों ने रुपया दे दिया और लगभग छै सौ रुपये दो बार कर के सेठ हंसराज जी से भी बहाना कर के ले आया और कुछ रुपया माजी साहब के धाभाई से जो गुजरात के रहने वाले थे और आज कल जयपुर में रहते हैं ले आया परन्तु इनके रुपये का पता न लगा क्यों कि जब हम छूट कर आये तब तक इन की मृत्यु हो चुकी थी। फिर दरोग़ा रामचन्द्र जी के पास गया परन्तु इन जैसे बुद्धिमान के पास दाल कहां गलती थी उन्हों ने हमारे पास आदमी भेज कर पुछवाया कि आप ने किसी आदमी के द्वारा कुछ रुपया मगाया है यदि आप के छूट जाने की आशा हो और कोई भला आदमी हां भी भरे तो जितना रुपया भी खरच हो भेज दूँ। हम ने कह दीया कि हमने कुछ नहीं मँगाया है। केवल

एक आदमी को नाम बता दीया था कदाचित उसने यह कार्य्य कीया है। उसी दिन महमूद अली ने हम से बड़ी लाचारी से कहा कि मुझे केवल पच्चीस रुपये की आवश्यकता है यदि आप किसी से दिलवा दें तो मैं छूट जाऊं। हमने कहा कि यहां किस से कह दें। उस ने कहा कि एक ब्राह्मण बालावक्स गौड़ वड़याल निवासी यह कहता है कि यदि आप कहदें तो वह मुझे देदेगा। वह कहता है कि महाराज के कहने से मैं अन्धे कुए में रुपये फेंकना स्वीकार करता हूँ। जब बालावक्स ने हम से पूंछा तो हमने कह दीया कि यह परमार्थ का काम है यदि अपना सुभीता देखो और सहायता करना चाहो तो सहायता कर सकते हो। सारांश उसने पच्चीस रुपये उस को दे दीये। दूसरे दिन दरोग़ा रामचन्द्र जी ने जांच कर के हम को कहला भेजा कि यह महमूद अली बड़ा चालाक ( प्रपंची ) आदमी है इस से दूर रहना। हमने उसी समय बाला-वक्स को बुलवा कर कहा कि हमारे पास ऐसा समाचार आया है। तुम अपने रुपये के बारे में समझ लो। उसे यह मालूम हो कर बड़ी चिन्ता हुई और अप्रसन्न और क्रो-धित हो कर कहने लगा कि मैं उसको क्या जानूं मैं तो आप से रुपये ले लूंगा, और दो चार बातें ऐसी ही कहीं। वहां पर दौला मीना और कई आदमी उप-स्थित थे, उन्हों ने उस को डांट दीया कि तुम क्या

गुस्ताखी करते हो तुमने क्या महाराज को रुपया दीया है जो उन से लोगे तुम से प्रत्यक्ष कह दीया था कि परमार्थ का काम है, वह डर कर चुप हो गया । पीछे दौला ने यह समाचार एक माली से जो जन्म क़ैदी और बड़ा सत्संगी था कह दीया उसने बालाबक्स को बहुत मारा यहां तक कि उस का सर फोड़ दीया । उस की रिपोटा रिपोटी भी हुई परन्तु माली का कुछ न हुआ वरन् थोड़े दिन पश्चात् छूट गया । सिविल सर्जन और बड़े साहब को हमारा सब समाचार मालूम था । उन्हों ने कहा भी कि यदि वह हम से महमूद अली की शिकायत करें तो हम उस को दण्ड दें । लोगों ने कह दीया कि वह तो किसी की बुराई करते नहीं आप जो करना चाहें करें । पीछे साहब ने महमूद अली को एक मुसलमान के साथ झगड़ा करने पर बैंत लगवाये और कठोर दण्ड दीया ।

(५६) एक दिन इरशाद हुआ कि नवाब झभ्भर के कुनबे के दो आदमी क़ैद में थे । एक तौ बहुत बड़ा वीर और योद्धा सिपाही और दूसरा भजनीक और बहुत सच्चा आदमी था । पर नवाब विलायतअली खां ज़ागीरदार व प्रतिष्ठित सरदार राज्य जैपुर ने लग भग एक लाख रुपये का चोरी का दावा बहकाने से कीया था । यह दोनों नवाब साहब के साले थे । उन्हों ने

वड़े विश्वास के साथ निवेदन कीया कि आप अपने श्रीमुख से हमारे लिये कुछ कहदें तो हम छूट जावें क्यों कि जब हमारा समय अनुकूल था तब तो हमारे हजार साथी थे परन्तु अब कोई साथी नहीं है हम योंही सड़कर मर जावेंगे। हमने कुरान शरीफ़ का एक मंत्र उन्हें बता दीया और चालीस दिन करने को कहा। चालीस दिन समाप्त न हुए थे कि परमात्मा की कृपा से उन को छोड़ दीया गया। बात यह हुई कि फोजदार ने नवाब साहब से कहा कि यह उनके कुछ समबन्धी हैं कभी इनका समय भी अच्छा था इस लिये नवाब साहब ने दावा फेर लिया। छूट जाने के पश्चात कभी २ हम से मिलने आते थे और घी व खांड का अपनी और से प्रबन्ध कर दिया था एक और मनुष्य किशनलाल राओ साहब मनोहरपुर के प्रधान और उन के धाभाई भी क़ैद थे। यह आदमी लगभग दो ढाई लाख के धनी थे। राओ साहब के छोटे भाई से कुछ झगड़ा हो गया। उन्हों ने अपने भाई साहब और भावज साहब को बहुत उलाहना दीया और कहा कि यदि तुम इस के अलग करने का प्रबन्ध न करोगे तो मेरी और आप की प्रीति में भेद आजावेगा राओ साहब ने लाचार होकर यह इलज़ाम लगाया कि यह प्रधान बन्दूक लेकर मेरे भाई को मारने पर उतारू हुआ था और इस प्रपञ्च में उस को जन्म क़ैद होगई। उसने हमारी बड़ी सेवा की और अपने छूट जाने के लिये

बारम्बार प्रार्थना की, तो हम ने उस से कहा कि तुम को बड़ा यत्न व परिश्रम करने पर छुटकारा होगा । चार वार चालीस दिन का चिल्ला करने को कहा और हर चालीस दिन के चिल्ले में सवा लाख से अधिक जाप करने को स्वीकार करो तो कुछ बतावें । हमारा खयाल था कि इतना परिश्रम करना यह कब स्वीकार करेगा इसलिये चुप हो बैठैगा, परन्तु उस ने स्वीकार कर लीया और ऐसी मुसतेदी के साथ काम कीया कि एक एक दिन में बीस हज़ार नाम जप लिये परमात्मा ने कुछ ऐसी कृपा की कि पहला जाप भी समाप्त न हुआ था कि वह छूट गया । बात यह हुई कि राओ साहब के लड़का हुआ और सब लोगों ने उन से कहा कि ऐसे समय पर रईस जेलखाना खाली कर देते हैं और आप का प्रधान व भाभाई जो कि एक सम्बन्ध से आप का भाई भी होता है क़ैद से न छूटे तो क्या बात होगी । सारांश राओ साहब को कुछ ध्यान हुआ और स्वयम् जैपुर आये और बाबू कान्तिचन्दर से कह कर उसको छुड़वा कर ले गये ।

(६०) एक दिन इरशाद हुआ कि एक मनुष्य गोपी नामक जाति का छीपी भी क़ैद में था । पंडित महाराज कृष्ण मेम्बर आला कौन्सिल महकमा फ़ौजदारी ने शत्रुता व कपट से इस आदमी का सारा भेद मालूम

कर के उस का घर बार व ज़ेवर व सारा सामान नीलाम और उस को क़ैद भी करा दीया था । वह रात दिन हमारी सेवा में उपस्थित रहता और यह विन्ती करता था कि कोई ऐसा उपाय बताओ कि आज पीछे इस पंडित का मुख न देखूं । इसने मेरे साथ बड़ा कपट कीया है । हमने उस को समझाया कि तुम किस प्रपंच में पड़े हो अपना जन्म सुधारने का यत्न करो । यह बखेड़ा तो यों ही चला जावेगा । वह भी सच्ची राह पर आगया और जो कुछ हमने उसको उपदेश कीया उसी तरह अभ्यास करने लगा और बड़ा परिश्रम कीया । परन्तु कभी २ उस कपट की अग्नि चित्त में भड़क उठती थी तब फिर वही पहली बात कहने लगता था । हम उस को फिर समझा देते थे कि तुम बिना स्वार्थ के अपना अभ्यास कीये जाओ इन खोटे कामों की ओर अपना चित्त न लगाओ । परिश्रम व सच्चे भजन से उस का चित्त बहुत शान्त हो गया । एक रात उसने स्वप्न देखा कि दरोग़ा जेल बैठा है चने दीये जा रहे हैं और उन दानों को उठा कर वह खा रहा है । हम से आकर फल पूंछा । पहले तो हमने बात को टाल दीया परन्तु फिर पूंछने पर कहना पड़ा कि इस का फल अच्छा नहीं । दारोग़ा साहब की नौकरी में गड़बड़ मालूम होती है । अन्त में वही हुआ । पन्द्रह दिन में दरोग़ा साहब नौकरी से अलग कर दीये गये । चूंकि इस के मन में पंडित

जी की ओर से बहुत कपट कीना था उस का फल यह हुआ कि वह अन्धे हो गये—

वतरस अज़ आह मज़लूमां कि हंगामे दुआ करदन ।
इजावत अज़ दर हक़ वहर इस्तक़बाल मी आयद ॥

अर्थः—सताय हुओं की आह से डर, क्यों कि जब वह प्रमातमा से दुआ मांगते हैं तो उस समय ईश्वर के दरबार से दुआ या प्रार्थना के मनज़ूरी का हुक्म पहले से मिलने को आजाता है ।

तीन महीने तक तो उसी दशा में कचहरी जाते रहे किसी को मालूम न होने दीया । एक दिन गिर पड़े और बहुत चोट आई और थोड़े दिन पश्चात् मर गये । तीन महीने पश्चात् उस छीपी को उस के छूट जाने का स्वप्न हुआ । चूंकि पहले स्वप्न का फल सच्चा हो चुका था और उसका विश्वास पूरा था । हम से भी चरचा की और उसी दिन प्रातः काल को अकस्मात् उस का लड़का मिलने आया तो उस से कह दीया कि कल हम घर आयेंगे । वह लड़का बहुत भयभीत हुआ और विचार कीया कि क्या भाग कर आयेंगे क्यों कि जन्म क़ैदी हैं, कोई छुटकारे की सूरत भी नहीं है इसलिये बाप से कहा कि पिता जी ऐसा कार्य्य न करना । सारांश जो समय स्वप्न में देखा था उसी समय अचानक राज से उस को

छोड़ देने की आज्ञा आगई। पीछे भी वह हम से मिलने आया करता था। हमने वहां बहुत आदमियों को उपदेश दीया था। परन्तु एक शख्स रामप्रताप भरांट चारन जाति ने अच्छा परिश्रम कीया था। एक वर्ष में यह दशा होगई जैसी कोई दस वर्ष का परिश्रम हो। ऐसी दशा होगई थी कि सायंकाल के चार बजे से उस को एक अद्धे का सा नशा हो जाता था और सांसारिक बातें तनिक भी सहन नहीं कर सकता था। फिर दो तीन बार उस से भेंट हुई परन्तु कुछ विशेषता मालूम न हुई जिस दशा में पहले था उसी में रहा। सं० १९५८ से फिर भेंट न हुई।

(६१) एक दिन इरशाद हुआ कि जेलखाने का यह नियम है कि जिस का चाल चलन अच्छा हो उस क़ैदी को कुछ दिन पहले छोड़ दिया जाता है। इस का लाभ हम को भी पहुंचा और नियत समय से तीन मास पहले छोड़ दिये गये। जिस दिन छूटने को थे लाला महावीर प्रसाद प्रबन्धकर्त्ता छापेखाना के यहां से पहनने के कपड़े जैसे चोला धोती आदि और दरोग़ा रामचन्द्र जी के यहां से सवारी गई, वहां से सवार होकर पहले महावीर प्रसाद जी के यहां गये वहां से फिर दरोग़ा जी के घर पहुँचे। दरोग़ा साहब बड़े अभ्यासी और पहुँचे हुए मनुष्य थे। इत्र, गाना, घोड़े की सवारी और साधु

महात्माओं का बड़ा प्रेम था, अपने समय के एक ही थे। अपने काम में बड़े साहसी बेलौस और न्यायकर्त्ता थे। जब उन की मृत्यु हुई, तो महाराज साहब जयपुर के मुख से यह बचन निकले कि "हमारे घरबार की आज से शोभा गई" ऐसा वीर मनुष्य था कि लकड़ी लेकर दरबार में घूमता तो सब सरदार कांप उठते थे कि न मालूम किस को नियम विरुद्ध बैठे देख कर हाथ पकड़ कर उठा दे और मान हानि हो और यदि अधिक कहा तो कहीं मार भी न दें। जैपुर व जोधपुर दोनों राज्य से कड़ा भी मिला था। पुराने रईस और सरदार थे। और रुपया खर्च करना तो इन के मोरसी बुज़ुरगों के ज़माने की बात थी। एक बार नाई ने उनके पिता दरोग़ा बलवन्त सिंह जी से यह कहा कि मैं आप के अतिरिक्त और किसी की हजामत नहीं बनाता हूँ। बस इतनी बात पर ऐसे प्रसन्न हुए कि अंजुली भर भर कर रुपया देना प्रारम्भ कर दीया और लगभग एक लाख के देदिया और बराबर दीये जा रहे थे कि नाई ने कहा कि माई बाप बस करो यही मेरी सात पीढ़ी तक को बहुत होगा। उस समय देने से हाथ रोका। यह गुण इन में भी था—

तुलसी पंछी के पीये घटे न सरता नीर।
धरम कीये धन ना घटे जो सहाय रघुवीर॥

एक सिपाही की राज से लगभग दो रुपये मासिक पेंशन

हो गई थी। उस का विचार काबे शरीफ़ जाने और हज करने का था परन्तु रुपया कहां से आवे। उसने यह नियम कर लिया कि जिस समय दरोग़ा साहब पूजन करके उठें ड्योढ़ी पर खड़ा होकर प्रति दिन सलाम करता। पहले तो उन्हों ने समझा कि कोई अपना सिपाही है प्रतिष्ठा की रीति पूरी करता है। परन्तु जब उसका प्रतिदिन का नियम देखा तो समझे कि यह कोई इच्छुक है। पूजन के कमरे में बुला कर पूछा और हज का विचार सुन कर नक़द चार सौ रुपये उसको दीये और कह दिया कि किसी से कहना नहीं परन्तु उसने सारे में धूम मचा दी। उनका यह नियम था कि सदा दस पांच हज़ार रुपया अपने पूजन के कमरे में रखते थे और जो कोई सफ़ेद कपड़े पहने अतिथि आजाता तो दूसरी राह से बुला कर उस की आवश्यकता पूरी कर देते। जब कभी भजन से छुट्टी पाते तो दिन में केवल एक बार भोजन करते थे। उस समय सौ दो सौ पांच सौ चाहे जितने भी मनुष्य वहां उपस्थित हों सब से कह देते थे कि चलिये भोजन कीजिये उस समय का दृष्य अद्भुत होता था। सवार बाज़ार को दौड़े जाते हैं कोई कुछ लाता है कोई कुछ लाता है और दम की दम में सब प्रबन्ध होता था। इन का नियम था कि एक बार के अतिरिक्त दूसरी बार कभी किसी से खाने को नहीं पूछते थे उन का कहना था कि मैं सच्ची तरह निमन्त्रित करता हूँ झूठी तरह

नहीं जिसे भूंख होगी मेरे एक बार कहने से खालेगा। केवल आप से दो वार निवेदन करता हूँ और दूसरी वार के भी पूंछने पर यदि हम भी मना कर देते थे तो फिर चुप हो जाते थे । हमारे लिये कुल चाकरों को यह आज्ञा दे रखी थी कि रुपया व जवाहिरात चाहे जितनी भी बहुमूल्य हो महाराज स्वयम् लें या किसी को दें या किसी को देने की आज्ञा दें तो तत्काल पालन करो परन्तु हम ने कभी ऐसा न कीया हां किसी की भ-लाई के लिये कुछ कह दीया तो बात दूसरी थी और उस को वह तुरन्त पूरा कर देते थे ।

(६२) एकदिन इरशाद हुआ कि दरोगा साहब जैसे वीर और दातार थे वैसे ही अपनी बात के पालने वाले भी थे इनकी माता जी के मृत्यु समय जैसे और लोग शोक प्रगट करने को आते हैं वैसे ही एक राम-सखी भगतन (वेश्या) भी गई और उन से यह बात कही कि सरदार तो बहुत हैं परन्तु श्री महाराज रामसिंह जी के देवलोक पधारने के पश्चात् मेरे पालन पोषण का किसी को ध्यान नहीं है । उस पर दरोगा साहब के मुख से निकला कि श्री जी की कृपा से जब तक बाजरा मोंठ इस ठिकाने में मौजूद है और जैसे सब लोग ठिकाने में रोटी खाते हैं तुम्हारे लिये भी मौजूद है बस फिर क्या था ओंगते को ठेलने का बहाना बहुत है। भगतिन वहीं

जम गई । पहले तो दो तीन महीने तक जैसा भोजन चाहिये जाता रहा फिर उस ने चतुराई से अपने आदमियों के द्वारा ठिकाने के चाकरों आदि का रुपया खाजाना प्रमाणिक कर के आय में लाभ दिखलाया और लोगों ने कुछ उस के लिये कह सुन भी दिया और कहा कि यह निर्धन है तो दया कर के दस रुपये प्रतिदिन उस के हाथ खरच के नियत कर दीये । भोजन, पान व सवारी आदि का खरच अलग था । मगर यह भगतिन बड़ी सवज़क़दम थी । पहले महाराजा श्योदानसिंह अलवर वालों के पास थी उन के अधिकार छीन लिये गये । फिर महाराजा जसवन्तसिंह जोधपुर के पास गई वहां महाराजा प्रतापसिंह इस का चलन देख कर गोली से मारने पर उतारू हुए तो भाग कर जैपुर आई । पहले दोनों ठिकानों से पांच सौ रुपये मासिक नियत थे परन्तु महाराजा रामसिंह ने उस का वेतन नियत नहीं कीया । भोजन आदि का योग्यतानुकूल प्रबन्ध कर दीया था परन्तु जब उन का भी देहान्त हो गया तो यहां पधारीं । इस ने अपनी इच्छानुसार चाकर रख कर ठिकाने को खूब लूटा और बिलकुल नाश करने पर उतर पड़ी । यह दशा देख कर सारे रईस व प्रतिष्ठित सरदारों ने इस के निकाल देने को दरोग़ा जी से कहा । परन्तु उन्हों ने अपने वचन को न फेरा । यहां तक की बाबू कान्तीचन्दर प्रधान सदस्य ने इन को समझाने के लिये सरदारों को

भेजा और यह कहला भेजा कि यदि तुम इस को अलग नहीं करोगे तो महाराज साहब की ओर से तुम्हारी आजीवका बन्द हो जावेगी। दरोग़ा जी ने उत्तर दीया कि आप क्या समझते हैं मैं सब समझता हूँ। महाराज साहब चाहें तो मुझ तक को अलग कर सकते हैं परन्तु जब मैं यह वचन दे चुका हूँ कि मोंठ बाजरे की रोटी जब तक मौजूद है इस ठिकाने में रहो, फिर थोड़े से जीवन के लिये अब क्या बचन फेरूँ। यदि वह खुद चली जावे तो मैं रोकता नहीं। मैं खुद उस से जाने को नहीं कह सकता। सारांश डेढ़ लाख रुपये की आजीवका राज से बन्द हो गई। परन्तु उन्हों ने न तो अपना खर्च बन्द कीया न अपने रहन सहन को बदला और न आजीवका का शोच विचार कीया। सदा यही कहते रहे कि महाराज साहब की दी हुई रोटी अभी तक ठिकाने में है जब नहीं रहेगी खुद देवेंगे। भूखा थोड़े ही रखेंगे हम क्यों मांगने जावें। और कभी आजीवका पीछे मिल जाने के लिये नहीं कहा। जब मृत्यु समय निकट पहुँचा तो श्री गुरू महाराज और महात्मा इमामहुसैन की तस्वीर (चित्र) जो पूजन के कमरे में रहती थीं लगभग दस मिनट पहले अपने पास मंगालीं और दोनों चित्रों को अपने सामने रख लीया और फिर किसी ओर दृष्टि उठा कर न देखा। जिस समय उन की स्त्री उन के पास आई तो तालियां उन

को देदीं और कहा कि तुम जाओ और कोई चिन्ता न करो दस महीने पीछे तुम भी आओगी । परन्तु दृष्टि चित्रों पर ही रही और शरीर त्याग दीया । उन की स्त्री भी उन के शरीरान्त के दस मास पश्चात् मृत्यु को प्राप्त हुई । भगतिन भी मृत्यु समय मिलने गई परन्तु उस की ओर न देखा और न उस से बात की । चित्र ही देखते रहे ।

(६३) एक दिन इरशाद हुआ कि दरोग़ा जी की स्त्री भी बड़ी पतिव्रता और भगत थी । जब उस वेश्या ने बहुत हाथ पैर फैलाये तो चाकर लौंडी व सम्बन्धियों ने उनसे कहा कि यदि आप बाबू कान्तिचन्दर की स्त्री को लिखदें तो यह निकाल दी जावे और यह रोग दूर हो । परन्तु उन्हों ने उत्तर दिया कि हम ऐसा नहीं कर सकतीं । हम को किस बात का दुख है जो उसको अलग करादें । सब लोग लाचार होकर बैठ रहे जब दरोग़ा साहब का शरीर वर्ता तो नोंकरों का यह बिचार था कि भगतिन का सब माल लेलें क्यों कि महाराज साहब की ओर से यह आज्ञा हुई थी कि भगतिन ढ़ाई घड़ी के बीच में यहां से निकल जावे और वह भी जानतीं थी कि सब मनुष्य उसके विरुद्ध हैं इसलिये दरोग़ानीजी के चरणों में गिर गई और कहने लगी कि आपके धनी मेरे स्वामी थे इसलिये अब आप ही मेरी

स्वामी हो और मेरा कोई नहीं है। उस समय उन्हों ने आज्ञा दी कि यह मेरे स्वामी के पास रही थी इसलिये सारा सामान आदि इसको ले जाने दो और कोई रोके नहीं। यह आज्ञा पाकर सब चुप हो गये और वह लाखों रुपये का गहना व सामान ढोकर लेगई। चलते समय उस वेश्या ने निवेदन कीया कि अब विदाई का समय है कोई चीज आप की ओर से भी बतौर इनाम व यादगार के मिलनी चाहिये। तो दरोगानी जी ने एक गहना जो कई हजार रुपये का था अपने पास से उस को दीया। जब वह इक्के में बैठकर विदा हुई तो मुहल्ले वाले उसे गालियां देते थे

(६४) एक दिन श्री मुख से यह फ़रमाया कि दरोग़ा साहब महात्मासेवक भी पूरे थे और अपने गुरू पर तो बहुत विश्वास था—

गुरुसेवा दुर्लभ महा, चित दे करे जो कोय।
जो मन में इच्छा करे, सो सब पूरन होय॥

स्वामी आनन्दपुरी जी ने परीक्षा के निमित्त एक बार लगभग चार पांच सौ रुपये के जूते खरीद कर के एक कमरे में रखा दिये और यह ज़ाहिर किया कि हम जूतों का व्योपार करते हैं। अकसर वह वेश्या दरोग़ा जी से महाराज के बारे में ऐसी वैसी बातें कहा करती थी

ताकि उन का प्रेम महाराज की ओर से कम हो जावे और उन्हों ने भी यह कार्य खास कर इसी लिए किया था कि उस को ऐसी बातें करने और दरोग़ा जी को विरुद्ध करने का अच्छा अवसर मिले कि देखिये आप के गुरू और जूतों का व्योपार। और उस वेश्या को दिखाने के विचार से उन जूतों को वहां रखवा दिया था। परन्तु दरोग़ा जी को इस की कुछ भी खबर न थी। एक बार दरोग़ा जी उस वेश्या के साथ घूम रहे थे। जब उस कमरे पर गये और उन जूतों को देखा तो उससे पूछा कि यह यहां क्यों रखे हैं। यद्यपि उसे सब हाल मालूम था परन्तु जान बूझ कर उसने मना कर दीया कि मुझे मालूम नहीं और नोकरों की ओर देखकर पूछने लगी कि यह जूते यहां किस ने रखे हैं। दरोगा जी भी बड़े बुद्धिमान थे वह जान गये कि इस औरत ने चाल चली है। महाराज ने परीक्षा के हेतु यह कार्य किया है और चुप हो रहे। इसी बीच में किसी आदमी ने स्वामी जी को खबर कर दी कि दरोग़ा जी उस कमरे पर गये हैं और जूतों के बारे में पूछ रहे हैं। यद्यपि कुछ आदमियों को हाल मालूम था परन्तु कहने का साहस किसी को न हुआ महाराज स्वयम् उठ कर वहां चले गये। जब बालाखाने पर पहुंचे तो वेश्या ने उन्हें देख कर हंसी की तौर पर कभी एक जूते में पैर डाल कर देखा और उस को पलट दिया और कभी दूसरे में पैर डाला। इस तरह से चार पांच जूतों को

उलटा। यह कार्य इस लिये किया कि कोई आदमी तो इस जूते खरीदने के हाल को नहीं कहता और दरोगा साहब भी चुप होगये। कदापि फिर पूंछें तो महात्मा उपस्थित हैं सब हाल खुल जायेगा, दरोगाजी तो समझ गये थे कि इस में कुछ भेद है इस लिये कुछ न पूंछा। परन्तु महात्मा जी औरत की यह दशा देख कर बहुत अप्रसन्न हुए और बोले कि तू जूतों को क्यों उलटती और खराब करती है क्या तेरे बाप के हैं उस पर वह डर कर और त्रिया चरित्र के अनुसार हाथ जोड़ कर बोली कि महाराज मुझे मालूम न था कि यह जूते आपके हैं क्षमा मांगती हूं। महात्मा तो चले गये। परन्तु दरोगाजी को औरत की यह बात बहुत बुरी लगी और वहां से उठकर पूजन के कमरे में चले गये और नौकरों को कह दिया कि यहां कोई न आने पावे और तीन दिन रात बराबर बिना अन्न जल के पूजन पर बैठे रहे। जब यह समाचार भीतर स्त्रियों में पहुंचे तो सब भयभीत और चिन्ता में पड़ गयीं परन्तु करें क्या भीतर जाने की किसी को आज्ञा न थी। अन्त में तीन दिन पश्चात् वह वेश्या महात्माजी के पास गई और चरणों में सर रख कर अपने कार्य्य की क्षमा मांगी और कहा कि तीन दिन रात बिना अन्न जल के उन्हें होगये हैं और वहां जाने को किसी का साहस नहीं होता सो आप कृपा कर के पधारें। महात्मा उठ कर पूजन के कमरे में गये और उठा कर बाहर लाये

और भोजन मंगा कर आप भी खाया और उन को भी खिलाया।

(६५) एक दिन श्री मुख से यह इरशाद हुआ कि दरोग़ा जी अपने पुत्र रामप्रताप जी के साथ खाने को बैठे और हम भी भोजन में साथ थे। यद्यपि जो पदार्थ उन के थाल में थे वह सब हमारे थाल में भी थे परन्तु प्रीत के कारण अपने थाल में से अच्छे २ पदार्थ उठाकर हमारे थाल में रखने लगे। उस समय वह भगतिन भी भोजन में साथ थी। उस ने कहा स्वामी जी को सब पदार्थ देते हो हम को भी कुछ दो। उन्हों ने कहा कि तुम इस योग्य नहीं हो कि तुम को इस में से कुछ दीया जावे। जब उस ने कारण पूछा तो कहा कि भोजन हमारे इष्टदेव के अर्पण हो चुका है उस को साधु महात्माओं के अतिरिक्त कोई नहीं खा सकता या वह मनुष्य खा सकता है जो मांस मदिरा का इस्तेमाल न करता हो। और तुम मांस मदिरा दोनों इस्तेमाल करती हो तुम को नहीं मिल सकता। उस ने कहा कि तुम्हारे गुरू ने तुम को खूब उपदेश कीया है। बस यह शब्द उस के मुख से निकले ही थे कि आग बगूला हो गये और कहा कि "अधम तेरा मुख और हमारे गुरू" तेरे अभी दस जूते लगाऊँगा। वह बोली जूते काहे को मारोगे हम कहीं और चले जावेंगे। यह सुन कर जूता

ले कर उठे और कोई दस बीस ठोंके और कहने लगे कि तू जाने को कहती है हमने तो तेरी उस दिन की लाचारी देख कर तुझ को रख लीया था क्यों कि तूने मोंठ बाजरे की रोटी खाना स्वीकार कर लीया था नहीं तो हम को तेरी क्या चाहना थी जाना चाहे तो चली जा और यदि तुझ को जाने का कुछ अभिमान हो तो यह भी नहीं कर सकती दूसरी जगह से तुझको एजन्ट साहब के द्वारा पकड़वा कर बुलवा सकता हूँ। फिर तो वह चुप हो कर बैठ गई। जब भोजन आदि से निश्चित हुए तब दरोग़ा जी के बहुत हाथ पैर जोड़े और क्षमा मांगने लगी। उनके भोजन की झूठन भी उस नोकर को मिलती थी जो मदिरा आदि न पीता हो। एक बार उस स्त्री ने स्वामी आनन्दपुरी जी की बड़ी प्रार्थना की और कहा कि आप दरोग़ा जी को मदिरा पिला दें। उन्हों ने भी स्वीकार कर लीया। किसी त्यौहार को स्वामी जी मदिरा पी रहे थे हम भी उपस्थित थे। दरोग़ा जी वेश्या के साथ गये, तो पहले स्वामी जी ने प्याला भर कर हमारे होंटों से लगा दिया और कहा कि पी-जाओ। फिर दूसरा दरोग़ा जी को दीया। उन्हों ने निवेदन कीया कि आपने मुझे पीने से मने कर दीया है और आज स्वयम् देते हैं। स्वामी जी ने कहा कि प्रसाद है। दरोग़ा जी पी गये। जब घर पर आये तो वेश्या ने कहा कि आज तो मदिरा पी है कुछ

पारतोषिक मिलना चाहिये । उस समय उस को ढ़ाई हज़ार का एक बलेवड़ा दीया । परन्तु फिर कभी उसका इसतेमाल न कीया ।

बमे सज्जादा रन्गीं कुन, गरत पीरे मुग़ाँ गोयद ।
के सालिक बे खबर न बुवद ज़राहो रस्म मनज़िलहा ॥

अर्थः—अगर सतगुरु फ़रमादें तो शराब से भी तू अपने सज्जादे को (नमाज़ पढ़ने के आसन को) रङ्ग डाल । क्यों कि सालिक (पहोंचे हुए सन्त) रूहानी रासते और उस के तरीक़ों से वाक़िफ़ होते हैं । यानी सतगुरु जो कुछ भी हुक्म दे वह बग़ैर सोच विचार के भी कर लेना चाहिये क्यों कि इस सत्मार्ग की गुप्त बातों और भेदों से वह भली प्रकार वाकिफ़ होते हैं ।

(६६) एक दिन इरशाद हुआ कि केवल अपना वचन पूरा करने को ही दरोग़ा जी ने वेश्या को रखा कोई उस के आधीन हो कर नहीं रहे । एवं बड़ी शोभा से इस काम को निभाया । एक ताज़ीमी सरदार उन के धर्म्म भाई उन से मिलने आये और उस वेश्या को निकाल देने के लिये उन से कहा और बहुत कुछ समझाया यह बात भगतिन को भी मालूम हो गई । दूसरे दिन दरोग़ा जी से आकर कहने लगी कि आप

के धर्म्म भाई की नीयत मेरी ओर से कुछ खराब है। वह यह चाहते हैं कि आप को छोड़ कर मैं उन के पास रहूं। दरोग़ा जी ने कहा इस का कौन विचार है। इस से पहले भी तो तुम किसी और के पास थीं और फिर भविष्य में भी तो कहीं रहोगी तुम मेरी कोई विवाहिता स्त्री तो हो नहीं तुम्हारा यही काम है यदि उन्हों ने कहा तो क्या बुरा किया। परन्तु वास्तव में उन्हों ने कुछ नहीं कहा है। सारी दुष्टता उस गोपी नौकर की है। जिस समय वह मुझ को समझा रहे थे तो वह खड़ा सुन रहा था और उसने तुमसे जाकर कहा है। इस लिये तुमने मुझको उन के विरुद्ध करने को यह प्रपंच रचा है मैं इन चरित्रों को भली प्रकार समझता हूँ। वह औरत अपना सा मुँह ले कर रह गई।

(६७) एक दिन इरशाद हुआ कि दरोग़ा जी के तोशेखाने का मालिक दीदारबख़्श नामक जब बहुत बीमार हुआ तो उसने निवेदन कीया कि समय अब निकट मालूम होता है भण्डार का काम संभाल लीजिये। उस समय स्वामी आनन्दपुरी जी की धरोहर जो एक थैले में रखी थी और बक्स में बन्द थी देखी गई तो कुछ कम मालूम हुई! अच्छी तरह देखा तो थैले में जहां तहां छेद थे परन्तु ऊपर से मुंह बन्द था। जब दीदारबख़्श से पूंछा गया तो उसने कहा एक बार भग-

तिन रामसखी ने इन चीजों को देखा था । उस समय नमाज़ का समय निकट हो गया तो मैं नमाज़ पढ़ने लगा और वह देखती रहीं । मैंने विचारा बड़े ठिकाने में रहने वाली हैं इसलिये कुछ सन्देह न कीया । ऐसा मालूम होता है कुछ कर्म उन्हीं के हैं । दरोग़ा जी ने रामसखी को बुलाकर पूंछा तो वह साफ़ इनकार कर गई । परन्तु उन्हों ने अच्छी तरह डांटा और कहा तुम्हारा कोई भरोसा नहीं तुम बिलकुल ला मज़हब केवल रुपये की गरज़ी हो । मगर याद रखना जैसे मेरे निज का लाखों रुपया खा गई हो और दूसरों पर दोष लगाया है वह सब मुझ को विदित है । इस धोके में न रहना यह माल और प्रकार का है इस का परिणाम शीघ्र ही देखोगी । उस भगतिन ने थैले में छेद करके जवाहिरात निकाल लीये थे । सारांश परिणाम भी वैसा ही हुआ । दरोग़ा जी की मृत्यु के पश्चात भगतिन ने सारा माल छिन जाने के भय से अजमेर भेजदीया । वहां कामदार के पास था । एक लोंडी जो इस के (भगतिन) पास बहुत समय से रहती थी उसको इस ने अप्रसन्न हो कर निकाल दीया था वह सीधी अजमेर गई और कामदार से कहा कि भगतिनजी ने चीजों की देख रेख को मुझे भेजा है और कुछ चीजें मगाई हैं वह अपने साथ ले जाऊंगी । उस ने कमरा खोल दीया वह लोंडी सारा गहना कपड़ा आदि लेकर चलती

बनी और अजमेर में दूसरा मकान लेकर रहने लगी और खूब उड़ाया। जब भगतिन को पता चला तो यह भी अजमेर पहुंची माल देखा तो वहां कुछ भी नहीं। उस लौंडी पर चोरी की नालिश की। मुक़द्दमे का फैसला भी न होने पाया था कि धन के सोच में मर गई—

सिर्फ रहजाता है बाक़ी उस के कामों का असर।
वरना यहां हर एक को राहे अदम दरपेश है॥

दरोग़ा जी की मृत्यु होने के पश्चात् उन की स्त्री नें हम से कई बार इस धन के बारे में कहा परन्तु हमने उसको लेना या खर्च करना न चाहा। अन्त में उन के देवलोक पधारने के पश्चात् बफ़ाती नामक धुनियां गोदाम का मालिक नियत हुआ। कुछ उसने उड़ाया कुछ औरों नें, इसी प्रकार सब नौकर चाकर खा उड़ा गये। एक समय रामसुखी हमारे पास आई और निवेदन कीया कि महाराज दरोग़ा जी मेरा तनिक भी सन्मान नहीं करते हैं तीन रुपये के नौकर की बात मान लेते हैं और मेरी बात गिरा देते हैं। आप कुछ ऐसा उपाय करें कि यह मेरे वशीभूत हो जावें और मैं जितना भी रुपया आदि चाहूँ उनसे लेलूं तो मैं आप की हर प्रकार सेवा करूंगी और इस कार्य में जो कुछ रुपया व्यय होगा मैं दूंगी। यह बात हम को बहुत बुरी लगी। हमनें

विचारा कि जिस का नमक खाती है उसकी भलाई नहीं चाहती वरं यह चाहती है कि उन को आधीन कर के सारा धन लेलूं और ठिकाने को नष्ट करदूं। पश्चात् हम को यह भी मालूम हुआ कि इस ने ज्योतिषी आदि से दरोग़ानी जी को मरवाने का यत्न कीया था।

(६८) एक दिन इरशाद हुआ कि जब हम छुट कर आये तो हमारा विचार अपने महरबान पंडित विद्याधर जी से मिलने का था परन्तु मालूम हुआ कि पंडित साहब कोठे से गिर कर और कुछ समय तक आरोग्य रह कर मर गये इस बात का खयाल रहा कि हमारा उनका मेल न होने पाया।

(६९) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर से अकसर सांभर जाना होता था पहले तो मुन्शी श्योनारायण नाज़िम के यहां ठहरते थे। जब वह महाराज साहब के मन्त्री नियत होगये तो फिर त्रिवेनी सहाय कोतवाल के यहां ठहरना होता था इनके पास रेखा नामक कहार बड़ा भला व हाथ का सच्चा, बड़ा सेवा करने वाला, और साधु सेवी नोकर था। कोतवाल साहब की प्रत्येक वस्तु भोजन आदि की सब उसके देख रेख में थी और प्रत्येक वस्तु का व्यवहार करने का उसे अधिकार था और आये गये की सेवा पर सब कुछ खर्च करता था।

परन्तु अपने निज के काम में कभी कोई वस्तु नहीं लाता था यहां तक कि रोटी भी सूखी ही खाता था। यह हमारी भी बड़ी सेवा करता था। एक दिन हमको घनश्याम जी के बगीचे में लेगया वहां एक दादू पंथी साधु प्रतापदास जी रहते थे जो बड़े नम्रस्वभाव और भगत थे। इनके पास एक पंजाब की स्त्री जिस को उन्हों ने गृहस्थी की दशा में उपदेश दीया था आकर रहने लगी। पहनावा पंजाबी सुत्थन आदि पहनती थी। शहर से बाबाजी के लिये भिक्षा मांग कर भी लाती थी। हम से उन्हों ने कहा कि स्त्री भेष की अभिलाषा रखती है। आप इस को भेष देदीजिये। हमने उत्तर दीया कि हजारों गृहस्थियों को हमने उपदेश दीया है परन्तु भेष किसी को नहीं दीया। किसी का घर नष्ट कर देना हमें उचित नहीं लगता। फिर उन्हों ने कहा यह स्त्री विधवा है। केवल एक पुत्र था वह भी साधु होगया। तब हमने कहा यदि इस को रखना है तो भेष देकर रखो नहीं तो इसको अपने पुत्र के पास जाने को कहदो इन वस्त्रों में रखना ठीक नहीं। उन्हों ने कहा कि मेरे पास तो इतना भी रुपया नहीं है कि इसके लिये भगुए वस्त्र भी बनवा दूं। हमने कहा इसका प्रबन्ध हम कीये देते हैं। सांभर के बहुत से सेठ व धनी उस बगीचे में हाथ मुंह धोने जाया करते थे और उस समय वहां उपस्थित भी थे। हमने कहा बाबा

जी महाराज इस स्त्री को बाई बनाना चाहते हैं तुम इसके लिये वस्त्रादि का प्रबन्ध करदो । उन्हों ने चन्दा एकत्र कर उसी समय वस्त्र बताशे आदि मगवाये और तारीख नियत करके दस बीस दादू पंथी नागे एकत्र हुए और उसको प्रताप दासजी ने भेष देदीया । उस दिन वहां सेठ चुन्नीलाल जी रईस सांभर के पुत्र सेठ हंसराज जी भी उपस्थित थे । उनसे भी भेंट हुई और फिर ऐसी प्रीति होगई कि लग भग रोज का आना जाना होगया । कभी उस बाग में कभी बाबा साहब के कूए पर भेट होती थी । हमने उनको उपदेश भी दीया था और कुछ अभ्यास भी होने लगा था ।

(७०) एक दिन इरशाद हुआ कि हमको एक महात्मा से मिलने का मोक़ा हुआ अच्छे महात्मा थे । महात्मा होने के अतिरिक्त जन्त्र मन्त्र के काम में बड़े प्रवीन और चतुर थे । एक वार एक मनुष्य ने आकर निवेदन कीया कि महाराज मेरे भाई को बड़े विषैले सांप ने काट लिया है और वह मरने के क़रीब है । यदि आप कृपा करके पधारें तो बड़ी दया होगी । उन्हों ने उस मनुष्य को अपने पास बुलाकर पूछा कि तुम्हारे भाई को दहने हिस्से में सांपने काटा है या बायें में । उसने उत्तर दीया कि बांई ओर काटा है । उन्हों ने एक चांटा उस के

बांई गाल पर मारा और कहा कि जाओ। उसने घर पर जाकर देखा तो उसका भाई बिलकुल ठीक आरोग्य था। इसी भांति सांप, बिच्छु, या कुत्ते आदि के काठे हुए बीमार या उसकी ओर से आये हुए मनुष्य के वह चांटा मारते और वह बीमार चाहे वहां उपस्थित होता या न होता शीघ्र आरोग्य होजाता, दूसरी बात यह थी कि जब कोई रोगी उनके पास आता तो वह उसकी ओर अपना हाथ बढा कर कुछ पढ़ते थे यदि उसे कुछ रोग होता था तब तो महात्मा जी का हाथ उसकी ओर बढता था यदि किसी भूत प्रेत का प्रभाव होता था तो उनका हाथ उन्हीं की ओर लौटता था। इन जन्त्र मन्त्र के कारण उनके पास आदमी व स्त्रियों का बड़ा जमाव रहता था। हमको उनकी बात पर कई बार बड़ी हंसी आई हम इसको ढकोसला समझते और कहते थे कि महात्मा जी ने यह क्या आपत्ति लगा रखी है। कुछ समय पश्चात् महात्मा जी ने हमसे कहा कि यदि आप कुछ परिश्रम करें तो हम आपको कुछ बताना चाहते हैं। हमने स्वीकार कर लिया। तब उन्हों ने वह मन्त्र हमको बताया और कहा कि सवा लाख बार इसका जाप करलो हमने केवल पांच हजार बार ही जपा होगा कि उन महात्मा की भांति रोग और भूत प्रेत की परिच्छा में हमारा हाथ भी चलने लगा। फिर उन्हों ने कहा कि मैं जानता था कि आपको बहुत शीघ्र सिद्ध होजावेगा

परन्तु सवा लाख की संख्या ऐसी है कि कोई कैसा भी मनुष्य जपे प्रत्येक को सिद्ध हो जावे इसलिये सब से अधिक संख्या आपको बतादी थी। वह हम से बड़ी प्रीति रखते थे। हमने इस कारण से इस काम को प्रचलित न रखा कि बहुत लोग इकट्ठे होते और प्रशंसा होती जो महात्माओं को नष्ट करती है।

(७१) एक दिन का ज़िकर है कि हज़ारी लाल के घर पर ठहरे हुए थे कि किसी साधु ने आकर पुकारा कि भूंखा हूँ कुछ खाना दो। लाला साहब का छोटा पुत्र हरबख़श (बख़शी) या रानेश प्रशाद नामक कुछ खाना और एक लोटे में पानी लेकर नीचे गया और साधु साहब को खाना खिलाया और पानी पिलाया। जब खा पी चुके तो लड़के से कहा कि यह लोटा भी हमको देदे। उसने उत्तर दीया कि बिना माता पिता की आज्ञा के यह लोटा मैं आपको नहीं देसकता हूं। फ़कीर साहब इस पर बहुत क्रोधित हुए और बोले कि भला चाहता है तो देदे नहीं तो अभी भस्म करदूंगा। लड़के ने कहा कि कोई चिन्ता नहीं यदि तुम भस्म करदोगे तो हमारे गुरु जी हमको फिर जीवित कर लेंगे। जब साधु उस पर अधिक क्रोधित होने लगे तो श्री महाराज ने ऊपर से पुकारा कि बख़शी क्या कर रहे हो यहां आजाओ। लड़का ऊपर आने लगा तो साधु भी

उस के साथ चले आये और श्री महाराज से कहने लगे कि यह लोटा हमको दिलादे नहीं तो एक ही दृष्टि से इसको और तुझको दोनों को भस्म करदूंगा। आप ने कहा कि महात्मा जी आप विराजें। इसके माता पिता की आज्ञा होने पर कदाचित् यह लोटा आप को मिल जावेगा। इस बालक की भक्ति को देखें कि आपकी एक पुकार पर खाना और पानी आप के पास ले गया और आप अपनी हठ को देखें। और रही भस्म करने की सो हमने तो घर छोड़ा बार छोड़ा सिर मुंडाया मारे मारे फिरे परन्तु ऐसा अब तक कोई न मिला जो एक दृष्टि से ही भस्म कर देता। सौभाग्यवश आज आप ने दर्शन दीये हैं लीजिये भस्म कीजिये। यह सुन कर साधु जी को बड़ा जोश आया और क्रोध का पार न रहा और श्री महाराज की ओर हाथ करके कुछ मन्त्र पढ़ना आरम्भ कीया। आप चुप चाप बैठे रहे। जब वह भली भांति छू छका कर चुका तो आप ने कहा कि लीजिये साधु साहब आप का मन्त्र तो पूरा हो चुका अब संभल जाओ हम भी मन्त्र चलाते हैं यह सुन कर तो उसका क्रोध हरन हो गया। सब होश उड़ गये थर थर कांपने लगा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि मुझे मालूम न था क्षमा कीजिये। उनकी यह दशा देख कर श्री महाराज को हंसी आगई और आप ने कहा कि बस इसी विरते पर तत्ता पानी और

उन को समझा बुझा कर विदा कीया ।

(७२) एक दिन एक बड़े जटाधारी साधु श्री महाराज जी की सेवा में पधारे । श्री महाराज ने उनको देख कर कहा आइये महात्मा जी विराजिये । यह सुन कर साधु भौंहें चढ़ा कर कहने लगे कि साधु हो कर आप तो पलंग पर चढ़ कर बैठा है हमको कहां बैठायेगा। उन का यह कहना था कि श्री महाराज ने पलंग से उतर कर उसके बाल पकड़ लीये और कहा कि कोई साहब तनक नाई को तो शीघ्र बुला लाओ पहले इन साधु जी का सिर मुंडवा कर अपना सा करलूं फिर बैठने को जगह भी बता दूंगा । यह सुनकर साधु घबरा गया और हाथ जोड़ कर निवेदन कीया कि बस महाराज मुझे तो भीख मांग कर ही खा लेने दो अपना जैसा मत बनाओ । श्री महाराज ने शीघ्र उसके बाल छोड़ दीये और कहा कि हमारा तो विचार था परन्तु तुम नहीं चाहते तो तुम्हारी इच्छा । फिर वह साधु वहां से चल दिया । सच है:—

* दोहा *

फूलें फलें न बेद तदपि जलद बरसे महा ।<br>
मूरख हिरदे न चेत जो गुरू मिलें विरंच सम ॥

(७३) एक दिन श्री राधास्वामी जी के शिष्य एक पोस्ट मास्टर साहब सेवा में उपस्थित हुए और जो प्रसाद लाये थे सामने रख दीया। आपने पहले सबको बटवाया और पीछे उस में से थोडा सा उठाकर आप भी खालिया। स्वामी जी के शिष्यों में उछिष्ठ प्रसाद की बड़ी महिमा है इसलिये पोस्टमास्टर साहब ने बचा हुआ प्रसाद उठाने को हाथ बढ़ाया परन्तु श्री महाराज ने उनका हाथ पकड लीया। ज्योंही श्री महाराज ने हाथ पकड़ा कि पोस्टमास्टर साहब ने कहा कि महाराज हाथ पकड़े की लाज है। आपने हंस कर उत्तर दिया कि आप क्यों चिंता करते हैं श्री राधास्वामी जी महाराज ने ही आपका हाथ पकड रखा है और फिर आज्ञा दी कि अच्छा भाई प्रसाद पालो।

(७४) एक दिन इरशाद हुआ कि ठाकुर फ़तहसिंह जी जो जयपुर के प्रधान कर्मचारी हुए हैं निरे निरक्षर भट्टाचार्य ही थे यानी पढ़े लिखे कुछ न थे। धाभाई दरोग़ा बलदेवसिंह जी के घर पर रहते थे। एक बार महाराजा रामसिंह जी दरोग़ा जी के घर पर पधारे। और हुक्का जो वहां भरा रखा था पीने लगे और बड़ी प्रशंसा करते हुए पूंछा कि यह चिलम किसने भरी है बड़ी योग्यता से काम कीया है। लोगों ने कहदीया कि ठाकुर फ़तहसिंह जी ने भरी थी। बस उस दिन से

उनसे कुछ ऐसे प्रसन्न होगये कि जब कभी दरोग़ा जी के मकान पर जाते तो ठाकुर साहब से चिलम भरवा कर पीते। इसी प्रकार बातों बातों में मालूम होगया कि ठाकुर साहब नौकर चाकर नहीं हैं तो महाराजा साहब ने उनसे कहा कि आप हमारे प्रधान कर्मचारी नवाब फ़इयाज़ अलीखां साहब के पास जाकर कहें कि मुझे कहीं किसी पदवी पर नियत करदो। ठाकुर साहब आज्ञानुसार जनाब नवाब साहब की सेवा में उपस्थित हुए और समाचार निवेदन कीया उन्हों ने पूंछा कि आप कुछ पढ़े लिखे भी हैं तो उन्हों ने उत्तर दीया कि मैं तो विद्या का नाम भी नहीं जानता। अब वह विचार करने लगे कि महाराजा साहब का भेजा हुआ आदमी है परन्तु पढ़ा लिखा कुछ भी नहीं अब इस को जगह दूं तो कोनसी दूं। यह कहकर टाल दीया कि फिर कभी आना। पीछे यह कई बार गये परन्तु उसी प्रकार निष्फल लौट कर आये। फिर किसी बार महाराजा साहब से भेंट होने पर उन्हों ने पूंछा कि क्या तुमको नौकरी मिलगई तो ठाकुर साहब ने उत्तर दीया कि अब तक नहीं मिली। महाराजा साहब ने फिर जाने के लिये कहा लाचार होकर फिर गये। नवाब साहब उस समय मुकद्दमे में कुछ ऐसे लीन थे कि उनका आना अच्छा न मालूम हुआ। और जब ठाकुर साहब ने निवेदन कीया तो उत्तर दिया कि आप कुछ पढ़े न

लिखे भला योग्य पदवी दूं तो कौनसी दूं केवल मेरी ही जगह है बैठ जाओ। ठाकुर साहब यह कटु उत्तर सुनकर लौट आये और आना जाना छोड़ दीया। संयोग से फिर महाराजा साहब ने पूंछा। ठाकुर साहब तो चुप होगये परन्तु किसी और ने कह दीया कि हज़ूर यह जायें तो क्या जायें नवाब साहब ने तो ऐसा कठोर उत्तर दीया। महाराजा साहब ने सुनकर कहा कि फिर तुम चले क्यों आये उनकी जगह पर बैठ क्यों न गये अच्छा अब के फिर जाना "क़हर दरवेश बर जान दरवेश" (जो कुछ बीतेगी सो बीतेगी) महाराज साहब की आज्ञा थी क्या करते विचारे फिर नवाब साहब की सेवा में उपस्थित हुए। नवाब साहब उस समय भी काम में कुछ ऐसे लीन थे कि उन को फिर भी वही उत्तर दीया कि आप से कह चुका कि माकूल आसामी तो मेरी ही है। बैठो तो बैठ जाओ—

जैसी हो होतव्यता तैसी व्यापै बुद्ध।
होनहार विसरे नहीं विसर जाय सब सुद्ध॥

---

उन्हों ने भी कह दीया बहुत अच्छा आप जगह ख़ाली करें मैं बैठता हूँ। नवाब साहब क्रोधित हो उठ खड़े हुए। परन्तु जी में विचार करने लगे कि यह बे पढ़ा लिखा मनुष्य क्या काम करेगा इधर ठाकुर साहब का गद्दी पर बैठना था कि उन्हों ने हुकम अहकाम

देना आरम्भ कर दीया। और ऐसा उचित प्रवन्ध कीया और ऐसे योग्य कार्य्य प्रचलित कीये कि सब देख कर आश्चर्य्य करने लगे। कहते हैं जयपुर में इन की मुसाहबी का समय बहुत अच्छा व्यतीत हुआ। इनके पश्चात् यदि कुछ प्रधानता की तो बाबू कान्तीचन्दर ने की। सच है जिस को देता है छप्पर फाड़ कर देता है।

(७५) एक दिन इरशाद हुआ कि सांभर में बहुत से आदमी हमारे पास बैठे थे कि तम्बाकू के बारे में बात चली और उस के मूल्य के बारे में बात चीत होने लगी। हमारे मुंह से निकल गया कि हमने बनारस में साठ रुपये सेर तक की तम्बाकू देखी है। इस मूल्य को सुन कर सब को अचम्भा हुआ। यद्यपि हमारे आदर से किसी ने कुछ तर्कना न की। परन्तु हमारी बात पर पूरे तौर पर विश्वास भी न हुआ। हमें भी ध्यान हुआ कि ऐसी बात तुम को कहनी नहीं चाहिये थी। उस समय सेठ हंसराज भी वहां थे उन्हों ने कहा भी कि महाराज ऐसी क्या चीज़ डालते हैं कि जो तम्बाकू का इतना मूल्य हो जाता है। उस समय तो हमने कुछ उत्तर न दीया। कुछ समय पश्चात् हमारा और सेठ जी का भी जगन्नाथ जी जाने का संयोग हो गया और रस्ते में बनारस में भी ठहरे जब श्याम को

सैर करने बाज़ार गये तो हमको भी साथ लेगये। उस समय हमने जान कर तम्बाकू वाले की दूकान पर बग्घी ठहरा कर उससे तम्बाकू का मूल्य पूंछा तो उसने पन्द्रह रुपये सेर कहा हमने पूंछा इससे अधिक मूल्य की नहीं है तो उसने कहा बीस रुपये सेर फिर पूंछने पर उसने कहा कि महाराज चालीस रुपये सेर तक की तम्बाकू तो मेरी दुकान में इस समय है और साठ या सत्तर रुपये सेर वाली दो दिन में बना सकता हूं यदि इससे अधिक मूल्यवान चाहिये तो लग भग एक सप्ताह या इससे अधिक लगेगा। मैं डेढ़ सौ रुपये सेर तक की तम्बाकू आपको बनाकर दे सकता हूं। यह मूल्य सुनकर तो सेठजी को बड़ा आश्चर्य हुआ। हमने दुकान दार से कह दिया कि हमको तम्बाकू लेनी न थी केवल मूल्य पूंछना था। फिर सेठजी ने हमसे कहा कि उस समय तो साठ रुपये सेर का मूल्य सुनकर ही मुझको बड़ा आश्चर्य हुआ था अब मालूम हुआ कि इससे ढाई गुना मूल्य की भी तम्बाकू होती है। इससे यह अभिप्राय है कि मनुष्य की ज़र्फ़ देखकर बात कहनी ठीक होती है। यदि कोई सच बात भी हो परन्तु जिस मनुष्य को उसके सच मानने का ज़र्फ़ न हो तो उस से कहना व्यर्थ है वह इस को केवल झूठ समझता है।

(७६) एक दिन इरशाद हुआ कि महात्माओं

के पास जा कर मनुष्य बहुधा परमात्मा, परमेश्वर और ब्रह्म के बारे में बात चीत करते हैं और जब उनको सन्तोषजनक उत्तर मिल जाता है तो वह प्रसन्न हो कर यह समझते हैं कि हमारी खोज ब्रह्म के बारे में ठीक थी और उस महात्मा की ओर से भी उन को विश्वास होजाता है कि उसको भी ब्रह्म का पूरा ज्ञान है। परन्तु सचमुच में यह बात नहीं है। भला ब्रह्म क्या कोई लड़कों का खेल या दलालों की गप्प है कि जिसका हर एक को पूरा पूरा ज्ञान हो जावे। स्वयं उसके बारे में कुछ जान ले तो भला जान भी ले परन्तु यह कैसे सम्भव है कि लगे हाथों बातों बातों में ही दूसरे को भी पूरा ज्ञान करा दे। बात केवल इतनी है कि महात्माओं को बहुधा इस बात की पहचान होती है कि पूंछने वाला किस दरजे का मनुष्य है फिर उसकी बात का लगभग ऐसा उत्तर देते हैं जो उसकी समझ में आजावे और यही कारण है कि बहुधा महात्माओं की बात सब को मान्य होती है क्यों कि जिस किसी को वह कुछ कहते हैं वह उस के ज़र्फ़ को विचार कर कहते हैं। एक बार बाबू प्रभूदयालजी ने हम से पूंछा कि दिल व दिमाग़ में कौन बड़ा है। हमने उत्तर दीया कि दिमाग़। इस पर उन्हों ने कुछ ऐसी बातें कहीं जिन से दिल बड़ा प्रमाणित होता था। हमने सोचा कि इन्हों ने अपने विचार से कुछ काम न लीया इस लिये हमने

कह दीया कि बाबू साहब राधा और कृष्ण में कौन बड़ा और कौन छोटा। बाबू साहब युगल रूप के उपासक और भक्त थे यह बात बड़ी अच्छी मालूम हुई। जब थोड़े दिन पश्चात् उन्हों ने स्वयम् विचारा तो सच्चाई मालूम होगई और सोच लीया कि वह बात किसी मसलहेतन कहदी थी। परन्तु कुछ मनुष्यों को ऐसे समय अविश्वास भी हो जाता है कि अमुक महात्मा ने हम से गलत कहदीया था। परन्तु सचमुच में वह बात केवल पूंछने वाले की योग्यता का विचार करके कही जाती है। यदि उस से बढ़कर बात कही जावे तो वह उसको कदापि स्वीकार न करेगा और सत्संग का आशय भली भांति पूरा न होगा।

(७७) एक दिन इरशाद हुआ कि गया जी में एक लाला साहब बड़े गुणी हकीम थे। उनको नाड़ी की ऐसी अच्छी पहचान थी कि दूसरे उनकी बराबरी नहीं कर सकते थे। काशी जी के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण जिन के सर में बहुत समय से पिड़ा होती थी उनसे चिकित्सा कराने गये। हकीम जी ने उनकी नाड़ी देख कर एक परचे पर कुछ लिख कर दीया और कहा कि यदि यह बात ठीक है तो मैं आपका इलाज़ कर सकता हूं नहीं तो नहीं। उस परचे को पढ़ कर ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ और कहने लगा कि इस बात का

हिकमत से कोई सम्बन्ध नहीं एवं ईश्वरीय है । जब आप को यह भेद मालूम हो ही गया तो मैं भी अपने कीये कर्मों को स्वीकार करता हूं । सारांश हकीम जी ने उसका इलाज कीया और वह आरोग्य होगया । उन ब्राह्मण साहब ने हम से आकर कहा कि उस परचे में यह लिखा था कि तुमने स्त्री से रजस्वला की दशा में भोग कीया है उसी कारण से यह सर में पीड़ा है । और थी भी यह बात सही परन्तु मुझे इसका ध्यान भी न था कि यह रोग उसका परिणाम है । अब स्वयम् हकीम जी ने उसे माळूम करलीया । हकीम जी हम से बड़ी प्रीति रखते थे और प्रत्येक रोगी का हाल किसी से न कहते थे यदि कोई किसी दूसरे के रोग के बारे में पूंछता तो बुरी तरह फटकारते और कहते कि तुम अपने लिये चाहो जो पूंछलो। तुमको दूसरे से क्या प्रयोजन। हिकमत से बढ़कर एक बात यह थी कि इस हिकमत के कारण किसी से एक पैसा भी न लेते थे । योंही इलाज करते थे । वरं अपने पास से भी दवाईयां देते थे । घर पर केवल एक बोरिया बिछा था जिस पर धनाढ्य व निर्धन सब आकर बैठते थे । उन्हों ने अपना चरित्र इस प्रकार कहा कि मेरे पिता बड़े धनाढ्य और साधु सेवी थे उनकी मृत्यु के पश्चात् एक महात्मा ने आकर मुझे अरबी पढ़ाई और जब बड़ी बड़ी पुस्तकें देख चुका तो हिकमत पढ़ाई जब यह भी पढ़ चुका तो साधुता के बारे

में भी कुछ बताया और फिर यह वचन मुझ से लीया कि इस हिकमत के उपलक्ष में मैं किसी से कुछ न लूंगा। फिर वह महात्मा तो चले गये और मैं ने यह काम आरम्भ कीया। परन्तु वह वचन मैंने अभी तक नहीं तोड़ा है। और किसी से कुछ नहीं लेता हूं।

(७८) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर में भी एक हकीम साहब मोहम्मद सलीमखां नामक जो बहरे हकीम जी के नाम से विख्यात थे नाडी पहचान ने में बहुत अच्छे थे परन्तु जो बात लाला साहब में देखी वह इन में न थी। यह भी अरबी विद्या में बड़े निपुण थे और इन को भी एक महात्मा ने पढ़ाया था। हकीम मोहम्मदअलीखां साहब देहली निवासी के कुनबे के थे। राज से आजीविका थी परन्तु थे भी बड़े बेपरवाह थे। राजा से भी कह दीया था कि आप चाहें जब बुलालें हम नौकर हैं आने से मना नहीं कर सकते. परन्तु यदि अच्छी जांच करानी हो तो रात को आठ बजे हम को बुलाया करें उस समय हमारा ध्यान अच्छा लड़ता है। बहुधा जो बड़े रोगी होते थे वह उसी समय रात को आते थे। एक लाला साहब बहुत काल से रोगी थे उन की नाड़ी देख कर हकीम जी ने कहा कि आप छः मास के महमान हैं वह निराश हो कर लौट आये। दूसरे हकीमों के इलाज से कुछ स्वस्थ हो गये परन्तु ठीक छः

मास पर्यन्त उनकी मृत्यु होगई। उस समय हकीम जी ने कहा कि उनको ऐसा रोग था जैसे लकड़ी में घुन लगता है कि ऊपर से तो ठीक और भीतर से खाली ऐसा रोगी अधिक से अधिक छः मास जीवित रहता है वही हमने कह दीया था। उनका शरीर अवश्य हृष्ट पुष्ट था परन्तु हड्डियां खाली होगई थी।

(७६) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर में एक महात्मा के स्थान पर सप्ताह के सप्ताह सत्संग होता था और उसमें भजन कीर्तन सब ही बातें होती थी। एक समय किसी सज्जन ने ऐसे प्रेम से भजन गाया कि उपस्थित सज्जनों में से एक महात्मा पर सुनकर ऐसा हाल आया कि वह नाचने और झूमने लगे। राज्य के प्रधान कर्मचारी जो उस स्थान के महन्त के शिष्य थे वह भी वहां उपस्थित थे और अपने साथ अपने एक जैनी मित्र को भी ले गये थे। यह जैनी साहब न तो सत्संगी थे और न साधु सेवी केवल दीवान साहब की मित्रता के कारण साथ चले गये थे। उन महात्मा को नाचते देख कर कहने लगे कि यह भी अच्छा ढोंग है और घृणा से देखकर मुंह फेर लीया। दीवान साहब ने कहा कि आप ऐसा विचार न करें इस समय इन की बेसुधी की दशा है। तो उन्हों ने उत्तर दीया कि कोई हमारी ऐसी दशा करदे तो जानें। इन दोनों में यह बातें हो

ही रही थीं कि उस स्थान के महात्मा को प्राकृतिक रीति से ज्ञान होगया। उस समय लगभग तीन सौ मनुष्य वहां एकत्रित थे परन्तु उन महात्मा ने कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि सब के सब उन जैनी साहब सहित अचेत होगये और बहुत समय तक अचेत पड़े रहे फिर धीरे धीरे चेत में आते गये और सब के अन्त में दीवान जी और जैनी साहब को चेत हुआ उस समय महात्मा जी ने कुछ अप्रसन्न होकर अपने शिष्य दीवान साहब से कहा कि तुम महात्माओं की हंसी उड़वाते हो ध्यान रहे कि ऐसे कम विश्वासी को अपने साथ भूल कर भी कभी न लाना। सभा में सब भांति के मनुष्य होते हैं। इस से महात्मा जी का यह अभिप्राय था कि प्रत्येक मनुष्य को ऐसी शक्ति नहीं होती जैसी कि तुमने देखी है। यदि उस समय ऐसा न कीया जाता तो सभा का अपमान था। यह सुनकर दीवान जी और जैनी साहब दोनों महात्मा जी के चरणों में गिर गये और जैनी साहब ने रो रो कर क्षमा मांगी और उसी समम उपदेश भी लीया।

(८०) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर में एक साधु के यहां मकान बनाया जारहाथा और बहुत से मज़दूर काम कर रहे थे। एक ब्राह्मण ने भी मज़दूरी

पर काम करने की आज्ञा मांगी। साधु ने उससे रोज़ाना मज़दूरी ठहरा कर एक आसन और माला उसको दी और कहा कि आप इस जगह बैठ कर राम-राम कहो। सायंकाल को मज़दूरी लेकर घर चले जाना ईंट पत्थर ढोने से आपको कष्ट होगा इस में बैठे बिठाये दाम मिल जावेंगे। वह ब्राह्मण माला लेकर भजन करने लगा परन्तु थोड़ी देर में ही उकता गया और इधर उधर देखने भालने लगा। एक मज़दूर कुछ ख़राब काम कर रहा था उसको झिड़कने लगा कि इस प्रकार नहीं वरं इस भांति काम करो। वह साधु बोले कि ब्राह्मण देवता तुमको इस झगड़े से क्या पड़ी उसके जी में आवे वैसे काम करने दो आप अपना भजन कीये जावें। ब्राह्मण ने कहा कि हम इस भांति काम को ख़राब होते देख कर चुपचाप नहीं बैठ सकते यदि आप इस में अप्रसन्न हैं तो यह लो अपनी माला और आसन हमसे यह रगड़ा नहीं होता हमतो मज़दूरी करके खालेंगे। माला फेंक कर चला गया। फिर वह साधु हमारी ओर ध्यान देकर कहने लगे कि देखिये महाराज भजन मज़दूरी करने से भी कठिन है।

(८१) एक दिन इरशाद हुआ कि जयपुर में हम बाज़ार में से जारहे थे और भी बहुत से सज्जन हमारे साथ थे कि वेश्या के कोठे से हमने एक मनुष्य

को उतरते देखा उनको देखने से तत्काल पता चल गया कि यह कोई महात्मा है. आगे बढ़ कर हमने प्रणाम आदि कर के कहा कि कहिये यह कार्य्य कब से प्रचलित है । प्रथम तो वह उड़ने लगे और बोले कि महाराज आप तो महात्मा हैं और मैं तो तमाशा देखने वाला व्यर्थ घूमने वाला मनुष्य वेश्यागामी हूं। परन्तु पीछे इशारे में खुल गये और कहने लगे भेद न खोलिये हम आप से मिलते रहेंगे। तत्पश्चात् बहुधा हमारे पास आया करते थे और बड़ी प्रीति करते थे । बड़े उच्च श्रेणी के महात्मा थे । एक मन्त्र के द्वारा उनको कुछ रुपया मिल जाता था उसी से अपना निर्वाह करते थे । एक वेश्या के यहां पड़े रहते थे और पान आदि खाना और इत्र आदि लगाये रहना मानो ऐसा भेष बना रखा था कि किसी को उन की ओर से सन्देह भी न हो सकता था कि ऐसे पहुँचे हुए महात्मा हैं ।

(८२) एक दिन इरशाद हुआ कि हमारे पास एक और साधु आया करते थे । एक दिन जब यह वेश्यागामी धज के महात्मा बैठे थे तब भी वह आये और कुछ समय तक सत्संग करके चले गये । जब वह साधु उठ गये तो महात्मा ने कहा कि यह साधु बहुत अच्छा अभ्यासी था परन्तु इसका पद टूट गया इस के गुरू इस से अप्रसन्न हो गये हैं कारण यह हुआ था कि यह

मनुष्य जो कुछ कमाता था सब अपने घरवालों को देदेता था और वैसे भी हर प्रकार उनकी बात मानता था परन्तु अपनी स्त्री की ओर उस का ध्यान कम था। इसकी माता ने अनेक बार उस से कहा परन्तु इस ने कुछ ध्यान न दीया। तो उसने इसके गुरू से कहा। उन्होंने कहा कि हम समझा देंगे। जिस समय यह ध्यान में था तो गुरू ने कहा कि तुमको उसका ध्यान रखना चाहिये। इसने उत्तर दीया कि आप और हम तो एक ही हैं। इस बात पर उन्हों ने इसकी ओर से अपना ध्यान हटा लीया और इसकी पदवी टूट गई। फिर उन से मिलने का इसने बहुत यत्न कीया और सैकड़ों कोस उन के पीछे फिरा परन्तु वह इसको दर्शन देना नहीं चाहते और जब यह उनके पीछे जाता तो वह इस से आगे आगे चल देते थे। यह कह कर हम से बचन लीया कि तुम इसको उस साधु से न कहना। उस समय तो हमने बचन देदिया। परन्तु वह साधु हम से अत्यन्त प्रीति रखता था इस हेतु हम इसको सहन न कर सके कि हमारा मिलने वाला ऐसी दशा में रहे। हमको उसके साथ बड़ी हमदरदी थी और उसकी दशा पर दया करके एक दिन सब वृत्तान्त उस से कह दीया। यह सुन कर वह हमारे सर हो गया कि यह सब आज तक मैंने किसी से नहीं कहा और उस मनुष्य के सिवा जो उस दरजे से ऊंचा हो किसी और को

मालूम भी नहीं हो सकता । जब आपने यह बात मालूम करली है तो इसका उपाय भी आप करें । हमने उससे साफ़ कह दीया कि हमारे द्वारा यह काम नहीं बनेगा यदि बनासकता तो हम कदापि आना कानी न करते । तो उसने कहा कि अच्छा जिसके द्वारा यह काम बनेगा उसे बता दें । हमने कहा कि हम उसको वचन दे चुके हैं कि उसका भेद किसी को नहीं बतावेंगे । इतनी बात भी तुम्हारी दशा को देखकर कहदी है । परन्तु अब उसको कहां चैन था रात दिन इस खोज में रहने लगा कि यह कहां कहां जाते हैं और इनके पास कौन कौन आता है । गो दरजे से गिरा था परन्तु अभ्यासी था । इसलिये एक दिन जब वह महात्मा आये तो उनको देखकर तत्काल पहचान लीया और उनके चरण पकड़ कर बड़े विनीत भाव से कहने लगा कि आप मेरा काम संवार दें । उन्हों ने बहुत कुछ बहाना कीया परन्तु उसने पीछा न छोड़ा । उन्हों ने पूंछा कि तुमको हमारा हाल कैसे मालूम हुआ तो उसने साफ़ हमारा नाम ले दीया । वह महात्मा उसको साथ ले कर हमारे पास आये और कहने लगे क्यों साहब क्या महात्माओं के वचन ऐसे ही होते हैं । हम बड़े लज्जित हुए और हमने कहा कि बात तो आप सच कहते हैं परन्तु हम को इसकी दशा पर दया आगई और हम इसको सहन न कर सके कि जो हमारे सत्सङ्ग में आवे वह इस भांति आपत्ति में रहे ।

फिर उन्हों ने वचन देदिया कि अच्छा हम तुम्हारे गुरू से कह देंगे । उसने पूंछा कि फिर मेरे जी को कैसे सन्तोष हो। दूसरे दिन महात्मा ने उस से कहा कि अब तक वह तुम्हारे पत्र का उत्तर नहीं देते थे और न तुम से मिलते थे। अब तुम पत्र डालो तुमको उत्तर देंगे और यदि तुम मिलना चाहोगे तो मिलेंगे भी। अब उन्हों ने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दीया है परन्तु ध्यान रहे भविष्य में फिर कभी ऐसा न करना। फिर उस साधु ने पत्र डाला तो उत्तर आया और उसकी दशा भी भजन की ठीक होगई परन्तु हमको अपना वचन पूरा न रखने के कारण हानि उठानी पड़ी।

(८३) एक दिन इरशाद हुआ कि स्थान चाकसू में एक महात्मा रहते थे। उनके बारे में किसी मनुष्य का ऐसा विचार था कि वह तीन सौ वर्ष के हैं किसी का अनुमान था कि दोसौ वर्ष के हैं। एक मनुष्य ने जो विश्वास योग्य था और जिसकी आयु लग भग सत्तर वर्ष की थी हम से कहा कि मेरे दादा साहब कहते थे कि हमने उनको सदा से ऐसा ही देखा है परन्तु हमको इस में सन्देह था। एक बार उन महात्मा से मिलने का सावकाश हुआ। बड़े उच्च श्रेणी के महात्मा थे जैसे कि पुराने समय में मनुष्य हुआ करते थे। उनकी सारी बातें वैसी ही थीं परन्तु पढ़े लिखे कुछ न थे।

उनका नियम था कि रात में अपने पास किसी को नहीं रहने देते थे किसी ही मनुष्य हो प्रत्यक्ष उत्तर दे देते थे। एक बार महाराजा रामसिंह जी ने कहला भेजा कि आज रात को मैं आपके पास आऊंगा तो उत्तर दीया कि तुम राजा हो तुम को मैं बल पूर्वक रोक नहीं सकता परन्तु मेरे नियम के विरुद्ध करोगे तो यह होगा कि मैं यहां से कहीं और चला जाऊंगा। फिर राजा ने अपना विचार पलट दीया और नहीं गये। हम से बड़ी अच्छी तरह मिले और बहुत अच्छी तरह व्यवहार कीया। बातों ही बातों में हमने उन से पूंछा कि आपकी आयु के बारे में ऐसा ऐसा कहा जाता है और सच क्या है। तो कहने लगे कि हे स्वामी जी हे कृपा नाथ आप को इसकी पूंछने की क्या आवश्यकता पड़ी। यदि वह सच कहते हैं तो वह जाने और यदि मिथ्या कहते हैं तो उनकी बात से क्या प्रयोजन। हमने कहा कि मैं तो केवल जानने के लिये और सचाई मालूम करने को पूंछता था और कोई प्रयोजन न था। तो आपने पूंछा कि अच्छा आप ही बताइये आपका इस बारे में क्या खयाल है। हमने कहा कि मेरा ध्यान तो ऐसा है कि सौ वर्ष से दो चार कम या दो चार अधिक होगी। आपने थोड़ी देर सोचा और बोले कि मुझ से पूंछते हो तो मैं बताता हूं कि हे दयालु "मैं तो अनादि हूं"। यह बात सुनकर हमको श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन व

श्रीकृष्ण जी महाराज का संवाद याद आया कि जहां श्री कृष्ण जी ने अर्जुन से कहा था कि मैं ने इक्ष्वाकु को यह उपदेश दीया था मैं अनादि हूं और मैं इस वात को जानता हूं परन्तु तू इस वात को नहीं जानता। हम इस को विचार कर रहे थे कि महात्मा वोले कि हां अव आप अर्जुन और कृष्ण महाराज के सम्वाद को विचार रहे हो और फिर वोले कि मैने दो नियम रखे एक तो जव चलता था तव पवन की भांति चलता था जैसे हवा चलती है कि जव चाहा तव चल उठी न तो किसी से पूंछना और न किसी से मिलना और बहुत मुल्कों और शहरों की सैर की जव जी चाहा चल पड़े और यद्यपि इस शरीर में पांचों तत्व हैं परन्तु इन में मट्टी प्रधान है इसलिये जव से वैठा हूं तो धरती की भांति वैठा हूं मानो जैसे धरती न हिलती है न झुलती है इसी भांति मैं भी एक जगह वैठ रहा हूं और इस स्थान पर वैठे हुए जितना आपका ध्यान हैं उतना ही समय हुआ है यानी सौ वरस से दस वरस कम या अधिक। और यदि तुम कहो कि धरती तो हिलती झुलती भी है और भोंचाल आते हैं तो इस प्रकार मेरे हाथ पैर भी हिलते हैं और मैं भी टट्टी पेशाव को उठता वैठता हूं और अव यह मिट्टी जहां के निमित है वहां लगेगी और उसी जगह चोला वर्तेगा। और कहने लगे कि साधु के तीन शत्रु होते है एक ब्राह्मण दूसरा नाई तीसरा साधु मेरे पास बहुत से

मनुष्य आया करते हैं परन्तु मैंने कह रखा है कि मेरी कोठरी के भीतर कोई न आवे जिस किसी को मांथा टेकना हो बाहर पांच सात हाथ दूर ही से टेकले और सांसारिक मनुष्य बहुत सी बातें कीया करते हैं परन्तु मैं सब बातों का एक उत्तर देता हूं कि गुरू महाराज की भभूती लेजाओ और उस पर जो तुम्हारा निश्चय होगा सो प्रगट हो जायेगा। वही मेरा तो परमेश्वर है और परमेश्वर ही मेरा गुरू है। एक ब्राह्मण हमारी बड़ी सेवा करता था और उसको बाल बच्चे की बहुत इच्छा थी। कई वार हमसे कहा हमने यही कहा भभूती लेजाओ गुरू महाराज सब कुछ करेंगे। वह कहता था कि आप ही कुछ करो। एक दिन हमने कहा कि यदि हमारे वचन पर विश्वास है तो भभूती लेजाओ गुरू महाराज सब कुछ करने वाले हैं। मैं तो जो कुछ समझता हूं गुरू को ही जानता हूं वह भभूती लेगया और गुरू महाराज की कृपा से उसके लड़का पैदा हुआ। उस ब्राह्मण की स्त्री और उसका पोता अब तक जीवित है और वह बडा विश्वास रखते हैं। मैं केवल रातको एक वार खाता हूं और उस ब्राह्मण के ही हाथ में भोजन का प्रबन्ध है एक कलार भी हमारा शिष्य है और बड़ा भगत है यह ब्राह्मण और वह कलार दोनों मिल झुल कर भोजन लाते हैं वही रात को खा लेता हूं। और एक नियम यह भी है कि जो कुछ चढ़ावा नक़द हमारे पास आता है

सायंकाल को उस ब्राह्मण से कहता हूं कि सब आदमियों के सामने उसको गिनले और सब उसके पास जमा रहता है जब अधिक होजाता है तो या तो गुड़ का हलुआ या दूध के माल पूए करके यह सारे नाई ब्राह्मण व साधु आदि जो एकत्रित रहते हैं खा लिया करते हैं। दिन में इनलोगों का यहां बड़ा जमाव रहता है। और नारियल आदि जो चढ़ावे में आते हैं उनको बेचकर भंग, चरस, गांजा और अफ़ीम मगाकर रखदी जाती है उसमें से यह सब लोग खाया पीया करते हैं। और गाय, भैंस बकरी आदि जो चढ़ावे में आजाती है तो वह भी इस ब्राह्मण को देदी जाती हैं और उसको आज्ञा है कि घी तो तुम लेलो और छाछ सब मोहल्ले के और आने वाले ब्राह्मणों को देदिया करो यदि कोई और ब्राह्मण इस की बुराई करता है कि महाराज यह चढ़ावे में से रुपये खा जाता है तो उस से कह देता हूं कि भाई यदि तुम चाहो तो तुम रुपया रखा करो या कह देता हूं कि यह मेरी सेवा भी बहुत करता है यदि खा लिया तो क्या हुआ। यदि कोई कहता है कि इस को घी की बहुत आमदनी है तो उसको उत्तर देता हूं कि भाई रातको जो भोजन बनाकर लाता है सब घी उस में लगा देता है। सारांश इस भांति काम चलता है। आज तक मैंने इतनी बातें किसी से नहीं कहीं। आप को निपक्ष देखा और यह अनुभव करके कि आप वादविवाद को अच्छा नहीं

समझते इस लिये आप से सब बातें कहदी। आपको यह भी आज्ञा है कि यदि आप रात को यहां आना चाहें या रहना चाहें तो आभी सकते हो और रह भी सकते हो। हम उनके पास कभी कभी जाया भी करते थे। हमने उनसे कहा कि एक बाबू हज़ारीलाल जी हमारे बड़े भगत हैं। इन्हीं के घर पर मैं बहुधा ठहरता हूं। यदि आज्ञा हो तो वह भी कभी कभी भोजन ले आया करें। उन्हों ने कहा कि यदि वह आपके भगत हैं तो उनको भी आज्ञा है कि वह रातको भोजन लासकते हैं इसलिये बाबू साहब भी दूसरे चौथे कभी कभी खाना लेजाया करते थे।

(८४) एक दिन इरशाद हुआ कि अलवर में कृष्णा कुण्ड पर दूधाधारी बाबा रहते थे। उन्हों ने भगवानदास नामक ब्राह्मण को अपना शिष्य बनाया। उसने थोड़े दिन गुरू जी की ऐसी सेवा टहल की कि वह बड़े प्रसन्न होगये और अपने धरोमन ढकोमन का सब हाल उसे बता दीया जब चेले जी ने सब पता जान लीया तो जन्म अष्टमी की रात को सारा माल व सामान गुरू महाराज का लेकर चंपत होगया और थोड़े दिवस पश्चात् उस रुपये से विवाह आदि करके आनन्द से रहने लगा।

(८५) एक दिन इरशाद हुआ कि अलवर में

लाल डिग्गी पर एक बाबाजी आकर उतरे उन्होंने सती सेवक से लेकर और भित्ता आदि मांग कर पांच सेर सौना और सात सेर चांदी इकट्ठी की थी उसको अपनी धूनी के नीचे रखते थे । कुछ कूआ आदि बनवाने का विचार था । किसी मनुष्य को इस का पता लग गया और एक रात को सारा सोना और चांदी उड़ा लेगया—

"तेली जोड़े धार धार और खुदा लेजावे एक बार"

साधु जी हाथ मल कर रह गये ।

(८६) एक दिन इरशाद हुआ कि अलवर के महाराजा मंगलसिंहजी बड़े निर्पक्ष न्यायकर्त्ता प्रसिद्ध थे परन्तु उन में कुछ हठ भी थी जिस बात पर अड़ गये अड़ गये। बहुधा लोग उन के इस स्वभाव के लिये बुराई करते हैं। परन्तु वह सदा ऐसी बात पर हठ करते थे जो उनको सच्ची मालूम होती थी। यदि किसी सच्ची बात को उन पर प्रमाणित कर दीया जाय तो उस को मानने में कदापि आनाकानी नहीं करते थे। उनके सम्बन्ध में यह बात प्रसिद्ध है कि वह कपटी और ढोंगी साधुओं से बहुत घृणा करते थे। साधुओं के बारे में आम तोर से उन के विचार अच्छे नहीं थे । साधुओं को दान पुण्य बहुत कम करते थे । एक बार किसी

साधु के स्थान पर रात्रि के समय इकले गये। साधु का बुरी तरह अपमान कीया और बुरा भला कहा। उस साधु ने महाराजा साहब को पकड़ लीया और बहुत ही असभ्य वर्ताव कीया और बोला कि आप राजमद में मस्त हैं और हम ईश्वर के चिन्तन में मस्त हैं अब आप बताइये कि आप के पास सैना, तोप, बन्दूक सब कुछ है परन्तु इस समय कौनसी वस्तु आप के काम आसकती है और क्या सहायता मिल सकती है। महाराजा साहब ने बहुत उनकी मिन्नत समाजत करके पीछा छुड़ाया परन्तु उस साधु से अप्रसन्न न हुए और उनको कभी पीछे तंग न कीया। उनके समय में साधुओं को बहुधा बेआरामी थी। एक मनुष्य ने साधु सेवा का महात्म सुनकर संकल्प कीया कि अब से इनकी सेवा करनी चाहिये और कामधेनु यानी भैरों झोली उठाई। प्रथम प्रथम दिवसों में दो चार सेर आटा मांग कर लाता और साधु और अपाहजों को खिलाता। बढ़ते बढ़ते यहां तक हुआ कि मन सवा मन आटा दैनिक आने लगा और साधुओं की भी खूब भीड़ होने लगी। तो शहर से बाहर झोंपड़ी डालकर साधुओं के रहने का स्थान बनादीया। महाराजा मंगलसिंह एक दिन बाजार की सैर को निकले लोगों से पूछा कि शहर में आज कल कोई साधु नहीं दीखता क्या कारण है। लोगों ने कहा कि महाराजा साहब राज से तो किसी को कुछ आजी-

विका मिलती नहीं। परन्तु एक मनुष्य भैरों झोली माँग कर आटा लाता है उस से साधुओं को खिलाता है इसलिये उसके पास साधु ठहरते हैं। महाराजा ने पूछा कि यह जो मन्दिरों को इतना रुपया राज से मिलता है यह क्या करते हैं। आज्ञा दी अच्छा कल हम छुपकर इनकी देख भाल करेंगे। दूसरे दिन आरती के समय कई मन्दिरों में गये। भोग लगाने के पश्चात् नौकर चाकरों में प्रसाद बटगया न किसी साधु को मिला न कोई अभ्यागत आया। पश्चात् उस कामधेनु वाले के यहां गये तो देखा कि बहुत से साधुओं और अभ्यागतों को खाना मिल रहा है। वहां से पीछे आकर कई मन्दिरों के बन्धान से रुपया काट-काट कर प्रथम पांच रुपया रोज़ उस भैरों झोली वाले को दीया और कहा कि यदि तुमने भली प्रकार काम चलाया तो बहुत कुछ अधिकता इस में की जावेगी। जो मनुष्य परोपकार पर कमर बांध कर तत्पर हो जाते हैं उन की सहायता प्रकृति करती है और रुपया दौड़ दौड़ कर उनके पास आता है।

दाता के घर लक्ष्मी हर दम रहत हजूर।
जैसे गारा राज को भर भर देत मजूर॥

(८७) एक दिन इरशाद हुआ कि हम धौलाजी के दर्शनों को गिरनार पर्वत पर गये। वहां एक मनुष्य चेता नामक भगत रहता था। उसके पास गाय भैंस

बहुत सी थीं । परन्तु न तो वह उनका दूध बेचता था न घी । उसका नियम था कि जो दूध होता था वह साधु व अभ्यागतों को खिलाता था और जो बचता उसको जमाकर मक्खन निकालता और वह मक्खन साधुओं की रसोई आदि में काम में लाता था । गाय भैंस के खरच को सेठ साहूकार व रईसों के पास से इतना रुपया आजाता था कि भली प्रकार काम चलता था । उसकी साधु सेवा और परोपकार से सब लोग ऐसे प्रसन्न थे कि उसकी आज्ञा के पालन करने को अपना गौरव समझते थे ।

(८८) एक दिन इरशाद हुआ कि श्रीमान् बाबू श्मामसुन्दरलाल साहब प्रधान कर्मचारी राज्य किशनगढ़ हम से आकर मिले और हमको अपने घर ले गये । वहां एक दिन बाग में श्री महाराज साहब किशनगढ़ भी हम से मिलने आये । हमारा विचार उसी दिन श्याम चलने का हुआ तो कहने लगे कि कल महाराज साहब अलवर और महाराज साहब जोधपुर भी यहां पधारे हैं उनको भी आप से मिलाऊंगा । हमने कहा कि वज़ीर साहब हमें क्षमा करें । हमारे हमजोली तो निर्धन लोग हैं । हम धनाढ्य और रईसों से मिल कर क्या लेंगे एवं उन से भेंट करना उलटा कष्ट कारक होता है । कोई कहता है कि यह बात मेरे लीये कहदो

या यह प्रशंसा करदो और जिस का काम न करो उसी के बुरे बनो। और रईसों से यदि किसी के लिये कुछ कहो तो उनकी दृष्टि में ज़लील बनो और बात भी ठीक है कि सवाल करने वाला सदा तुच्छ होता है दूसरे इन लोगों से भजन पूजन तो होना ही क्या राख है इनको तो अगले तप के प्रताप से राज मिला है उससे तप ते हैं वरं उनकी उलटी हां में हां मिलानी पड़ती है जो तनक भी उनके विरुद्ध कहो तो लड़ाई की सूरत उत्पन्न होती है फिर भला हमको ऐसी चापलूसी की क्या आवश्यकता है हमतो निर्धनों से ही मिलने में प्रसन्न हैं जो भगवान का नाम तो लेते हैं और यदि धनाढ्य से मिलते हैं तो ऐसों से जैसे दरोगा रामचन्द्रजी हैं जो अपने आपको जानते हैं और अमीरी क्या ध्यान तक छोड़ दीया है और आप स्वार्थ को मार दीया है।

(८६) एक दिन इरशाद हुआ कि दरोगा रामचन्द्रजी के पास एक साधु ने आकर डेढ़सौ रुपये मांगे। आपने कहा कि पांच रुपया लेकर चले जाओ। वह न गया। तो उससे खाने के लिये पूंछा। उसने पाव सेर घी, आटा, दाल कुछ कलाकन्द आदि वस्तुएं लिखादीं वह प्रत्येक दिन उस साधु को मिल जाता था और खा पी कर मस्त पड़ा रहता था। कुछ दिन पश्चात् दस रुपये देने को कहा परन्तु साधु राजी न हुआ। इस

प्रकार थोड़े थोड़े समय उपरान्त रकम बढ़ाते जाते थे सारांश साधु डेढ़ सौ रुपये लेकर टला और एक वैश्या के यहां जाकर रुपया खरच करने और मौज उड़ाने लगा। दरोग़ा साहब के मुनीम और दूसरे नोकरों ने सुनाना आरम्भ कीया। हम भी वहां ही थे। दरोग़ा साहब को सुना सुनाकर कहने लगे कि अन्त में साधु को डेढ़ सौ रुपया भी दीया और इतने दिन के भोजन का खरच भी उठाया और वह साधु वेश्यागमन करता है। दरोग़ाजी थोड़ी देर तो चुप रहे पश्चात् दोंनो को बुलाकर कहा कि सच सच बताओ तुमने एक स्त्री के अतिरिक्त दूसरी से बात नहीं की परन्तु झूंठ न बोलना क्यों कि मुझे तुम्हारा सब मालूम है सारांश दोनों ने इक़बाल किया और कहा कि हमतो एक ही स्त्री के होकर नहीं रहे। दरोग़ा साहब ने कहा कि क्या गृहस्थी मनुष्यों के नाम भगवान की ओर से आज्ञा आगई है कि वह अपनी स्त्री के अतिरिक्त चाहे जितनी स्त्रियों के साथ व्यभिचार करें उनसे कुछ पूंछताछ न होगी और न वह पापी समझे जायेंगे। और क्या कोई ऐसा भी नोटिस निकला है कि वर्ष दो वर्ष में यदि साधु का मन ऐसी बात पर चल आवे तो उसे अवश्य ही दण्ड मिलेगा। सांसारिक मनुष्य व्यभिचार से परिपूर्ण कभी भूले से भी परमात्मा का नाम नहीं लेते और फिर ऐसे बुरे काम करते हैं वह तो क्षमा कर दीये जावेंगे। और साधु जो दिन रात ईश्वर भजन में लगे

रहते हैं और सकल सांसारिक पदार्थों से हाथ धो बैठे हैं और इन्द्रियों का दमन कर रखा है। यदि कदाचित उनसे ऐसा काम हो जावे तो वह कदापि क्षमा न कीये जावेंगे। क्या उनके भजन पर कुछ भी विचार न कीया जावेगा। तुम लोग तो मौजें उडाओ और वह योंही रहें।

(६०) एक दिन श्री मुख से यह वचन कहे कि दरोग़ा रामचन्द्र के यहां एक साइस लगभग चौदह आना का दाना रोज़ चुराता था। भगवतीलाल उसकी देख-रेख पर नियत हुए और एक दिन वह साइस पकड़ा गया। कामदार साहब के सामने लायागया। उन्हों ने उसको पहरे में बिठाल दीया। संयोगवश दरोग़ा साहब ने उसको बैठा देखकर हाल पूंछा। मालूम हुआ कि घोड़ों का दाना बहुत दिनों से चुरा रहा है आज पकड़ा गया है। कामदार साहब ने पहरे में बिठाल दीया है। आपने साइस को ऊपर बुलवाकर हमारे सामने उससे कहा कि मूर्ख यदि चोरी ही करनी थी तो आंख बचाकर करता। खुल्लम खुल्ला काम करने का यह परिणाम होता है कि तु कैसा नीचा देख रहा है। वह गिड़गिड़ाने और क्षमा मांग ने लगा। आपने उसे छोड़ दीया। जब कामदार साहब को यह समाचार ज्ञात हुए तो बड़े अप्रसन्न हुए और दरोग़ा साहब को सुनाकर कहने लगे कि जब

मालिक (स्वामी) ही कुछ ध्यान न करे । एवं उत्थ साहस दे तो हम क्या प्रबन्ध करें। सारांश ऐसी ऐसी बातें कहने लगा। जब कह चुका तब दरोग़ा साहब ने उसे बुलाया। बहुत से मनुष्य बैठे थे उस समय उस से पूंछा कि लाला जौहरीलाल आज तुम किस श्रेणी के धनाढ्य गिने जाते हो और तुम्हारे पास कितनी जायदाद है। उसने उत्तर दीया कि लगभग एक लाख का मनुष्य गिना जाता हूं और लगभग तीस हजार का मकान अलग है। दरोग़ा साहब ने कहा कि हमारे पिता जी के सामने से तुम पांच रुपये मासिक के नौकर हो और अब तुमको दस रुपये मासिक मिलते हैं। इस में से ही तुम्हारे घर का खर्च भी होता होगा और यह भी हमको विदित है कि तुम्हारे पिता कुछ छोड़ कर नहीं मरे थे। और तुमने भी हमारे घर के अतिरिक्त कहीं नौकरी नहीं की जो वहां से धन ले आते। सारांश जितना भी धन तुमने एकत्र कीया है यह सब हमारे ही यहां से उड़ाया है और बड़े आदमी बन गये हो। कामदार बहुत लज्जित हुआ और बोला कि हजूर का नाम भी सब जगह हो रहा है कि उनके कामदार भी इतने समय में ऐसे धनाढ्य होगये यह ऐसी दातार सरकार है। यह सुनकर आपने कहा कि यह तो सत्य है। फिर भण्डार खाने के दरोग़ा से भी इसी भांति पूंछा कि तुम तीन रुपये मासिक पाते हो। तुम कितने के

मनुष्य हो। उसने भी स्वीकार कीया कि मैं भी पचास साठ हज़ार का आदमी हूं। तो आपने कहा कि देखो तुम लोगों ने इतना धन उडाया और बड़े आदमी बन गये। यदि यह निर्धन साईस भी कुछ बनजाता तो क्या हानि थी। हमारे नाई को देखो आज एक एक तुकता और ज्योंनार में पांच पांच हज़ार रुपया व्यय कर देता है। हमारे पिताजी ने उसको पसों भर-भर कर अशर्फियां दी हैं और मेरे हाथ से भी यदि अशर्फियां नहीं तो रुपये तो उसको पसों भर-भर कर ही मिले हैं। उसने भी अपनी आय में अबतक इस प्रण को निभाया है कि मेरे पिताजी या मेरे अतिरिक्त किसी की हजामत नहीं बनाई केवल इन स्वामी जी महाराज की हजामत हमारे कारण बनाता है। और जैसे तुम हमारे यहां से माल उड़ा-उड़ा कर बने हो उसी प्रकार हम भी राज से लेकर बने हैं। हमारे पिताजी बिछौने के भण्डार के दरोगा थे। लाखों रुपये के फ़र्श बनते थे। उसमें से एक दो अपने घर भी ले आते थे। अब भी कम से कम पचास हजार के फ़र्श घर में हैं। और यही दशा और वस्तुओं की समझनी चाहिये। यह धन ऐसे ही सदा इरता फिरता है और किसी का नहीं होता।

(६१) एक दिन श्रीमुख से यह वचन कहे कि जैपुर में एक समय बड़ा दरबार लगा। हमने दरोगा

रामचन्द्र जी से एक मनुष्य के लिये कहा कि इसको भी दरबार दिखादें। उन्हों ने उस मनुष्य को दरबार के प्रबन्ध कर्त्ता के पास भेजा कि तुम जाकर हमारी ओर से कहना कि तुम को दरबार में जानें की आज्ञा देदें। वह मनुष्य वहां गया परन्तु उत्तर मिला कि बिना पास के दरबार में किसी को आने की आज्ञा नहीं। उसने दरोग़ा साहब से यह समाचार कह दीया। उन्हों ने कहा कि तुम फिर मेरी ओर से जाकर कहो कि मैं उन का भेजा हुआ आया हूँ मुझे दरबार में जाने दें। परन्तु प्रबन्ध कर्त्ता साहब ने फिर मना कर दीया। जब वह मनुष्य लौट कर आया तो दरोग़ा साहब ने कहा कि वह बड़े नियमपालक हैं अच्छा यह हमारा दरबारी पास तुम ले जाओ। हम बिना पास दरबार में जावेंगे। वह मनुष्य दरबारी पास लेकर गया। प्रबन्ध कर्त्ता साहब ने पास देख कर जाने दीया। तत्पश्चात् दरोग़ा साहब पहुंचे और प्रबन्ध कर्त्ता साहब से बोले कि साहब मैं अब दरबार में जाता हूँ और मेरे पास दरबारी पास नहीं है क्यों कि दरबारी पास अपना मैंने उस मनुष्य को देदिया है क्या आप मुझको रोक सकते हैं। प्रबन्ध कर्त्ता साहब बोले कि वाह जनाब आपको कौन रोक सकता है आप जैसे चाहें वैसे जा सकते हैं। दरोग़ा साहब बोले नहीं आप महाराजा साहब व प्रधान मन्त्री साहब से जाकर पूंछ आवें कि क्या वह भी मुझे रोकने की

आज्ञा देंगे । प्रबन्ध कर्त्ता साहब ने बहुत कुछ कहा सुना परन्तु उन्हों ने प्रधान मन्त्री जी के पास उन्हें भेजा ही । प्रधान मंत्री जी ने सुन कर कहा कि भला उनको कौन रोक सकता है । रोक टोक और नियम तो साधारण मनुष्य के लिये होते हैं । जिस ड्योढ़ी में दरबार हो रहा है वह स्वयम् उसके दरोग़ा हैं । प्रबन्ध कर्त्ता साहब ने वही उत्तर दीया कि आप भीतर जा सकते हैं । उस समय दरोग़ा साहब ने कहा कि जब मैं इस भांति दरबार में जा सकता हूँ तो तुमने मेरे कहे को क्या समझा था जो दो बार मेरे भेजे हुए मनुष्य को लोटा दीया । तुम को ध्यान होना चाहिये कि सब नियम सर्व साधारण मनुष्यों के लिये होते हैं । जो दरबारी मनुष्य हैं उनके लिये नियम बाधक नहीं होता क्यों कि वही नियम बनाने वाले हैं उनको कौन बाध्य कर सकता है वह चाहे जिस नियम को तोड़ सकते हैं ।

(६२) एक दिन इरशाद हुआ कि जैपुर में एक स्थान के विषय में यह बात सर्व विख्यात थी कि यहां भूत आदि बहुत रहते हैं । वहां कोई मनुष्य रात्रि के समय न जाता था और न रहता था । कुछ समय हमें वहां अकेला रहने का इतफ़ाक़ हुआ । दरोग़ा रामचन्द्र जी के चाकर हमको श्याम से पहले दूध दे आते थे । एक दिन अन्धेरा होगया और दूध का किसी को ध्यान न

रहा। रात्रि को जब याद आई तो भला वहां जाने का किस को साहस था। परन्तु यह भी चिन्ता थी कि यदि दूध न पहुंचा तो दरोग़ा साहब अप्रसन्न होंगे। एक नया परदेशी दरोग़ा साहब के यहां नौकर होकर आया था उसको भेज दीया। जब वह हमारे पास पहुँचा तो हमने उस से कहा कि अब रात अधिक हो गई है यहीं सो रहो। वह हमारी चार पाई के पास पृथ्वी पर सो रहा। और हम अकेले ऊपर सो रहे। लेटे हुए ध्यान में थे कि हम को ऐसा मालूम हुआ कि कोई स्त्री हमारे पैर दबाती है और कुछ मनुष्य भांति भांति के बाजे बजाते और नाचते हैं। प्रथम तो यह विचार हुआ कि दरोग़ा जी की टहलनी इस नौकर के साथ न आई हो परन्तु पश्चात् उस ने कुछ ऐसे अद्भुत प्रकार से पैर दबाये कि हम को भ्रम हुआ कि यह तो कोई पिशाच है। हम ने नेत्र तो खोले नहीं परन्तु धीरेसे उस को पकड़ने के लिये उस की ओर हाथ वढ़ाया। हमारा हाथ वढ़ाना था कि वह चीख मार कर भागी और सब मराडली तितर वितर होकर ऐसे भागे कि उस नीचे सोए हुए मनुष्य को लातों से खूंदडाला। वह घबराकर कह ने लगा कि यह क्या बला है। हम ने उस को शान्ति देकर कहा कि चुप चाप सो जाओ।

(६३) एक दिन एक साध पधारे। सर पर

दुपट्टा तो रंगीन था वाक़ी वस्त्र सब बड़े भड़कदार थे। कोट, पाजामा, कमीज़, घड़ी सब ठाठ छैलाओं के से थे। श्री महाराज ने देखते ही कहा कि आप और यह वस्त्र! इधर पधारिये। जब पास आये तो बड़ी प्रीति से कोट आदि उतारे और एक रंगीन लम्बा चोला पहना दीया। चोला पहनते ही उसकी विचित्र दशा होगई। जोश से नाचने लगा। श्री महाराज ने पूछा अब कहां विश्राम कीजियेगा। उन्होंने उत्तर दीया कि अब वनयात्रा और देशाटन को जी चाहता है। श्री महाराज जी ने कहा कि अच्छा जाओ। उसी समय वह मांथा टेक कर चल दीया और आज तक फिर उन का पता न चला और न किसी जान पहचान वाले ने ही उन्हें देखा। कैई सज्जनों ने निवेदन कीया कि महाराज उन पर बड़ी कृपा की तो कहा कि धरोहर को पीछा देना और हिस्सा देना कोई उपकार की बात नहीं।

(९४) एक दिन जाड़े की ऋतु में एक जागीरदार साहब ने एक बहु मूल्य कम्बल व दुशाला श्री महाराज को बुला कर उढ़ा दीया। जागीरदार साहब भी उपस्थित थे कि एक नंग धड़ंग साधु आये और कहने लगे कि बाबा जाड़ा लगता है कुछ हमको पहनाओ। श्री महाराज ने अपना चोला उतार कर दीया और पूंछा और कुछ। उन्हों ने उत्तर दीया हां ओढ़ने

की आवश्यकता है आपने वही दुशाला ओढ़ने को दीया और पूंछा अब। उसने कहा सर नंगा है। आपने टोपा भी देदिया और पूंछा कुछ और। उसने कहा टांगें खुली हैं। आपने धोती उतार कर देदी और बिलकुल नंगे होकर बैठगये। और उससे पूंछा कहिये और कुछ चाहिये। उसने कहा कि बस और चलता बना। उपस्थित सज्जनों में से एक दौड़े और दूसरा चोला व धोती लाकर उढाया।

(६५) एक दिन एक मनुष्य जयपुर में श्री महाराज के पास आया और अफीम के धड़े के सम्बन्ध में पूंछा कि मुझे धड़ा बतला दीजिये। आपने पहले बहुत मना कीया परन्तु वह तो सर होगया और टाले से नहीं टलता था तो आपने कहा कि धड़े से तुमको कुछ लाभ न होगा। पश्चात् पानी से भरा एक कटोरा मंगाकर अपने निकट रख लीया और उसको पास बुलाकर कहा कि देखो। उसने जब कटोरे में देखा तो पानी में उसे अंक दिखाई दीये जो उसने याद कर लीये। श्री महाराज तो इसके पश्चात् जयपुर से कहीं और चलदीये जब पीछे आये तो वही मनुष्य फिर मिलने आया। उससे पूंछा कि तुमको उस समय कितना रुपया मिला। उसने कहा कि महाराज धड़ा तो वही निकला जो मैंने पानी में देखा था परन्तु मेरे जी में कुछ भ्रम होगया

इस कारण मैंने उस समय कुछ रुपया नहीं लगाया।

तिही दस्तान क़िस्मत रा चे सूद अज़ रहबरे कामिला।
के खिज्र अज़ आबे हैवाँ तिशना मी आरद सिकन्दर रा॥

अर्थः—दुरभागी मनुष्यों को रहबर कामिल से भी कुछ लाभ नहीं हो सकता जिस तरह से कि हज़रत खिज्र (ज़मीन का फ़रिशता) जैसा रहबर साथ होने पर भी सिकन्दर बादशाह आब हैवाँ (अमरत) के चशमे पर पहोंचकर भी प्यासा ही वापस आगया (रहबर=रास्ता बताने वाला या मदद करने वाला)

(९६) एक दिन एक सज्जन जिनकी धर्मपत्नी का देहान्त होगया था दर्शनों को पधारे। उनका ध्यान दूसरा विवाह करने का न था श्री महाराज ने दो तीन दिन तक तो उनसे शोक प्रगट तक न कीया। जब कई दिन व्यतीत होगये तो कहा कि एक साहब सुखलाल बहादुर जो राजपूताने के एक धनी मनुष्य थे उनकी आयु सत्तर वर्ष की थी जब उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया। लालजीत और प्रकाश दो लड़के युवा एवं अधेड़ आयु के थे और उनकी स्त्रीयां भी थीं। रईस साहब ने स्त्री के देवलोक के पश्चात् घर से बाहर एक बैठक में रहना आरम्भ कर दीया। लड़के या उनकी स्त्रीयां उनके लिये वहां भोजन आदि पहुंचा देती थीं।

थोड़ा समय भी न व्यतीत हुआ था कि एक दिन बहुत पानी वरसा और रात तक न कोई भोजन लेगया और न किसी ने भोजन को बुलाया। रईस साहब ने दूसरे दिन ही उठाकर दोनों लड़कों को बुलाया और सब जायदाद के तीन बांट बराबर के कीये। दो बांट बराबर उन लड़कों को देकर एक बांट अपने पास रखा। और कुछ रुपया देकर अपना विवाह कर लीया। जब लड़कों को यह मालूम हुआ तो वह बहुत बिगड़े कि आपकी आयु अब विवाह करने की न थी और गांव के बहुत मनुष्यों को एकत्रित करके उनके पास गये और कहा कि आप ने इस कार्य में हमसे पूंछा भी नहीं। तो रईस साहब ने उत्तर दीया कि क्या तुम मेरे बड़े बूढ़े थे जो मैं अपने विवाह के लीये तुम से पूंछता। दूसरे तुम्हारा बुरा मानना बेजा है और उस दिन का संयोग कहा कि न तुमने न तुह्मारी स्त्रियों ने हमारी कोई चिन्ता न की हम रात भर भूंखे रहे! तुमको हमारी याद भी न आई इस कारण विवाह कर लीया है कि जो अपना संगी होता है उसी को चिन्ता होती है अब भोजन तो समय पर मिलेगा। विवाह के पश्चात उनके दो पुत्र और हुए। फिर उन अज़ीज़ की ओर ध्यान देकर कहा कि तुमको मेरे पास आये कई दिन होगये परन्तु मैंने तुह्मारे साथ अब तक शोक भी प्रगट न कीया इसका कारण यह है कि जिन बातों के स्मरण कराने से दुख हो

उनका स्मरण कराना व्यर्थ है। उसकी चर्चा तक न करनी चाहिये। अब तुम यह बताओ कि तुम्हारे विवाह के बारे में क्या सम्मति है। उन्हों ने कहा कि जैसी आपकी आज्ञा होगी पालन करूंगा। और यदि मेरा विचार पूंछते हैं तो मेरी इच्छा तो विवाह करने की नहीं है। आपने कहा कि यदि हमारे कहने पर ही कार्यक्रम है तो हम कहते हैं कि शादी करो और शीघ्र करो। विवाह करना आवश्यक है। फिर आपने पूंछा कि यदि कोई कारण विशेष हो तो कहो। यदि उचित हुआ तो मैं तुमको अधिकार देदूंगा चाहे विवाह करना या न करना। उन्हों ने कहा कि कारण तो मैं क्या कहूं जब आपने कह दीया कि विवाह आवश्यक है तो आवश्यक के सामने कौन सी तर्कना होसकती है। आपने कहा तो वस। भाग्यवश यदि साथी ठीक न मिले तो तुमको अधिकार है कि पृथक करदो।

(६७) एक दिन बातों बातों में एक सज्जन ने कहा कि जिस समय मनुष्य के जी में दूषित विचार न पैदा हों तो समझना चाहिये कि उसका मन मरगया। दूसरे सज्जन ने कहा कि यह ठीक नहीं जिस समय मनुष्य बुरे काम न करे तब जानना चाहिये कि उसका मन मरगया। जब कुछ निर्णय न होसका तो श्री महाराज से पूछा गया। आपने कहा कि जिस समय भले और बुरे दोनों ही प्रकार के विचार उठना वन्द हो

जावे उस समय समझना चाहिये कि मन मर गया। क्यों कि एक लोहे की बेड़ी है तो दूसरी सोने की परन्तु हैं दोनों ही रुकावट डालने वाली। एक सज्जन ने कहा कि महाराज ऐसे मनुष्य आज-कल तो हो नहीं सकते और न देखने में आते हैं। आपने कहा कि होते क्यों नहीं। बङ्गाल में श्री रामकृष्ण परमहंस जी थे और एक महात्मा को तो हमने भी देखा है एक पण्डित जी उनसे बहुधा मिलने जाया करते थे। उन महात्मा को अपने तन बदन का चेत न था जहां इच्छा हुई टट्टी करदी जहां इच्छा हुई पड़ रहे। पंडित जी के दो विद्यार्थी इस बात से बहुत अप्रसन्न थे कि जब हमारे गुरू उसके पास आते ह तो यह साधु उनकी कुछ भी प्रतिष्ठा नहीं करता वरन् उनके सामने टट्टी पेशाब कर देता है और योंहीं मूर्ति की तरह बैठा रहता है। इसलिये उसको मारना चाहिये। यह प्रण करके दोनों वहां गये। एक का तो साहस न हुआ परन्तु दूसरे ने साहस करके उन महात्मा का भलीप्रकार शिष्टाचार कीया। वह बैठे पिटते रहे और हंसा कीये। जब वह मार पीट कर घर पहुंचा तो बड़े बेग का ज्वर हो गया जिसके कारण पाठशाला भी न जासका। पंडित जी ने उसके न आने का कारण लड़कों से पूंछा तो उसके साथी लड़के ने सब समाचार कह दीया कि इस प्रकार हम दोनों उस महात्मा को ठोकने गये थे। मेरा तो साहस हुआ नहीं परन्तु उसने महात्मा

को भली भांति गति बनाई । उसी समय से उसे ज्वर हो रहा है । पंडित जी ने कहा कि निर्दइयो बड़ा अपराध कीया । तत्काल महात्मा जी के पास आये और उन के चरणों में शीश रख कर कहा कि उस बालक का अपराध क्षमा करें । उस ने बड़ी भूल की जो ऐसा अन्याय और मारपीट की । उन्हों ने हंस कर कहा कि किस ने मारा और किस को मारा सब भगवान भली करेंगे । वहां से लौट कर जब पंडित जी लड़के को देखने गये तो एक दम ज्वर जाता रहा । उन महात्मा की और भी अनेक बातें देखने में आईं परन्तु उन की ओर से कुछ भी न होता था वरन् उन की ओर से शक्ति बदला लेती थी ।

(६८) एक दिन एक सज्जन सेवा में पधारे । और इस असार संसार की बुराई आरम्भ की । और बाल बच्चे हो कर मरजाने के समाचार कहे । और गंडे या जन्त्र देने के लिये इच्छा प्रगट की । श्री महाराज ने कहा कि औलाद का होना या होकर मर जाना सब परमात्मा के आधीन है उसी पर विश्वास रखो जो कुछ होना है सब वहीं से हो रहेगा । जन्त्र मन्त्र के विचार को छोड़ दो । यह सुन कर बोले कि महाराज जहां तक हमें स्मरण है अपनी आयु में किसी जीव जन्तु को हमने सताया और मारा नहीं है । धर्म पुण्य भी करते

रहे हैं फिर भी परमात्मा की कृपा नहीं होती। आपने कहा कि जब आप किसी गुण या कर्म को कारण लाभ या हानि का मानते हो तो उसका फल भी प्रगट हुए विना नहीं रह सकता। यदि जीव जन्तु के न सताने पर ही औलाद न होना या उनका जीवन अवलम्बित है तो क्या आप बता सकते हैं कि बचपन या लड़कपन में आपने किसी कीड़े मकोड़े तक को भी नहीं मारा। उस जीवनावस्था में खेल तमाशे के लिये कीड़े मकोड़े और पखेरू आदि को बहुधा सताते हैं और कभी कभी मार भी देते हैं। इस पर स्वीकार कीया कि ऐसा तो सम्भव हो सकता है। और यदि मेरे स्वीकार कर लेने पर आप कोई उपाय बतादें तो इसको भी करने को उद्यत हूं। श्री महाराज ने कहा कि हमको एक नक़ल याद आई। किसी साधु को आतशक का रोग होगया वह हकीम के पास गये और औषधि मांगी। हकीम ने रोग का कारण पूछा। वह कहने लगे कि कुछ ऐसे ही अपने आप होगई है। हकीम भी पूरा था कहने लगा कि यह रोग दो प्रकार का होता है एक लगा दूसरा उड़ा। और इनकी औषधी भी प्रथक-प्रथक हैं। यदि एक की औषधि दूसरे में देदी जावे तो बड़ी हानि पहुंचाती है। इस लिये आप प्रत्यक्ष कहिये कि आपको कौनसे प्रकार का रोग है। फिर तो साधु जी चकराये और बात बनाकर बोले कि हकीम जी रोग तो उड़ा है परन्तु आप

ओषधी लगा भी दें। यह बात सुनकर वह सज्जन चुप-चाप चले गये।

(६६) एक दिन किसी साहब ने अर्ज़ किया कि अकसर फ़कीर कुछ समय के वास्ते किसी एकान्त स्थान में बैठ जाते हैं और उस समय न किसी से मिलते हैं न बात चीत करते हैं, मगर श्री दरबार में इस बात की बिलकुल क़ैद नहीं है। यहां न कभी किसी से छुपकर बैठा जाता है न किसी प्रकार की रोक-टोक है। हर समय खुला दरबार है। जिस समय जो चाहे सो आवे, जो बात चाहे पूछले। कोई क़ैद व पाबन्दी नहीं। आपने फ़रमाया कि हमको एक नक़ल याद आई। किसी महात्मा का यह दस्तूर था कि कुछ समय के लिये दरवाज़ा बन्द करके अलग बैठ जाते थे और उस समय न किसी से मिलते न बात चीत करते। किसी मसखरे ने उन से उस समय में मिलने का विचार किया और अपने साथ दस बारह बोरियों में मट्टी भरवाकर लेगया। दरवाज़े पर जो आदमी बैठा था उसकी मारफत इत्तला कराई कि मुझ को कुछ जल्दी का काम है और इस ही समय मिलना चाहता हूं। शकर की बोरियां भेट के वास्ते लाया हूं। जब महात्मा जी को बोरियों का हाल मालूम हुआ तो तुरन्त उनको अन्दर बुला लिया। उन्हों ने कुछ देर बात चीत करी और वह

बोरियां भेट करके वापस चले आये। जब महात्मा जी ने बोरियां खुलवाकर देखीं तो बहुत लज्जित हुए। और फिर न मिलने की रोक टोक तोडदी और जो कोई जिस समय जाता उससे बराबर मिलने लगे।

(१००) एक दिन इरशाद हुआ कि बाबा हन्सीगिर जी अपने एक गृहस्थी चेले के यहां जाकर ठहरे। चेलाजी रोटी खिलाने के वास्ते बाबा जी को अपने घर लेजाता मगर कपड़ा लत्ता और किसी बात की कुछ न पूंछता। बावा जी की धोती ऐसी जीर्ण होगई कि उस को पहन कर उनके घर जाते भी सकुचाते। चेलाजी ने एक दो बार हामी तो भरली मगर धोती लाकर ना दी। उसकी स्त्री बडी साधु सेवी थी। उसने भी कई बार अपने पती से कहा कि बाबा जी के वास्ते धोती लादो मगर अविश्वासी चेलाने टाल बतादी। एक दिन चेलाजी तो किसी काम की वजह से बाहर गए और बाबा जी उनके घर मोजूद थे उस समय माई जी ने कहा बाबा जी यह आपका कैसा चेला है कि एक धोती भी लाकर नहीं देता। अच्छा देखो, आज मैं इस से धोती मंगवा- ऊंगी। बाबा जी तो खा पी कर वापस चले आए। औरत ने यह स्वाँग रचा कि जब उसका पति बाहर से वापस आया तो सर बखेर और बाल फेलाकर चोके बैठ गई और पति को देखकर अलाई बलाई बकने लगी।

उसने समझा कि भूतनी सर पर आगई है। बेचारा उलटे पाँव बाबाजी के पास गया और गन्डा वग़ैरा करा कर लाया। जब औरत के बाँधने लगा तो वह आँख निकाल कर बोली कि जैसा तू तैसा तेरा गुरू। ऐसे गन्डे तावीज़ों से मेरा क्या होता है। मैं कोई भूतनी थोड़े ही हूँ। मैं तो देवी हूँ। इस तरह हरगिज़ ना जाऊँगी। जब मेरी भेट देगा तब जाऊंगी। उस ग़रीब ने कहा कि अच्छा क्या भेट लेगी तो औरत ने कहा ग्यारा पीतल के लोटे और ग्यारा आसन और ग्यारा सुन्दर धोती। बेचारा तुरन्त बाज़ार गया और कुल सामान खरीद कर लाया। अब उस ने बताना शुरू किया कि एक लोटा और एक आसन और एक धोती फ़लां जगह भेज और इतना ही सामान फलां जगह भेज। इस तरह पर सब तक़सीम करा दिया। दो धोती और दो लोटे और दो आसन गुरू जी के पास भिजवाये। जब दूसरे दिन गुरू जी खाना खाने आये तो उसने अपने पति को किसी बहाने से बाहर भेज दिया और फिर बाबाजी से पूछा कि क्यों महाराज धोती इत्यादि सामान पहोंच गए या नहीं। उन्हों ने जवाब दिया कि हां बालकी मिलगई। तो औरत बोली कि देखिये आप इतने दिन से कह रहे थे और चीज़ ना आई और हमने दम भर में मँगवादी। अब बताइये कि यह चेला आप का है या

मेरा। बाबा जी हंस कर बोले कि बालकी तुम्हारा ही समझना चाहिये।

(१०१) एक दिन एक बाबू साहब हाज़िर खिदमत हुये और यह शिकायत की जब मैं ज़िकर (योग का एक साधन सुमरन) शुरू करता हूँ तो मेरे दिल में दर्द होने लगता है और बुख़ार सा चढ आता है इससे कुछ तनदुरुस्ती खराब सी हो गई है। अगर यह तनदुरुस्ती के वास्ते नुक़सान पहोंचाने वाली हो तो उसे छोड़ दूं। वरना जारी रखूं। आँ हज़ूर ने फ़रमाया कि हमको नक़ल याद आई। एक औरत बड़ी सुस्त और कामचोर थी। घर का सब काम काज खराब हो-रहा था। बच्चे भी फटे पुराने कपडे पहने डोलते। जब कपडे वग़ैरा बिलकुल बोसीदा हो गये तो उसने अपने खाविन्द से कहा कि बच्चों के वास्ते कुछ कपडा वग़ैरा बाज़ार से लादो। उसने जवाब दिया कि आज़कल पैसे की कमी है, तुम दिन भर बेकार बैठी रहती हो, यह कपास रखा है इसको जलदी कात डालो, घर भर के कपडे बन जावेंगे। कपडा भी मज़बूत होगा और किफ़ायत भी हो जावेगी। औरत ने उसके डर से इस बात को मनज़ूर तो कर लिया मगर उससे होना क्या खाक था। जब महीना दो महीना के बाद उसके खाविन्द ने फिर पूछा कि सूत कत गया या नहीं तो

उसने झूट मूट कह दिया कि हां क़रीब क़रीब सब कत गया, सिर्फ़ दो चार दिन का रह गया है। उसके बाद बनने को देदेना। दो तीन दिन के बाद उसने क्या चाल चली कि जब उसका पति घर आया तो वह बाल फैला, कपड़े उतार और नंगी होकर बैठ गई और बकबक बकने लगी। जब पतिने पास आकर पूंछा कि क्या हाल है तो बोली "मैं छूं देवीचन्ड का। माथे काली हन्ड का। सूतों का कपास करूं। के तेरे घरकी जोई हरूं।" वह गरीब डर कि कोई भूत बलाय है इसलिये बोला कि मैं तेरी बात नहीं समझा साफ साफ़ कह क्या मांगती है। औरत बोली कि मैं चन्ड का देवी हूं। यातो तेरे घर में जितना सूत रखा है उसका कपास बना दूंगी या तेरी घरवाली को मार डालूंगी। पतिने कहा कि माई सूत का कपास भले ही करदो इस गरीब की जान बख्शदो, वरना बाल बच्चे मारे मारे फिरेंगे औरत बोली कि अच्छा। यह कहकर होश में आगई और पति को देखकर कपड़े वगैरा पहन लिये और कहने लगी कि मुझको क्या होगया था। जब पति ने तमाम कहानी सुनाई तो उलटी उससे लड़ने लगी कि तूने मेरी दो महीने की महनत और कमाई मुफ़्त खोदी और कोठा खोल कर दिखाया कि तमाम क़पास मैंने कात कर रखा था फिर सूत से कपास ही बन गया। पतिने जवाब दिया कि खैर बाजार से कपड़ा लादेंगे जान बचगई

यही ग़नीमत है। वस जिस सुमरन या ज़िकर से आप की सहत ( स्वास्थ्य ) खराब हो उससे आप वैसे ही भले हैं।

(१०२) एक रोज़ इरशाद हुआ कि सेठ हंसराज जी खुद तो अधिक अंगरेज़ी नहीं जानते थे मगर जिस अंगरेज़ी पढे मुन्शी को नोकर रखते उस का इम्तिहान भी ज़रूर लेते और साहब अंगरेज़ी के सब से बडे बडे लफ़्ज़ इस्तेमाल करता वही सब से लायक़ समझा जाता। एक बाबू जगनैश लाल जी आकर मुलाज़िम हो गए और सेठजी के मन्शा को समझ गये। जो कुछ इबारत लिखते जिस में अंग्रजी के ऐसे बड़े बड़े लफ़्ज़ छांट कर धरदेते चाहे वह महावरे से ही जाता क्यों न रहे और सेठ साहब सुनकर बडे खुश होते—एक दफ़ा हमारे सामने भी उनकी बडी तारीफ़ और शाबाशी देने लगे। जब हद से ज़्यादा तारीफ की तो हमनें कहा कि सिक्खों के समय में एक सरदार करम सिंह किसी सूबे के हाकिम थे। इनके पास क़िसी मुन्शी ने आकर नोकरी की दरखास्त दी। आपने हुक्म सुनाया कि हमारे पास फ़ारसी जानने वाला मुन्शी मोजूद है। उम्मेदवार बड़ा चालाक था। उसने अर्ज़ किया कि हज़ूर मुन्शी हैं तो ज़रूर मगर वह आप का नाम छोटे काफ़ से लिखता है। यह सुनकर सरदार साहब ने मुन्शी को बुलाकर

पूंछा कि तुम हमारा नाम कौन से काफ़ से लिखते हो। उस ने जवाब दिया कि हजूर छोटे काफ़ से लिखता हूं यह सुनकर तो सरदार साहब आपे से बाहर होगये और बोले कि हम इतने बडे आदमी और हमारा नाम छोटे काफ़ से लिखते हो—जाओ तुम बरखास्त और तुम्हारी जगह यह उम्मीदवार मुक़रर। सो सेठजी बडे लफ़जों का लिखना ज़ियादा लियाक़त की बात नहीं है बलके सादा अंग्रेजी यानी छोटे २ लफ़ज़ों में, जो आम आदमी समझ सके। बडे मतलब की बात को लिख देना यह खूबी की बात है।

(१०३) एक रोज श्री महाराज को हाट से तशरीफ़ लेजाने वाले थे कि कई आदमियों ने घर पर लेजाकर खाना खिलाने के लिये बहुत कुछ अर्ज़ मारूज़ की—चूंके समय बहुत थोडा था। आपने फरमाया कि अच्छा भाई सब के घर जाकर एक-एक लुक़मा खावेंगे। उस दिन कई साहबों के घर आने जाने में समय भी बहुत लग गया और कुछ थकान भी होगई उस समय आपने फरमाया कि दुनियांदारों का क़ायदा है कि अगर किसी को एक पैसा भी देते हैं तो चार पैसे का काम उससे लेते हैं। एक एक लुक़मा खाने के बदले में आने जाने की महनत और मज़दूरी हमको भी करनी पड़ी है।

॥ दोहा ॥

दाँत खियाने खुर घिसे पीठ बोझ नाले ।
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस दे ॥

मगर क्या करें मजबूर हैं हमको इनकी परवाह है । इसलिये इनके पीछे २ फिरते हैं कि किसी तरह से इनकी भलाई हो जाय । अगर मस्त और बे परवाह होकर पड़ रहें तो फिर इन के पीछे फिरने की क्या ज़रूरत है ।

॥ दोहा ॥

तब लग जोगी जगत गुरु जब लग रही न आस ।
जब जग की आसा करे तब ही जगत का दास ॥

(१०४) एक रोज़ इरशाद हुआ कि हम एक गाँव में ठहरे हुए थे कि वहां एक परमहंस महात्मा भी आये । गांव वालों ने उन की बड़ी सेवा टैल की । कई दिन परमहंस जी महाराज ने ठहर कर चलने की ठान दी । गांव वालों ने बहुत कुछ ठेरने के लिये अर्ज़ मारूज़ करी मगर ठेरना स्वीकार न किया । वह सब लोग हमारे पास आये और कहा कि अगर आप परमहंस जी महाराज से ठेरने को कहें तो वह ठहर जायें । अव्वल तो हमने उन से कहा कि वह महात्मा है और उन्हों ने जाने का इरादा कर लिया है किस तरह से ठेरने को कहूँ आखिर उन के कहने सुनने से मजबूर

होकर हमने परमहंस जी महाराज से अर्ज़ किया कि इन लोगों का बड़ा प्रेम और खयाल है अगर आप एक दो रोज़ ठहर जावें तो इन को बहुत कुछ फ़ायदा पहोंचेगा। यह सुन कर बोले कि आप के कहने को हम कैसे टाल सकते हैं। ज़रूर ठेरेंगे, मगर यह बताइये कि आप ने महात्मा हो कर हम को एक दो रोज़ ठेरने के वास्ते किस तरह से कहा। हम ने कह दिया कि इन कुल आदमियों ने बड़े प्रेम और भक्ती भाव से कहा था इस लिये मैं मज़बूर हुआ कि आप से ठेरने को कहूं और इस में इन का फायदा भी होगा। यह सुन कर आप हंसे और फरमाया कि इन लोगों को हम से क्या फ़ायदा हो सकता है बलकि इन से हमको ही कुछ फ़ायदा पहोंच सकता है क्यों कि यह बड़े निशचे वाले हैं। देखिये यह दरख्त लगाते हैं और निशचे रखते हैं कि हम इस का फल खावेंगे। मकान बनाते हैं और इस में रहने का पक्का खयाल होता है और हम हैं कि हर तरह से और हर पहलू से जानते हैं कि सांस जो बाहर गया उस के अन्दर आने की कोई पूरी उम्मीद नहीं। मगर फिर भी एक दो रोज ठेरने का इक़रार है—

दमें वापस ग़नीमत अस्त

अर्थः—जो दम या श्वांस वापस आजाय वह ग़नीमत है।

अब निशचे इन लोगों का ज़यादा हुआ कि हमारा हम अपने निशचे में इन लोगों से भी कम और नाकिस हैं।

(१०५) एक रोज़ इरशाद हुआ कि वैराग की हालत में आदमी अपने शरीर तक से बेज़ार होजाता है। और शरीर को मल मूत्र का भन्डार समझ कर उसे त्याग करने तक की इच्छा पैदा हो जाती है मगर विवेक में यह हाल नहीं रहता। बलकि इसको परमात्मा का तलाश और उसके पाने ज़रया और वसीला समझ कर इसको रखने की इच्छा पैदा हो जाती है और दिल चाहता है कि अगर इसी शरीर में काम बन जाय और ईश्वर प्राप्ती होजाय तो बहुत अच्छा हो मगर जब ज्ञान की हालत में पहोंचता है तो उसे अपना शरीर खास परमात्मा का घर नज़र आता है और उस समय क़ुदरत के दस्तूर के मुताबिक़ इसकी हिफ़ाज़त करता है और वैराग का सा सलूक इसके साथ नहीं करता।

(१०६) एक रोज़ इरशाद हुआ कि बाबा पंचम दास जी महात्मा ने भण्डारा किया। क़रीब ढाई तीन सो महात्मा जमा हुये। कुल आदमियों से राय लेकर और सलाह मशवरा बराबर का घी व शकर डाल कर हलवा तय्यार कराया पंजाबी महात्मा बहुत जमा हुये थे। बड़ी रुची से खाया वह हमको भी बुलाकर लेगये

थे। इनकी देखा देखी वहां के रईस को भी ख्याल हुआ कि हमारे गाँव के एक मामूली आदमी ने ऐसा काम किया है, हमको तो उससे पैशतर करना चाहिये था। खैर अब ही करदें रईस के अतालीक़ एक ब्राह्मण थे। उनसे सलाह ली उन्हों ने कहा कि पूरी और तरकारी बनवालो, पाव भर आटा फी आदमी के हिसाब से काफी होगा। ग़रज़ इसी अन्दाज से पूरियां तय्यार हुईं और कुल महात्मा भोजन करने बैठ गए। वह पंजाबी आदमी सेर-सेर भर खाने वाले पाव भर पूरियों को चटनी की तरह चाट कर बैठ गये, और इधर खाना खत्म होगया और गड़बड़ी मची। अब हालों हाल क्या हो सकता है। बहुत सलाह मशवरे करे कोई बात ठीक नहीं बैठी तब महात्मा पंचम दासजी ने हमसे पूछा कि आप कोई बात बतादें। अब पत्तलों पर से महात्मा भूके उठे तो बड़ी खराब बात होगी। हमने कहा कि बाज़ार में सिपाही दौड़ा दो कि जिस क़दर हलवाईयों की दुकान हैं सब पर पूरी कराना शुरू करादें और जब तक पूरी तय्यार हों उस समय तक यह काम करें कि जिस क़दर बाग़ हैं उन में आज कल आम और कठल पके हुऐ लगे हैं वह तुड़वाकर परोस दिये जावें। उस गांव में बाग़ात बहुत थे। हुकम देने की देरी थी कि बात की बात में टोकरे के टोकरे क़लमी आम और कठल के आगए और महात्माओं से कहा गया कि पूरी बाद में

खाइयेगा पहले इनको खावें। सब लोगों ने खाना शुरू किया और ऐसे धाप गए कि पूरियों की इच्छा भी न रही। इससे मुराद यह है कि किसी वाक़फ़कार आदमी से मशवरा लेना चाहिये। हर काम की बाबत एक ही शख्स सलाहकार नहीं होसकता।

(१०७) एक रोज़ इरशाद हुआ कि हज़रत फ़रीद उद्दीन अत्तार जब अत्तारी की दूकान करते थे उस समय एक फ़क़ीर उनकी दूकान के सामने आकर खडा रहा। मगर अत्तार साहब उसकी तरफ नहीं झांके और अपने दूकान के काम में लगे रहे। तब फ़क़ीर ने उससे कहा मियां तुम दुकानदारी में ऐसे मसरूफ़ हो कि मौत का खयाल तक नहीं। बताओ तो तुम्हारी जान कैसे निकलेगी। उस समय उन्हों ने झुंझलाकर जवाब दिया कि मेरी जान की बाबत पूछते हो तुम बताओ कि तुम्हारी जान कैसे निकलेगी। फकीर यह सुनकर दुकान के सामने लेट गया और प्रान त्याग दिये। यह देखकर अत्तार साहब को बडा ताज्जुब हुआ। और ऐसा वैराग्य पैदा हुआ कि उस ही समय सबसे अलग होकर फ़क़ीरी लेली।

(१०८) एक रोज इरशाद हुआ कि एक सरावगी लाला हमारे पास अकसर आया करते थे और तमाम

जहान की बातें हम से कहते थे। हमने उनसे कई मर्तबा कहा कि आप हमको माफ़ रखें इन बातों के सुनने का हमको शोक़ नहीं। आप हमसे क्यों कहा करते हैं वह बोले कि मेरी आदत तो ऐसी ही है। मैं चुप नहीं रह सकता। चुप रहूं तो मेरे पेट में दर्द हो जावे।

(१०९) एक रोज इरशाद हुआ कि कामा इलाक़े मथरा के राजा साहब वेदान्ती थे। बनारस में जब हम वहीं थे तो हम से मिलने को आये और सतसंग होने पर उनका वेदान्ती वाला ख्याल ढीला पडगया। और भजन अभ्यास करना शुरू कर दिया। जब हम वहां से चले जाते तो हमारे पीछे से पुरानी आदत की वजह से वह खयालात फिर आजाते थे। यह कहने लगते थे कि वही ( परमात्मा ) सब से पहले था और वही सब से अखीर रहेगा। जब हमसे मिलते थे तो उसही बात पर आजाते थे। और कहते कि पुरानी आदत से मजबूर हूं। वरना असलियत में मुझे यह बात हासिल नहीं हुई है।

(११०) एक रोज एक साहब ने अर्ज़ किया कि श्री महाराज फलाना सतसंगी भाई एक बाजारी औरत पर जी जान से आशक़ है और उसको फुसलाने वाली

बातों में आकर अपने धन व माल का नुकसान कर रहा है चूंके उसको आप से बडा प्रेम है और आप की बात में श्रद्धा है यदि आप उसे समझावें तो उम्मीद है कि आप का कहना मान जावेगा और अपनी आदत को छोड देगा तो उसके फन्दे से निकल जायगा और निजात पावेगा। आप ने फ़रमाया कि अभी समझाने का मोक़ा नहीं है। वह शख़्श उस से सच्चा प्रेम रखता है और बिलकुल उस में लीन हो रहा है और उस की तरफ़ से अभी कोई कमी मोहब्बत की बात नज़र नहीं आई है इस लिये हमारे कहने सुनने से दिल ना हटेगा। अलबत्ता जब इन का कुछ नुकसान होलेगा और फिर वह बेरुखी करेगी उस समय समझाने का मोक़ा होगा विदुर नीति में लिखा है कि विदुर जी महाराज ने राजा धृतराष्ट्र को समझाया कि आप पांडवों पर सरासर ज़ुल्म करा रहे हैं और आप के लडके ऐसी अनुचित बातें करते हैं और आप उन को नहीं रोकते। यह बात धर्म के खिलाफ है। चूंकि वह उस समय राज मद में मतवाले थे उन की बात न सुनी बलकि उलटे खफ़ा हो कर कहा कि तुम यहां से चले जाओ। विदुर जी हस्तिना पुर को छोड कर बद्रिकाश्रम को तप करने चले गये। जब महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ और कौरव मारे गए और राजा धृतराष्ट्र पांडवोंके घर में रहने लगे उस समय विदुर जी

महाराज ने मौक़ा ठीक समझा और फिर राजा धृतराष्ट्र से कहला भेजा कि आपके सब पुत्र तो मारे गए और अब आप उन ही पांडवों के आधीन हो और रोटियों पर पड़े हो जिन के साथ आप की तरफ़ से ऐसा बुरा बरतावा हुआ था। गो राजा युधिष्ठिर धर्म का अवतार है। उस को आप की किसी बात का विचार नहीं है और अर्जुन व नकुल वा सहदेव के भी विचार बरदाश्त करने वाले हैं मगर भीमसेन का सलूक आप के साथ अच्छा नहीं है वह आप से कीना रखता है और रंज मानता है कि इसी अन्धे के कारण हमको ऐसी ऐसी कड़ी तकलीफ़ें उठानी पड़ीं और अब यह बैठ कर रोटी खाता व मौज उड़ाता है। इसलिये आप का वहां रहना उचित नहीं है। और चूंकि आप के जीवन का यह आखरी हिस्सा भी है इस वास्ते अच्छा यह होगा कि आप बद्रिका-श्रम को चले आओ और मालिक की भजन वा बन्दगी में बाक़ी जीवन बिता दो चूंकि राजा का दिल उस समय तकलीफ़ों से चूर और भीमसेन के तानों से नफ़रत खा रहा था यह उपदेश काम कर गया और राजा हस्तिनापुर से बद्रिकाश्रम चला गया। इस लिये समय पर बात अच्छा असर करती है।

मजाल सुख़न ताने बीनी ज़ पैश।
ब बेहूदा गुफ़्न मबर क़द्र ख्वेश॥

अर्थः— जब तक पहले से बात कहने का मोक़ा देख ना लिया जावे (उस समय तक) बेढन्गे तोर पर बात कह कर अपनी क़दर मत खो बैठ।

(१११) एक दिन इरशाद हुआ कि एक गांव में एक तेली के घर में दिन में कई २ बार आग लगती थी, बहुत जतन व जन्तर मन्तर किये परन्तु उस गांव के समीप ही हमारा भी उन दिनों में क़याम था उस गांव के एक ठाकुर साहब बड़े भगत थे और हमारे पास आया जाया करते थे। उन ही ने हम से आकर हाल कहा और अर्ज़ की कि आपको अगर कुछ मालूम हो तो इलाज करदें। हमने कहा कि हमको जो कुछ मालूम है बता देते हैं लेकिन दावा नहीं करते कि यह आफ़त दूर हो जावेगी। और एक कागज़ पर जन्त्र लिखकर देदिया कि उस के दरवाजे पर लटका दो मालिक को मन्ज़ूर है तो बला दूर होजावेगी। उस ही गांव के पास तालाब पर एक और महात्मा रहते थे उनसे जाकर भी तेली ने अर्ज़ की—उन्हों ने सवा मन हलवा बनवाकर कुछ इलाज बता दिया। एक ही दिन दोनो जन्त्र टांके गये थे। मरज़ी मोला से आग लगना बन्द होगया वह तेली सवा मन हलवा बनवाकर उन महात्मा के पास लेगया। शाम को वह ठाकुर साहब हमारे पास आए और बड़ी नाराज़गी जाहर की कि देखो इस तेली की

मा शुक्र गुज़ारी कि आफ़त तो आपके जन्तर से दूर हुई और सवा मन हलवा वहां चढाया और यहां खाली शुकरिया अदा करने भी न आया, हमने कहा कि इससे आपका मतलब क्या है। आपका खयाल उस की तकलीफ़ दूर करने का था सो दूर होगई ठाकुर साहब बोले कि नहीं महाराज मुझको तो कल ना पड़ेगी मैं तो जब खुश होऊँगा कि फिर उसी तरह आग लगे और उसको हक़ीक़त मालूम हो जावे उसके बहुत हट करने पर हमने कहा कि अच्छा अगर उस जनतर से आग बन्द हुई है तो उसको दरवाजे से उतार लो। उसने जाकर जनतर दरवाजे से उतार लिया तो फिर बदस्तूर आग लगनी शुरू होगई जब तेली को यह हाल मालूम हुवा तो हमारे पास आया हमने कहा कि वोह भगत जी ही जनतर जानते हैं उनके पास जावो जब वहां गये तो उन्हों ने तेली को बुरी तरह धुतकारा मगर जब बहुत शिफ़ारिश पहुंची तो हमसे पूछा कि वोह जनतर देदूं हमने कहा कि हमतो आप से पहले ही कह चुके थे यह तमाशा आप को देखना था अब जैसा चाहो करो गरज़ उन्हों ने फिर जनतर देदिया और आग लगना बन्द होगई।

(११२) एक रोज़ एक अहलकार शिष्य ने

ज़िक्र किया कि हमारे अफ़सर बड़ी देर से दफ़तर से जाते हैं और सत संग में हमारा आना मुशकिल होता है इसलिये अकसर हम उनके जाने से पेशतर दफ़तर से उठ जाते हैं। यह सुनकर आं हजूर ने फ़रमाया कि एक पढ़े लिखे आदमी पटना में रहते थे। तलाश रोज़गार में बहुत दिन फिरे मगर कामयाब नहीं हुये। लाचार होकर बज़ुमरे चपरासियान मुलाज़मत अख़तियार करली और कलेक्टर साहब की अरदली में तईनात हुये। एक रोज़ शामको दफ़तर के समय के बाद कुल अहलकार मकान को चले गये और कोई ज़रूरी कागज़ कमिशनरी से आया तो कलेक्टर साहब ने पेशकार साहब को तलब किया अर्दली ने जवाब दिया कि हज़ूर वक़्त दफ़तर खतम हो जाने से सरिश्तदार साहब क्या बलकि कुल अहलकार चले गये हैं। इस पर कलेक्टर साहब बहुत ना खुश हुये और फ़रमाया कि दफ़तर का वक्त अफ़सरों के वास्ते होता है ना कि मातेहतों के लिये अब इस ज़रूरी कागज़ को किससे पढ़ावें अरदली ने अर्ज़ किया कि हज़ूर हुकम हो तो मैं पढ़ कर सुनादूं और हुकम पाकर पढ़ कर सुना दिया कलेक्टर साहब बहुत खुश हुवे और दूसरे रोज़ हुकम लिख दिया कि सरिश्तेदार बरखास्त और लाला कुल दीप नारायण उनकी जगह मुक़र्रर। उसके बाद भी लाला साहब मोसूफ़ पर

बड़ी नज़र इनायत रखते थे एक मरतबा जनाब मिस्टर दुर्गाप्रशाद साहब असिस्टेन्ट कलक्टर ने लाला साहब की शिकायत कमिशनर साहब को करदी कि उन्हों ने कुल अमलों में अपने अज़ीज व रिश्तेदार भर लिये हैं जब इनसे रिपोर्ट तलब हुई तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं सरिश्तेदार हूं कुल काम की जिम्मेवरी मेरी है और मैं अमला मे भरोसे व इतमीनान के आदमी रखता हूं चूंकि रिश्तेदार व अज़ीज़ों व दोस्तों के निसबत और उनके चाल-चलन और ऐतबार का पुरा हाल मालूम होता है और उनसे ज़्यादा इतमीनान और भरोसा और किसी आदमी पर होना मुहाल है इसलिये मजबूर मैं अपने अज़ीज़ों रिश्तेदारों को मुक़र्रिर करता हूं यह रिपोर्ट असल जनाब कलेक्टर साहब ने जनाब कमिशनर साहब को भेजदी है और इस बात की शिफ़ारश भी की कि इसका लिखना दुरुस्त है।

(११३) एक रोज़ इरशाद हुआ कि हम को एक दफ़ा जनाब लाला ज्ञानचन्द जी साहब सरिश्तेदार के साथ सरदी के मौसम में सफ़र करने का मौक़ा मिला और उन के साथ उन के पेशकार वग़ैरा भी थे। एक गाँव में पहोंचे तो वहाँ पेशकार साहब से लोगों ने कपडे व खाने वग़ैरा की बाबत दरयाफ्त किया उन्हों ने कुछ

कहा, कुछ न कहा। ऐसे ही खामोश से हो रहे। जब सरिश्तेदार साहब से दरयाफ्त किया गया तो उन्हों ने जवाब दिया कि भाई ओढ़ने को लिहाफ़ और तापने को कोयले वग़ैरा भिजवा दो और हम से बोले कि हम रिशवत वग़ैरा तो कभी लेते नहीं और किसी से कभी कुछ माँगते नहीं लेकिन अगर बग़ैर माँगे कोई खाने कपड़े की पूछे तो इनकार नहीं करते बलकि साफ़ साफ़ ज़रूरत के मुताबिक़ बतला देते हैं कि यह चीज़ें दरकार हैं इस में तकलीफ़ करना आत्म घात समझता हूँ। तकलीफ़ की वजह से भूके मरना और सरदी खाना फ़िज़ूल इस शरीर को जो परमात्मा का घर है तकलीफ़ देना है।

(११४) एक रोज़ इरशाद हुआ कि दुनियाँ के काम न तो बहुत शख्ती से ठीक होते हैं न बहुत नरमी से। नरमी गरमी दोनों मिली हुई हो तो खूब काम निकलता है या काम करने वाले आदमियों में कोई गरम हो तो कोई नरम भी हो। हमारा गुज़ार एक कलवा गाँव में हुआ वहां के आदमी बड़े कड़े मिज़ाज के थे। लगान वग़ैरा ज़मीदार को नहीं देते थे। बाद में वहां के ठाकुर जदधी सिंह बड़े दाब दहशत वाले हुए और उन के पास लाला चखन लाल कामदार

बडे हिसाबी और मीठा बोलने वाले थे । एक आदमी छन्नूसिंह को लगान वसूल करने का काम सौंपा गया था वह बडी तरकीब से काम निकालते थे । किसी को धमका कर किसी को डरा कर किसी को समझा कर तमाम लगान वसूल कर लिया । इन की निसबत वहां रहने वाले यह दोहा पढा करते थे ।

॥ दोहा ॥

ढूंठा पाकर कलवा गाँव । वहां के आमिल जधीसिंह नाँव ॥
चखन लाल तो गुड़ की चाकी । आना चार निकालें बाक़ी ॥
छन्नू सिंह अडहल के फूल । जिन टके टके किया वसूल ॥

(११५) एक रोज़ श्री महाराज साँभर में पधारे थे जब जनाब दीवान भगवान दास जी साहब मिलने आए और सतसङ्ग का उन पर इतना असर हुआ कि रुखसत लेकर श्री महाराज को अपने साथ अपने वतन टेरी सूबा सरहद में ले गये और उस समय से उधर की तरफ़ उनका आना जाना शुरू होगया । जनाब दीवान साहिब उस समय महकमे नमक में पचीस रुपये महीने के क्लर्क थे और इन्सपैक्टरी की बडी चाहना रखते थे । वह उस ही को सब से ऊँची जगह मान बैठे थे । श्री महाराज से अपनी यह इच्छा प्रगट की । आपने फ़रमाया

कि इन्सपैक्टरी क्या आप को इस महकमे की सुपरिन्टे-न्डेन्टी मिलेगी । उस समय यह बात असम्भव सी मालूम होती थी मगर बाद में यह कुर्सी नशीनी की जगह जनाव दीवान साहब को मिल गई । गुसाईं तुलसी दास का वचन है कि—

"मिथ्या ना होय सन्त की बानी"

---

(११९) एक रोज़ जनाब दीवान साहब ने अर्ज़ कीया कि श्री महाराज तमाशबीनी ( तमाशा देखना ) तो कुछ बुरा काम न होना चाहिये क्यों कि जिस तरह बाज़ार से दाम देकर चीज़ खरीदी जाती है उस ही तरह रुपया देकर तवायफ़ (रन्डी) को राज़ी किया जाता है और दोनों की रज़ामन्दी व खुशी से यह काम होता है इस में पाप की बात क्या है । आपने फ़रमाया कि केवल प्रेम की उमङ्ग से दोनों ऐसा काम करने पर राज़ी होजावें जव तो शायद यह पाप न भी हो मगर यहां तो रुपया खर्च कर के दूसरे के संस्कार बिगाडे जाते हैं। जैसे पाकदामन स्त्री कई दिन भूखी रहने के कारण बहुत तङ्ग हो और उस से कोई आदमी यह कहे कि खाना इस शर्त पर दिया जा सकता है कि वह उस से बुरा काम कराने पर राज़ी हो तो क्या यह बात मुम-किन मालूम नहीं होती कि वह भूके मरने की तकलीफ़

से तङ्ग आकर इस फ़ैल के करने पर मजबूरन राज़ी होजावे। ऐसी सूरत में खालिस रज़ामन्दी हुई या भूक की तकलीफ़ के मोक़े का बेजा फ़ायदा उठा कर और रोटी दे कर उस के संस्कार बिगाडे गए। जहां खालिस प्रेम बीच में होता है वहां शायद यह फ़ैल बुरा न भी होता हो। देखो जब अर्जुन इन्द्रलोक में गया और वहां अप्सरा उस पर मोहित होगई और रात को उस के पास आकर उस से अपनी इच्छा ज़ाहर की अर्जुन ने उस फ़ैल को पाप समझ कर उस से इनकार कर दिया उसने कहा यह पाप नहीं है और अगर तुम मेरी कामना पूरी न करोगे तो तुम को शराप दूंगी। अर्जुन ने जब बिलकुल इनकार किया तो उस ने शराप दिया और अर्जुन एक साल तक नपुंसक रहे। अगर इनकार दुरस्त होता तो उस की सज़ा अर्जुन को न मिलनी चाहिये थी।

(११७) एक रोज़ बाबू प्रभुदयाल जी साहब व जनाब दीवान जोगराजजी साहब और राक़म उल हरूफ़ इस पुस्तक का (लिखने वाला) कोहाट से मुक़ाम टेरी हाज़िर खिदमत मुबारिक हुवे शाम को वापसी के वक्त इजाज़त चाही तो श्री महाराज सुनकर खामोश हो गये चूंकि वक्त तंग होता था इसलिये दीवान साहब ने दुबारा तिबारा अर्ज़ किया उसका भी कोई जवाब नहीं

दिया। मगर थोड़ी देर इधर उधर की बात चीत के बाद इरशाद हुवा कि एक रोज़ हम जयपुर में एक महात्मा के पास बैठे हुवे थे उनकी यह आदत थी कि याह कोई आवे याह कोई जावे किसी से जाने या ठेहरने के लिये ज़िद नहीं करते थे। एक रोज एक साहब पधारे और कुछ देर ठेहर कर जाना चाहा तो महात्मा ने कहा ठेरो अभी जाकर क्या करोगे वोह थोडी देर तो ठहर गये मगर चूंकि उनको कोई काम जरूरी था इसलिये फिर जाने का इरादा किया महात्मा ने फिर कहा कि साहब थोडी देर तो और ठेरो। यह बात उनके खिलाफ़ आदत थी इसलिये हमने दरयाफ्त किया कि आज इनको हट करके ठेराने की क्या वजह है तो फ़रमाया कि इस शरीर पर कुछ आफ़त आने वाली है अगर यह यहां ठहर जाते तो शायद मेरे राम की कुछ मदद कर सकते। यह सुनकर वोह साहब हंस दिये और कहने लगे कि वाह महाराज भला मैं आपकी क्या मदद कर सकूंगा और चूंकि उनको कोई बहुत जरूरी काम था इसलिये ठेरे नहीं और रवाना होगये। एक खेत से गुज़र रहे थे वहां पर कड़ाव में गुड़ का रस औट रहा था और कढाई ज़मीन से मिली हुई रखी थी और उस पर चटाई ढकी हुई थी उस में गिर पड़े लोगों ने दोड़ कर निकाला मगर गुड़ बहुत गर्म था कमर तक कुल जिस्म भुबल गया। लोग बाग उठाकर महात्मा के पास लाये तो

फ़रमाया मैं क्या करूँ मैंने तो जाने से रोका था मगर इन्हों ने माना ही नहीं और फिर कुछ इलाज़ मालजा बता दिया। राक़म पुस्तक का (लिखने वाला) यह फ़रमा कर श्री महाराज तो खामोश होगये मगर चूंकि बाबु साहब की रवानगी का वक्त तंग होता था इसलिये यह साहब उठ खडे हुवे आपने भी उठकर विदा करदिया कोई सत संगी बाबु साहब को पहुंचाने दूरतक गये। बाबु साहब टम-टम पर सवार होगये टम टम रवाना होकर थोडी ही दूर गई थी कि उलट गई बाबु साहब के तो कुछ थोडी चोट लगी मगर दीवान साहब के पेर में कमर तक बहुत सख्त चोट आई यहां तक कि सवार होना मुशकिल होगया उस समय श्री महाराज के इरशाद पर खयाल हुवा इसलिये जो सत संगी पहुंचाने आये थे उनके हमारा जनाब दीवान साहब वापस हाज़िर खिदमत मुबारिक हुवे। श्री महाराज ने इलाज मालजे का फोरन बन्दोबस्त कराया और करीब बीस दिन बाद वापसी के लायक हुवे।

(११८) एक रोज़ एक बाबु साहब का लाहौर से खत आया। लिखा था कि दास के दामाद ने एम० ए० पास किया है और बडे ऊंचे खयालात का आदमी है मगर कुछ अरसे से दिमाग़ी बीमारी में बीमार होकर मकान से रवाना होगया है। इससे तबीयत बहुत बे चेन

है और अर्ज खिदमत है कि हुजूर अन्दर की निगाह से गौर फ़रमाकर उसको ऐसी तवज्जह दें कि वापस घर चला आवे या उसके पते से इस दासको कुछ इत्तला बखशे ताकि यह शरीर खुद जाकर उसको ले आवे और कुछ उसकी बीमारी वग़ैरा की भी फ़िक्र कर दीजियेगा। इसके जवाब में श्री महाराज ने लिखवादिया कि आप आँ अज़ीज़ की जुदाई से ज़्यादा हैरान व परेशान ना होवे अज़ीज मज़कूर पढ़े लिखे लायक़ आदमी हैं ऐसे लोगों के काम किसी खास काम के लिये होते हैं इस मोक़े पर आप राजा जनक के धीरज को धारन करें महाराज रामचन्द्रजी के वन गमन और जुदाई का उनको कोई सदमा नहीं हुवा था। दोयम आं अज़ीज़ के पते के बारे में आप किसी ज्योतिषी या रम्माल से दरयाफ़्त करें और इलाज मालजा के बारे में किसी डाक्टर हकीम या वैद्य से मशवरा लें क्यों कि दोनो काम इसी किस्म के लोगों के सुपर्द हुये हैं।

(११९) एक साहब दीवान जोगराजजी सकनेटोरी पर श्री महाराज जी की खास कृपा थी जिस समय दीवान साहब को उपदेश दिया उसके सात दिन बाद ही उन पर ऐसे ज़ोर की बेसुधी हुई कि वोह तीन-तीन चार-चार दिन तक बे होश पडे रहते थे आंखों से आंसू और मुँह से कफ़ जारी रहता था लोग बाग हर समय उनकी सभाल करते रहते थे।

दीवाना बाश ता ग़मेतो दीगरां खुरंन्द ।

अर्थः—पागल बना रहे ताकि दूसरे ही तेरी चिन्ता करे मगर जब वोह होश में आते तो कहते कि मुझको किसी तरह की तकलीफ़ मालूम नहीं होती और ना भूक प्यास लगती है बलकि एक ऐसा आनन्द मालूम देता है कि जिसको ज़बान बयान नहीं कर सकती। ग़र्ज़ तीन वर्ष तक उनकी यह हालत बराबर बनी रही इस बीच में दुनियां दारी का कोई काम इनसे ठीक तोर से नहीं होसकता था। इनको ध्यान जमाने के वास्ते मना कर दिया था कि तुम किसी प्रकार का ध्यान मत किया करो। एक दुफ़ा दीवान साहब ने चिट्ठी में हालात लिखकर भेजे और कुछ दरयाफ़्त किया तो जवाब लिखा दिया कि श्री कृष्ण चैतन्य आत्मा का ध्यान किया करो। कुल टेरी के सत संगीयों ने कहा कि पहले भी ध्यान करने से तुम्हारी यह दशा हुई थी और श्री महाराज ने तुमको ध्यान करने से मना भी कर दिया था मगर अब फिर मूरती का ध्यान करने को फ़रमादिया है तो दीवान साहब ने हंस कर जवाब दिया कि यह उपदेश आपके वास्ते नहीं है बलकि खास मेरे लिये है आप लोगों को इससे फ़ायदा नहीं होगा और इसका मतलब सगुण मूरती के ध्यान से जो आपने समझ रखा है नहीं है बलकि यह एक ख़ास बात है जिसको मेरा दिल तो समझ गया है मगर ज़बान में

बोलने की ताक़त नहीं है कि जो आप लोगों को समझा सकूं ।

गिरा न नैन नैन बिन बानी ।
किम शोभा यह जापै बखानी ॥

(१२०) एक रोज़ दीवान स्वामी दास जी हाज़िर खिदमत मुबारक हुए । उन के जवान उमर साहज़ादे का अन्तकाल होचुका था इस लिये सब हाज़रीन ने उन से मातमपुरसी की मगर श्री महाराज ने इस बारे में कुछ नहीं पूंछा । थोडी देर बाद बाबू प्रभू दयाल जी साहब से दरयाफ्त किया कि आप को सिकन्दर बादशाह के मरने का हाल मालूम है । उन्हों ने जवाब दिया कि किसी किताब में ऐसा पढा था कि हज़रत खिज़र ने पेशीं गोई की थी कि जब लोहे की ज़मीन और सोने का आसमान होगा उस समय तुम्हारी मौत होगी । जब सिकन्दर बीमार हुआ तो किसी लशकरी ने अपना ज़िराबक्तर उस के नीचे बिछा दिया और सोने का छत्र उस के सर पर साया के लिये कर दिया गया उस समय उस ने प्रान त्यागे । आप ने कहा शायद यह भी होगा और फ़रमाया कि जिस समय वह बीमार पडा और अन्त समय के लक्षण ज़ाहिर हुए तो चूंके सात वलायत का बादशाह था इस लिये उस ने सातों वलायत का खजाना मंगवा

कर सामने जमा करा दिया और अव्वल सातों वलायत के हकीमों को जमा कर के कहा कि अगर कोई मुझे अच्छा करदे तो यह कुल खज़ाना उस को देदूं जब सब ने जवाब साफ देदिया तो फिर नजूमियों की तरफ मुखातब होकर कहा कि अगर तुम किसी तरकीब से आसमान के तारों की मदद से मेरी जान बचा सको तो यह खज़ाना इनाम मिलेगा। मगर वह भी कुछ न कर सके तो फिर तमाम बहादुर लड़ने वाले सिपाही यों को जिन्हों ने बड़ी बड़ी लड़ाइं जीती थीं जमा कर के कहा कि अगर तुम में से कोई मुझको मोत के पन्जे से छुड़ा सके तो यह खज़ाना इनाम में पावेगा। उन्हों ने कहा कि जहां पनाह अगर कोई दुशमन हो तो उस से लड़ सकते हैं मगर मोत से तो कोई भी नहीं जीत सकता! जब सब तरफ़ से नाउम्मेदी होगई तो यह खयाल किया कि मैं शाहन्शाह सातों विलायत का और अपनी मां का अकेला बेटा हूं उस को मेरे मरने का शख्त रंज होगा, इस लिये अरस्तू से कहा कि मेरे जनाज़े के साथ इन सब को लेजाना और अपनी मां की तसल्ली के वास्ते कुल हाल लिख कर उस के पास भेजा कि सब चीज़ के मोजूद होने पर भी कोई भी मुझ को मोत से नहीं बचा सका। और यह बात ज़बानी कहला भेजा कि इस खत को पढ कर तुम कुल आदमियों को जमा करके उन की दावत करना और जिस

आदमी के रिश्तेदार या घर वाले की मौत न हुई हो उस को पहले खिलाना। उस की मां ने खत को पढकर कहा कि मेरा लड़का बडा अक़लमन्द है जो मेरी तसल्ली के वास्ते उस ने ऐसा किया, खैर उस की आखरी बात भी कर देखनी चाहिये। इस लिये तमाम आदमियों की दावत की और उन से कहा कि जिस किसी का रिश्तेदार या घर का न मरा हो वोह पहले खाएं। सब ने खाने से इनकार कर दिया और किसी ने कहा कि मेरी मां मरी है और किसी ने कहा मेरा बाप मरा है। ऐसा कोई भी नहीं निकला जिस को किसी की मौत का रंज न उठाना पडा हो। इस से उस को पूरी तसल्ली होगई और समझ गई कि यह बात अमिट है और सब के आगे आती है। मेरे लड़के का मरना कोई खास बात नहीं है। और फरमाया कि जवान आदमियों का और लड़कों का मरना और भी शिक्षा देने वाला और समझदार आदमियों के लिये इशारा है ताकि वोह समझ लें कि सिर्फ बूढे ही नहीं मरते हैं बलकि हम से बाद में जो आये थे वोह भी चल बसे मौत का कोई वक्त नहीं न मालूम कब आन खड़ी हो। इस लिए सब तरफ से दिल हटा कर परमात्मा के चरणों में चित्त को लगाना चाहिये।

(१२१) एक रोज़ एक साहब ने हाज़िर होकर

पेशावर के हिन्दू मुसलमानों के लड़ाई की बाबत बात शुरू की और कहने लगे कि मुसलमानों ने बड़ा सख्त जुल्म और लूट मार कर रखी है और हिन्दुओं को बरबाद कर दिया है उन की जिन्दगी खतरे में है। यह सुनकर श्री महाराज ने फ़रमाया कि हम को एक नक़ल याद आई कि जिस समय नादर शाह ने देहली में क़तले आम कराया और उस के बादशाही कवी को हुक्म दिया कि हमारे जीत की तारीख़ कहो तो उस ने अव्वल तो प्रार्थना की कि मेरी जान बख़शी जावे और फिर यह तारीख़ कह कर सुनाई—

शाहे ईरां रा कुजा तावे नबरदे हिन्द बुद।
ज़िश्तीये ऐमाले मा ईं सूरत नादर गिरफ़्त॥

अर्थः—ईरान के बादशाह को हिन्दुस्तान के साथ लडने की कहां ताकृत थी हमारे करमों के बुरे फल का ये असर है कि यह नादर सूरत (नादर नाम बादशाह का भी आगया और नादर के माने अजीब के भी हैं पैदा हुई।

और फ़रमाया तमाम मामले परमात्मा की मरज़ी के आधीन हैं वोह जिसको चाहता है मारता है जिसको चाहता है पैदा करता है।

अज़ ख़ुदा दां ख़िलाफ़े दुशमनो दोस्त
के दिल हर दो दर तसंरुफ़ ओस्त॥

अर्थ—दुश्मन और दोस्त की मुखालफ़त (हमारे खिलाफ़ होजाना) को परमात्मा की तरफ़ से समझना चाहिये क्यों कि इन दोनों का दिल भी उनही के आधीन है।

मारना और लूटने की तो बात ही क्या है उस के हुक्म के बग़ैर पत्ता भी नहीं हिल सकता अगर मुसलमानों का इतना बस चलता तो काबुल में हिन्दुओं का बीज भी नहीं छोड़ते और अब तो हिन्दू और मुसलमान सब ही अङ्गरेजी की प्रजा है। अगर हिन्दुओं को सर्व नाश करना ही मंजूर होता तो जिस समय मुसलमान बादशाह थे उस समय ही हिन्दुओं को जीता नहीं छोड़ते असल में यह बात थी ही नहीं जितना परमात्मा को मंजूर था होगया।

(१२२) एक रोज़ दीवान बाबु अमीरचन्द जी साहब सेवा में हाज़िर हुवे और अर्ज़ की कि जनाब खांन साहब टेरी की बीनाई बिलकुल जाती रही है बहुत कुछ इलाज मालजा किया कुछ लाभ नहीं हुवा अब कुछ दिनों से फ़क़ीरों की तरफ़ का ख़याल होगया है। केई मुसलमान फ़कीरों को बुलाया और धन दोलत से उनकी सेवा भी की। लेकिन कुछ असर ज़ाहिर नहीं हुवा केई फ़क़ीर आपकी तरफ़ ईशारा कर गये हैं कि आँ हजूर के आशीर्वाद से मनोकामना पूरी हो सकती है इसलिये आप कुछ दुआ फ़रमावें। श्री महाराज ने फ़रमाया

हमको याद है कि आगरे में एक हलवाई की दुकान पर दो आदमी मिठाई खरीदने आये एक मुसलमानों के से कपड़े पहने था दूसरे के हिन्दुओं के से कपड़े थे। पहले मुसलमान साहब ने क़रीब बारा तेरा आने की मिठाई तुलवाई और बाक़ी पैसे हलवाई से मांगे जब हलवाई ने रुप्या मांगा तो उससे कहा कि हमतो रुप्या पहले ही देचुके हैं इस बात पर चिल्लानेकी पुकार मची दस बीस आदमी जमा होगये तो वोह हिन्दु साहब बोले कि लालाजी लड़ाई झगड़ा तो पीछे करना पहले मुझको मिठाई देदो नहीं तो मेरा रुप्या वापस दो मुझको देर होती है यह सुनकर हलवाई बोला कि रुप्या कैसा। तुम ने कब दिया था। अब क्या था चट मुसलमान बोल उठे बेईमान मेरा रुप्या लेकर भूलगया अब लाला जी के रुप्ये से भी इनकार करता है अभी मेरे सामने इन्हों ने रुप्या दिया है और तू इनकार करता है फिर वोह लाला बोल उठे कि सेठजी दुकानदार ऐसी चाल बाज़ी से तो इतने अमीर हो जाते हैं अभी हाल आप का रुपा लेकर मुकर गया अब मेरे रुपे से भी मुकरता है जब एक दूसरे की गवाही देने लगा तब तो हलवाई सिटपटाया और जो लोग जमा हुवे थे उन्हों ने भी हलवाई को धमकाया और झूंट लाया। गरीब से कुछ बन नहीं पड़ी। हिन्दु और मुसलमान दोनों को एक एक रुपया देकर बला सर से टाली सो दीवाणा साहब

मुसलमान तो अपने हक़ लेगये अब हमको भी हमारा हिस्सा दिलवाने के लिये लेजाना चाहते हो तो दूसरी बात है जनाब खाँ साहब इतना नहीं सोचते कि जो लोग रुपे पैसे के लालची हों उनसे यह काम कब निकल सकता है और जो यह काम कर सकते हैं उनको खाँ साहब के धन दौलत की परवाह क्या है वोह धन दौलत से यह काम निकलवाना चाहते हैं तो यह कभी मुमकिन नज़र नहीं आता अलबत्ता उनकी आधीनता व प्रार्थना से किसी मर्द खुदा (पहुंचे हुवे साधु को) उनकी हालत पर रहम आजाये और वोह हाथ डालदें तो बात दूसरी है। लेकिन अगर वोह अपनी राज के घमराड से इस काम को पूरा कराना चाहते हों तो यह उनका झूटा खयाल है।

(१२३) एक रोज़ जनाब राय साहब दीवाण ईश्वरदास साहब बैरिस्टर श्री महाराज की सेवा में हाज़िर हुवे। बाबु साहब के छोटे भाई दिक़ की बीमारी से मर चुके थे उसकी बाबत ज़िकर करने लगे। और अर्ज़ किया कि महाराज जो मैंने हज़ारों तरह की दवाईयां दीं इलाज मालजे कराये उनका कुछ भी असर नहीं हुवा क्या दवा वग़ैरा में कुछ भी असर नहीं होता। श्री महाराज ने फ़रमाया कि हमको एक बात याद

आई। एक हकीम साहब इलाज़ मालजे में वड़ा कमाल था याने जिसका इलाज करते आराम हो जाता और मरीज़ नहीं मरता ज़रूर अच्छा हो जाता। तिब की (यूनानी वैद्यक की) किताबों के सत्तर एजंट उनके साथ रहते थे। एक दफ़ा एक अद्भुत आदमी से भेट हुई उन्हों ने उससे पूछा कि तुम कोन हो तो उसने जवाब दिया कि मैं मोत का फ़रिशता हूं। फिर हकीम ने पूछा कि तुम्हारा क्या काम है और कहां जाते हो तो जवाब दिया कि लोगों की जान निकाल लेना मेरा काम है और आज फ़लां आदमी की जान लेना है। हकीम जी ने पूछा कि उसकी जान कैसे लोगे तो जवाब दिया कि उस आदमी के पेट में ऐसा दर्द पैदा कर दूंगा कि जिस से वोह अच्छा ना हो सकेगा। वोह तो यह कह कर ग़ायब होगया उधर हकीम साहब ने भी दवा दारू का बकस संभाला और उस आदमी के पास पहुंचे और बताये हुए वक्त पर जब उसके पेट में दर्द होने लगा तो उस रोग की ख़ास और आजमाई हुई दवा देना शरू किया। गोली, अर्क़, चूरण, जोशाँदा खेशाँदा माजून लडक सब ही कुछ दिये ख़ाक असर नहीं हुवा।

मरज़ बढ़ता गया दवा करी आख़िर दो चार घन्टे बहुत दर्द से तडपकर बीमार ने जान देदी। अब हकीम

साहब घबराये और सोचने लगे कि जब मौत का आना अटल है तो और कोई दवा दारू अपना असर नहीं कर सकती तो फिर हम ईलाज़ किसका करें और यह किताबें और दवा लादे लादे क्यों मारे मारे फिरें। इसलिये सब सामान को लेकर एक दरया के किनारे पहुंचे और पक्का ईरादा कर लिया कि सब को पानी में डुबोदें कि उसी समय वोह ही अजीब शकल सूरत वाला आदमी सामने आमोजूद हुवा और कहने लगा कि हकीम साहब क्या पागल पन करते हो हकीम साहब ने जवाब दीया कि जब ईनसे कुछ फ़ायदा नहीं होता न ईनका असर ज़ाहिर होता है तो ईनके रखने से क्या लाभ है। फिर ईन को डुबो क्यों नादें। मौत के फरिश्तेने कहा कि यह बात नहीं है कि असर ना हो परमात्मा ने जिस चीज़ में जो गुण रखा है वोह गुण ज़रूर दिखलाती है। मगर उसी समय जब कि गुण ज़ाहिर करने का मोका मिले और जितनी दवा हकीम ने बीमार को दी थी वोह सब ज्यों की त्यों दिखाकर कहा कि जिस समय रोगी के गले से यह दवा उतरती थी मैं यह सब लेता जाता था तो बताओ कि गुण किसका ज़ाहिर होता। हकीम साहब को समझा बुझाकर उनके ईरादे से रोका। इसी तरह पर जवाब दीया साहब असर तो हर चीज़ का होता है मगर जब मौत का समय आता है तो उस समय दवा भी रोग

की ग़िज़ा बन जाती है और बजाये रोगी को ताक़त पहुं चाने के रोग को ताक़त पहुंचाती है ।

(१२४) एक रोज़ श्री बाबा पिरीतनाथ जी महाराज से फरमाया कि कल हम आपके स्थान पर आवेंगे जनाब बाबा साहब ने अर्ज़ किया कि हमारे गरू श्री पीर पश- चमनाथजी म्हाराज आपकी महमा को नहीं जानते हैं इसलिये आपसे जिस भाव से मिलना चाहिये नहीं मिलते इसलिये आप वहां नहीं पधारे आपने जवाब दिया कि हमारा वहां जाना ज़रूरी है पीर साहब से मिलना तो ज़ाहिरी बात है वरना वास्तव में गद्दी और समाधियों के दरशन लाजमी है फकीरों की गद्दी में सिर्फ मोजूदा गद्दी नशीन को देखकर ही अंदाज़ा नहीं लगाना चा- हिये बलके इससे सात खानदान तक देखना चाहिये कि कोई ना कोई बड़ा और महात्मा ज़रूर गद्दी नशीन होंगे जिन बडों ने शरीर त्याग दिया है उनको मुरदा ना समझना चाहिये उनकी पाक रूह हमेशा जिन्दा है और कोहाट में जाकर उनके दर्शन को न जाने से इन कार की बू आती है और नियम फकीरी के खिलाफ है दूसरे वो मोजूदा पीर साहब की निसबत कुछ बुरा खयाल दिल में लाने से उन बडों की रूह को बुरा मा- लूम होता है और एक या दो पुस्त ( पीडी ) में कोई महात्मा या बडे गुजरे हैं तो ऐसे खयाल का फोरन न-

तीज़ा ( फल ) मिलता है एक वकूआ ( एक बात ) हम को याद है कि एक खानदान में बहुत अच्छे अच्छे महात्मा थे मगर चार पीढी से कुछ खैर खैरात के काम में कमी होगई थी। जिस वक्त मोजूदा पीर साहब का शरीर वरता और उन की जगह एक अच्छे महात्मा फ़कीरी के भेद को जानने वाले गरू की गद्दी पर बैठे उस वकत एक फकीर ने जो खुद बहुत अच्छे थे मगर फकीरी के भेदों से जानकार नहीं थे यह कह दिया कि यह सख्स गद्दी पर बैठने लायक़ नहीं है यह सुनकर तो नये गरू साहब को गुस्सा आया और बोले कि तु क्या कुत्ते की तरह भों भों करता है। तू कुत्ते की तरह जहांय जहांय करके मरेगा। ताना देने वाले फकीर साहब की बिलकुल वोह ही हालत है और मोत वाली वीमारी में वीमार होकर कुत्ता की तरह भों भों कर जान दी।

(१२५) एक रोज नरथाव से बहुत से आदमी श्री महाराज से मिलने को खुशकी रास्ते से रवाना हुवे एक आदमी सुन्दर दास नामी पहाड़ी रास्ते से अलग खच्चर पर चल पड़ा उसके पास रुपया भी बहुत था रास्ते में इलाक़ ग़ैर के तीन सरहदी डाकूओं ने आन पकड़े और खच्चर पकड़ कर उसको नीचे उतार लिया उस आदमी ने दिल में खयाल किया कि मैं तो एक फ़क़ीर के दर्शनों को जाता हूं ऐसे नेक काम में मुझको ऐसी

तकलीफ का सामना क्यों पड़ा । यह सोचकर वोह एक दम से घर भागा और धाड़ेतियों ने पीछा किया थोड़ी दूर गया था कि सामने से तीन आदमी आते हुवे दिखाई दिये उन्हों ने उसको रोक कर पूछा कि क्यों भागता हैं उसने जवाब दिया कि डाकू है उन्हों ने कहा ठेरा रहे बता कहां है वोह उसको साथ लेकर पीछे फिरे डाकू उनको देखकर भाग गये। तीनों आदमीयों ने खच्चर पकड़ कर सुन्दर दासको सवार करादिया जब वोह सवार होगया तो उस ने चाहा कि इनका नाम पूछूं कि कोन है और इनकी मदद का धन्यवाद दूं मगर पीछे फिर कर देखता है तो वोह तीनों आदमी गायब है वोह उनकी इमदाद गायबाना (यानी भगवान की तरफ से मदद) समझ कर रवाना हो पड़ा और एक गांव शकर खेल में आकर अपने कुल साथियों से मिलकर अपना यह हाल कहा वोह सब भी आश्चर्य में आगये कि आज तक सर हद्दी डाकुओं के हाथ से भाग कर बचना मुशकिल बात है बलके ना मुमकिन साबित हुवा है यह बातें हो रही थीं कि उन लोगों में से एकने अपना तमंचा निकाल कर खोला ता कि कारतूस निकाल ले और खाली कर के रखदे मगर खोलते में वोह चलगया और सामने तीन सख्स बैठ थे अवल दो की टांगों से गोली निकल गई और तीसरे आदमी के पेर के अंगूठे के पास जाकर गोली ज़मीन में समा गई किसी को ज-

खमी न किया उन लोगों ने इस बात को भी यह ही समझा कि हमारे गुरू महाराज की कृपा से इससे भी बच गये।

* दोहा *

इन्गर सिन्दूर लेके त्रिया पूजित भींत।
सुफल हुई मन कामना तुलसी प्रेम प्रतीत॥

(१२६) एक सुनार टेरी का रहने वाला आवारा चलन का आदमी था कुछ समय बाद मुसलमानी मज़हब में शामिल होगया मगर आदत बुरी कहां जाती थी।

* शेर *

अगर ज़ेदस्त जफ़ा बरमलक रवद बद खू।
ज़ेदस्ते खूय बदे खेश दर बला बाशद॥

अर्थ—अगर बुरे स्वभाव वाले मनुष्य को कोई ज़ालिम बादशाह सतावे तो उसका खास कारण यह होता है कि वो अपने बुरे स्वभाव की वजह से बला में फँसता है।

एक दिन लाला बेलीराम के मकान में चोरी की नियत से घुस आया जिस कोठे में माल असबाब रखा

था उसमें अन्दाजन १५–२० सत संगी बैठे सूरत शब्द का ध्यान कर रहे थे। एक साधु दरवाजे के पास बैठा था उसने उस चोर को खड़ा देख कर समझा कि कोई सत संगी भजन करने को उठा है लिहाजा उससे कहा कि खड़ा क्यों है अन्दर आजा चोर को आश्चर्य हुवा कि यह क्या बात है कि चोर को अन्दर बुलाते हैं इसी सोच विचार में दरवाजे के पास खड़ा था कि सब सत संगी ध्यान से फारिग होकर एक दम सुगल यक ज़रबी में मशगूल हुवे इतने आदमियों की एक साथ हंग की जोर की आवाज़ सुनकर चोर घबरागया और डर कर भागा और घर पर जाकर अपने साथियों से कहने लगा कि फलां मकान में तो बलाये रहती हैं इस डर से बुखार चढ़ आया जब हालत खराब हुई तो उसकी चर्चा आम आदमियों में फैलगई इस खयाल से कि डर से मर ना जावे उसको बहुत तसल्ली दिलासा दी गई और भजन वगैरा करने का हाल बतलाकर उसका डर दूर किया बड़ी मुशकिल से बहुत दिनों बाद अच्छा हुवा।

(१२७) एक भगत की स्त्री अपने पति की तरफ से बहुत संदेह रखती थी। मगर भगत जी उपदेश और कथा या सत संग के वास्ते भी किसी के

जा बैठते या वारतालाप करते तो कलेश करती थी श्री महाराज ने इस सौभाग्यवती को कई मरतबा समझाया मगर—

खुये बद दर तबीयते के नसस्त
न रवद जुज़ बमर्ग उ अस दस्त

अर्थ–बुरी आदत जिस के स्वभाव में पड़ गई वोह उसके मरने पर ही छूटती है लेकिन उस के खयाल में तबदीली नहीं हुई। एक रात को भगत जी भजन करने को उठे तो आप भी उनके पास जाकर बैठी उनके कपड़े का पल्ला अपने पैर तले दबा लिया के कहीं इधर उधर ना चले जावे। जब खुद भजन में लगी तो प्रकाश के साथ एक फ़कीर की सूरत नज़र आई जिसने इस औरत के मुह पर मुक्का मारा उसकी चोट से चिल्ला कर बेहोश होगई सब आदमियों ने भजन से उठकर उसको देखा मुह से झाग निकल रहे थे पानी वगैरा छिड़का तो होश में आई तो सब हाल बयान किया कि एक रोडे बाबा की सूरत नज़र आई थी और उसने मारा है। दूसरे दिन श्री महाराज के हज़ूर में मामला पेश हुआ तो उस औरत को फिर समझाया कि देखो भजन में विघ्न डालने का नतीजा अच्छा नहीं होता तुमने कथा वारता में सुना है कि रावण कंस हिरनाकुश

वगैरा जो भजन में लगतों का हर्ज किया करते थे उनकी क्या गत हुई अगर तुम अपने खयाल को ना बदलोगी तो उमर भर तकलीफ में रहोगी।

(१२८) एक रोज़ एक ग़रीब सत संगी को रुपयों की जरूरत थी श्री महाराज से प्रार्थना की गई सो आपने उनका नाम तो जाहिर नहीं किया बलकि चन्द लोगों से कहा कि बाई योगा नन्द के खर्च के वास्ते रुपयों की जरूरत है कुछ चन्दा जमा करलिया जावे बहुत आदमियों ने खुशी खुशी अपनी सामरथ के बमुजिब चन्दा देदिया। एक साहब लाला ग्यानचंद हलवाई ने मांगने पर भी चन्दा देने से इनकार किया बलके बहुत से फिजूल एतराज़ उठाये रातको उसका ज़िकर और सिकायत श्री महाराज के सामने चन्द साहबों ने की यह मनुष्य बड़ा ही ढीट है उसको सजा मिलनी चाहिये आपकी ज़बान से निकला कि जैसा करेगा वैसा भरेगा। दूसरे दिन लाला ग्यानचन्द कुछ सामान खरीदने बाहर जिले में गये और वहां पहुंचकर बहुत बीमार होगये बीमारी का तार घर पहुंचना था कि लोगों ने हल्ला मचा दिया कि यह उस दिन की बातों का फल है उसका भतीजा लाला करमचन्द वगैरा उसके पास दौड़े गये रिस्तेदारों और अज़ीज़ों को जब यह

हाल मालूम हुवा तो श्री महाराज की सेवा में हाज़िर होकर माफी मांगने लगे। श्री महाराज ने फरमाया कि देखो हमने कितनी दफा इन लोगों से कहा है कि हमारे पास कभी किसी की सिकायत ना किया करो बलके फकीरों के पास ऐसी बात करना दुरस्त नहीं ना मालूम कोई किस खयाल में बेठा हो और क्या मोका हो मगर इन लोगों के समझ में बात नहीं आती। जब बहुत रोना पीटना होने लगा तो आपने एक सत संगी से फ़रमाया कि वोह कोई मरता थोड़े ही हैं लाला ग्यानचन्द जहां पड़े थे वहां इस पुस्तक के लिखने वाले मोजूद थे यह हालत होगई थी कि चारपाई पर डाल कर उनको सत संग के मकान कृष्णा द्वारा में लाकर रखा था। उनके जीते रहने की कोई आशा नहीं थी मगर मालिक आराम करने वाला है तीन चार दिन में ही टम टम में लेटकर घर वापस जाने के लायक़ होगये।

(१२६) एक रोज़. पंडित भगवानदास जी नरयाव के रहने वाले श्री महाराज के दर्शनों को हाजिर हुवे और बड़ी भगती और वैराग की हालत में आंसू भर कर प्रार्थना की महाराज मेरा उद्धार तो सम्भव नहीं है। मेने ऐसे ऐसे पाप किये हैं कि उनका बयान नहीं होसकता। लाखों जीव सिकार में मारे

और क्या-क्या अर्ज़ करूं जब उनका विचार करता हूं तो निराश हो जाता हूं। श्री महाराज ने फ़रमाया कि अब आप उनका विचार बिलकुल ना करें और भजन में लगे रहें आपका ज़रूर उद्धार होगा। देखें बाल्मीक जी भील थे जानवर तो क्या उन्हों ने लाखों आदमियों का वध किया रामा रामा के बजाये मारा मारा जपा फिर भी ऐसे बड़े महात्मा हुवे कि पहले से रामायण लिखकर रखदी और श्री रामचन्द्र जी की स्त्री श्री सीता जी उनका पानी भरती थीं इस में आपका तो ब्राह्मण का शरीर है अगर आप भजन करेंगे तो आपकी मुक्ती में क्या शक है। श्रीकृष्ण महाराज ने भी फरमाया है कि शूद्र और वैश्य सब का उद्धार होता है तो हे अर्जुन तू तो शक्ति है तेरी मुक्ती और उद्धार में क्या शक हैं इसलिये अपने भजन के काम में लगे रहो धीरे धीरे सब हो रहेगा।

(१३०) एक रोज़ श्री महाराज टरी पधारे अरसा तीन रोज़ का गुज़र गया मगर बाबा सरूपानन्द जी दर्शनों को नहीं आये मालूम हुआ कि उन्हों ने यह प्रण किया है कि मलीन यानी ना पाक मन लेकर गुरू महाराज के दर्शन न करेंगे। जब तक हमारा मन साफ़ ना होगा सामने न जायेंगे। श्री महाराज तो इस बात को सुनकर चुप होगये मगर लोगों ने साधु जी से कहा

कि आप बड़े अभागी हैं कि गुरू महाराज पधारे हैं और आप दर्शन नहीं करते उनके समझाने बुझाने से साधु जी चोथे दिन हाज़िर हुवे। सर से पगड़ी उतार कर गले में गाँठ बांधली और एक तिनका मुँह में दबा सामने आये और हाथ जोड़ कर अर्ज़ी की कि मुझसे बड़ा अपराध हुवा माफ़ करें। श्री महाराज ने पूछा कि भाई क्या अपराध हुवा। उन्हों ने अर्ज़ किया कि मैं आपके दर्शनो को तीन दिन तक हाज़िर नहीं हुवा। आपने फ़रमाया कि आपने जो प्रण किया था उसको क्यों तोड़ दिया। अगर आप साबित कदम रहते तो क्या ताज्जुब था कि मालिक आपकी मनोकामना पूरी कर देता। मगर खैर यह बात मंजूर ना होगी इसलिये आप टल गये।

(१३१) एक रोज़ सरूपानन्द जी ने अर्ज़ किया कि श्री महाराज जब मैं आपको देखता हूं तो मुझको ऐसी भावना उठती है जैसे श्रीरामचन्द्र जी को देखकर रावण को उठा करती थी और उसको गुस्सा आता था मगर आप श्री रामचन्द्रजी की तरह जल्दी से मेरा बेड़ा पार नहीं करते। आपने फ़रमाया कि श्री रामचन्द्रजी महाराज को तो रावण से यह डर था कि उनकी स्त्री सीता जी को हर लेगया है कहीं मार ना डाले या आबरू न बिगाड़ दे। मेरे तो कोई सीताजी भी नहीं है

जिसको तुम डरो या जिसका मुझको डर हो। रही रावण की बात सो वोह ऐसा पक्का आदमी था कि श्री रामचन्द्रजी को अवतार जानकर भी खम ठोक कर लड़ने को मोजूद होगया और ज़राभी किसी बात का डर नहीं किया। एक एक रिश्तेदार और प्यारे बेटे पोतों को चुन-चुन कर मरवादिया। और मरते दम तक अपने प्रण से न टला। तुम्हारा यह हाल है की अभी अगर ज़रा भी मैं तुम पर क्रोध करूँ तो तुम डर से कांप उठो अपनी बुराई भलाई का विचार करके डर के मारे पीले पड़ जावो। फिर रावण की भावना रखकर तुम मुझ से कैसे लाभ उठा सकते हो। अलबत्ता अगर उसकी तरह तुम भी पक्के बन जावो तो दूसरी बात है मगर यह काम भगवान के आधीन है। कोशिश से मुशकिल है। तुम उस काम के वास्ते पैदा ही नहीं हुवे।

हर कसे रा बहर कारे साख्तन्द।
मेले उ अन्दर दिलश अन्दाख्तन्द॥

अर्थः—परमात्मा ने हर आदमी को किसी खास कार्य के लिये पैदा किया है और उस काम के करने की इच्छा उस के दिल में डाल दी है।

(१३२) एक रोज़ एक साहब सत सङ्ग में हाज़िर हुवे। पहले तो वेदान्त के बहुत से सिद्धान्त बयान किये

फिर भगती और प्रेम भजन और शब्द बड़े जोर शोर से गाये और बहुत प्रेम ज़ाहिर किया ज्ञान की भी बहुत सी मिसालें दीं और फिर एक सत सङ्गी की तरफ़ जो कोने में बैठे थे देख कर कहा कि आप भी कुछ कहो मगर वह चुप ही रहे उन्होंने बहुत हट की मगर वह तो चुप ही बैठे रहे लेकिन श्री महाराज ने फ़रमाया कि लोहा और नमक दोनों दरया में पड़े थे लोहा बार बार यह कहता था कि गले जाते हैं गले जाते हैं यह सुन कर नमक बोला कि जो गलते हैं सो बोलते नहीं।

दर आलमे फ़क्र बे निशानी ओला।
दर आलमे इश्क़ बे ज़ुबानी ओला॥

अर्थः—साधू होने की हालत में वेपते और बे निशानी के बना रहना ही अच्छा है। प्रेम या इश्क़ की हालत में बे ज़ुबान या गूंगा बना रहना अच्छा है।

जिन्हों को इश्क़ सादिक़ है वोह कब फ़रयाद करते हैं।
लबों पर म्होर खामोशी दिलों में याद करते हैं॥

(१३३) एक रोज जिकर होरहा था कि श्री बावा प्रीत नाथ जी कोहाट के सत सङ्ग के मुखिया हैं मगर सत सङ्ग के कामों में कुछ कोशिश और महनत नहीं करते श्री महाराज ने सुन कर फ़रमाया कि किसी शहर

र्का राजा मरगया था लोगों ने सलाह की किसी धर्मात्मा साधू को राजा बनाना चाहिये और एक साधू को लाकर गद्दी पर बिठाल दिया उस ने गद्दी के पास ही खूंटी पर अपनी झोली टांक दी तब राज काज के विषय में पूंछा गया तो फ़रमाया कि खूब यज्ञ और हवन दान पुन्य करो और मौज उडावो । उसी तरह सब लोग करने लगे राज कार्य में खराबी फैल गई। यह हाल सुन कर एक राजा फ़ौज लेकर चढ़ आये लोगों ने साधू राजा को यह हाल सुनाया और बन्दोबस्त के वास्ते हुकम चाहा तो उन से राजा ने फ़रमाया कि वो ही कार्य किये जावो और कुछ डरो मत । जब फ़ौज शहर के पास पहोंच गई तब भी राजा को वोही हाल रहा। अन्त में दुशमन राजमन्दिर में पहोंच गया उस समय साधू राजा ने पूंछा कि किस तरह से आये हो तो उस ने कहा राज लूंगा। यह सुन कर गद्दी से उतर पड़े और फ़रमाया कि तुम अपना राज लो हमारी झोली तो यह सामने टकी है यह कह कर झोली उठा गले में डाल ली। वोह ही हाल बाबा प्रीतनाथ जी का है उन की झोली सलामत रहे उन को कोशिश और महनत करने से और इन्तज़ामी मामले से क्या पड़ी है ।

(१३४) एक रोज़ जनाब बाबू चुन्नी लाल

साहिब जिन्हों ने सरकारी नोकरी से पैनशन पाने पर बज़ाज़ी की दुकान खोल ली थी। हाज़िर खिदमत हुवे और अर्ज़ किया कि महाराज दुकानदारी के काम में मैंने अब तक सत्य से काम लिया लेकिन बराबर टोटा और घाटा खाता रहा हूं कारण यह है कि ग्राहक से एक बात सच्ची-सच्ची कह देता हूं उस पर वोह जमता नहीं और मेरा दिल बात बदलने को चाहता नहीं यह सुनकर आपने फ़रमाया कि अगर इस तरह आप एक बात कहते रहें और यह कुल सामान नहीं बिका और रखा-रखा पुराना होगया तो क्या इसी दाम पर जो आप कह रहे हैं आगे कभी बिकने की उम्मेद हो सकती है। बहर हाल जब पुराना होगया तो दाम में ज़रूर कमी करनी होगी उस वक़्त आपकी यह बात बदलेगी या नहीं फिर जब बात एक ना एक दिन बदलनी ज़रूर है तो फिर टोटा खाकर क्यों बदली जावे। पहले ही से संभलना चाहिये जो वोह बुरा दिन देखने में ना आवे। यह काम कोई मुलाज़मत तो नहीं है जिस में तनखा मिलती है इस लिये रिशवत लेना हराम (यानी पाप) समझा गया है। यह तो व्योपार है- मिसल मशहूर है कि यह तो दुकानदारी है दुकानदारी में एक बात कैसी, जैसा ग्राहक होता है उस से वैसी बात की जाती है। अगर कोई सच मानने वाला हो तो उस से ज़रूर सच सच कहना चाहिये मगर जब आम आदमियों का यह पक्का

खयाल बंध रहा है कि दुकान्दारों की बात भरोसे के क़ाबिल नहीं होती उन की बही बीजक फ़रज़ी होते हैं तो फिर ऐसे आदमी को बीजक दिखलाने और एक बात कहने से क्या लाभ हो सकता है दुकान्दारी में दुकान्दारी का व्यवहार रखना चाहिये जैसा काम जैसा ढंग। यह बात कही जाती है कि किसी राजा के पास एक स्वांगिया साधू का भेप बना कर गया और उस को बहुत आसन वग़ैरा और साधुओं के रङ्ग ढंग दिखलाये। राजा ने खुश होकर साधू समझ कर एक क़ीमती मोतियों की माला देनी चाही मगर उस ने लेना स्वीकार नहीं किया तब राजा ने उस से भी ज्यादा क़ीमत की मोतियों की माला मंगवा कर देनी चाही उस ने वोह भी नहीं ली तब राजा ने यह विचार कर कि यह साधू है दुनियां के दोलत की इच्छा नहीं है चुप हो गया जब वोह आदमी आसन वग़ैरा दिखलाचुका तो उठ कर खड़ा हुवा और राजा को मुजरा करके अर्ज़ की हजूर मेरा ईनाम मिल जावे वो राजा ने फ़रमाया की हमने तुम को ऐसी क़ीमती मात्रा देनी चाही तब तो तुम ने नहीं ली अब क्या इनाम चाहते हो उस ने जवाब दिया कि मैं तो साधू नहीं हूं मैं तो स्वांगी या (बहुरूपिया) हूं। उस वक़्त साधू का स्वांग पूरा उतारना था अगर माला लेलेता तो मेरा स्वांग बिगड़ जाता क्यों कि फ़क़ीर के यह माने हैं कि (फ़) से फ़ाक़ा

(क़) से क़नाअत यानी सबर और (य) से याद ईलाही यानी भजन और (र) से रआज़त याने साधन। फिर साधू बन कर दोलत के लिये हाथ फैलाना दुरस्त नहीं था अब स्वांग पूरा हो गया इस लिये आने दो आना हज़ार दो हज़ार रुपये जो हजूर की मरज़ी हो दे दीजिये इस लिये जब आप मुलाज़िम थे आप ने रिशवत नहीं ली और अपने मुलाज़मत के स्वांग को पूरा किया अब दुकानदारी के स्वांग को पूरा करना चाहिये और दुकान का किराया खर्च, पुन्य, दान, रुपये का सूद, छीजन, बट्टा, सामान जो बहुत दिन तक पड़ा रहा उस की परता सब फैलाकर दाम चुकने और निर्ख क़ायम करना चाहिये।

(१३५) एक रोज़ इरशाद हुआ कि ज़िले काला बाग़ में एक पीर साहब रहते थे बहुत दिनों से उन की सेवा में एक मुलाज़िम रहता था और बड़े सच्चे दिल से उन की सेवा इस लिये करता था कि उन के सतसङ्ग से कुछ लाभ उठावे मगर इस बीच में कोई असर उन की सङ्गत का ज़ाहिर नहीं हुवा। एक दिन पीर साहब किसी काम को बाहर चले गये थे और वोह नोकर पीर साहब के पलंग पर जहां मसनद लगी

हुई थी बैठ गया और पीर साहब के लड़के जो छोटी उमर के थे पलंग के नीचे ज़मीन पर खेल रहे थे कि पीर साहब लौट कर आगये नोकर को पलंग पर बैठा और अपने बच्चों को ज़मीन पर खेलते देख कर नोकर पर बहुत खफ़ा हो कर बोले कि तू बड़ा बद तमीज़ है मेरे बच्चे ज़मीन पर नीचे खेल रहे हैं और तू पलंग पर चढ़ कर बैठा है। नोकर ने अर्ज की हज़रत मुझ को यह बात मालूम नहीं थी कि आप के पास इतने दिन रह कर भी मैं आप की संगत से आपके छोटे बच्चों के बराबर भी नहीं हुवा।

(१३६) एक रोज़ जनाब राय साहब दीवाण मथुरादास जी बेरिस्टर क़रीब दो बजे रातको श्री महाराज की सेवा में हाज़िर हुवे थोड़ी देर बेठने पर श्री महाराज ने फ़रमाया कि किसी बादशाह का हिन्दु वज़ीर शराब पिया करता था। तमाम अहलकारों और मोलवियों ने बादशाह से शिकायत की यह आदमी इतनी बड़ी पदवी पर हैं और कुल राज्य का काम इसके हाथ में है यह खराब चीज़ का इस्तेमाल करता है इसका बन्दोबस्त कीजिये। बादशाह ने फ़रमाया कि हम विचार करेंगे और एक रातको छुपकर वज़ीर के मकान पर बेठ गया वज़ीर साहब ने वक़्त मामूल (यानी बंधे हुवे वक़्त पर) बोतल और प्याला मंगवाकर एक प्याला पिया और

कहा कि इससे तमाम दिन के काम काज की थकान दूर होगई। फिर दूसरा प्याला पीकर बोला जिस कदर मामले मुकद्द में राज्य मे है अब वोह मुझे सूझने लगे और उनकी समझ आने लगी। थोड़ी देर बाद तीसरा प्याला पीकर बोला अब मेरे तमाम शक दूर होगये मेरी अक़ल रोशन होगई। उसके पीछे चोथा प्याला भरा मगर यह बोला कि अब यह अकल को बिगाड़ देगा और यह कहकर प्याला फेंक दिया। बादशाह यह हाल देखकर मन में सोचने लगा कि यह आदमी बड़ा अक़ल मन्द है इसको अपने वासनाओं पर बड़ा अधिकार है इसका कुल काम इसके आधीन है और उसी तरह छुपकर वापस चला आया और तमाम शिकायत करने वालों को समझा दिया कि इसका खाना पीना दारू व दवा के तोर पर ही यह अपने वासनाओं का गुलाम नहीं है तुम को ऐसे आदमी के खिलाफ़ शिकायत करना वाजिब नहीं था।

(१३७) एक दिन इरशाद हुआ कि जनाब दीवाण जोगराज जी साहब को एक आदमी के ज़ाती हालात मालूम थे और एक दूसरा आदमी उस आदमी के हालात की बाबत तलाश व दरयाफ्त करना चाहता था। उसने जनाब दीवाण साहब की एक दो रोज़ दाव-

त की और खूब खिला पिला कर कुल भेद की बातें उस आदमी की निसबत उन से दरयाफ़्त करी। हम को यह तमाम हाल मालूम होगया। जब दीवाण साहब हम से मिलने आये तो हमने दीवाण साहब से कहा कि हम को एक सदर आला साहब (ऊंची पदवी का अफ़सर) बहुत अज़ीज़ रखते थे यहां तक कि हर समय अपने पास रखना और सवारी वगैरा में बिठलाकर साथ लेजाना वगैरा हमारा बड़ा आदर करते और हम को बहुत मानते थे। उन की यह भी आदत थी जितने मुकदमे और डिगरियों का फैसला देते उसको पहले हमको सुना लेते थे और उसमें हमारी राय लेलिया करते थे चूंकि बड़े रईस और जागीरदारों के मुकदमे होते थे। वोह तरह तरह की कोशिश करते थे कि किसी तरह से सदर आला साहब से अपनी मरज़ी के मुताबिक़ फैसला करा सकें मगर यह बात नामुमकिन थी क्यों कि सदर आला साहब रिशवत बिलकुल नहीं लेते थे और बड़े बेलाग आदमी थे। जब अकसर आदमियों को यह हाल मालूम होगया कि वोह कुल काम हमसे पूछकर और सलाह लेकर करते हैं तो उन लोगोंने हमारी सिफारिश लेने के लिये तरह तरह की कोशिश की। अगर उस वकत मे हम चाहते तो लाखों रुपये रिशवत मे जमा कर लेते

और लोगों का काम हस्ब उन की मरज़ी के सदर आला साहब से करा देते क्यों कि वोह हमारे बडे मोतक़िद थे और हम पर उन का बडा विश्वास था और कुल काग़-जात हमारी निगाह से गुजरते थे मगर हमने कभी उन से किसी आदमी की निसबत ना तो सिफारिश की और ना किसी का भेद उन पर ज़ाहिर किया ना उनका भेद और मामला मुकदमा और डिगरियों का फैसला किसी को बतलाया और फिर दीवाण जोगराज जी साहब से फरमाया कि आपने सिर्फ कुछ खाने पीने के एवज ही अपने बुज़ुरग और महरबानों का कुल हाल और भेद दूसरे आदमी पर जाहिर कर दिया इससे यह नतीजा निकलता है कि जो आप एक रियासत के दीवाण हैं लेकिन आप राजदारी (यानी भेद का जानने वाला) के लायक नहीं और आप जैसे ओहदे दार को राजदारी लाज़मी है वरना राज के प्रबन्ध में बडी गड़ बड होने का डर है ।

(१३८) एक रोज इरशाद हुआ कि हमारे बहुत से शिष्य होगये हैं मगर यह गुरू व शिष्य एक किसम की दुकानदारी है जब तक उनकी हां में हां मिलाते रहो उस वक्त तक सब ताल्लुक़ है अगर आज ही सच्ची बात कह दी जावे तो सब छोड़ छाड़ कर भाग जावें मगर यह खयाल है कि—

"झूट-मुट खेले सच मुच होवे ।
सच मुच खेले बिरला कोय ॥"

अगर यह लोग इसी तरह से भजन और ध्यान में लगे रहें तो रफता रफता सचाई की तरफ झुक जावेंगे और अगर अभी से उनसे सच्ची बात कही जावे और भेद फकीरी जाहिर किया जावे तो यह कब बरदास्त कर सकते हैं अब तक जिस क़दर आदमियों से मिलने का इत्तफ़ाक़ हुवा उन में से सिर्फ एक सख्श दारोगा रामचन्द्रजी ऐसे जो भेद फ़कीरी से वाकिफ थे और ऐसे आमिल थे कि गृहस्थियों में तो जिकर ही क्या फकीरों में भी ऐसे आदमी का मिलना मुशकिल है। इनका मामूल था कि जो सख्श किसी की मोत का हाल जाहिर करके कफ़न दफन के लिये रुपये का सवाल करता उसको कम अज़ कम मुबलिग़ १०) रुपये तजरीज तक़फीन (यानी कफन दफ़न करने) के वास्ते जरूर देते थे और साधु फकीर जो सवाल करता था उस को जांच कर जरूर पूरा करते थे इनके चन्द मुलाज़मीन का दस्तूर था कि झूँट मूट के आदमी बुला लाते थे और जब उनको रुपया मिल जाता था तो उससे कुछ हिस्सा ले लेते थे । एक दफा उनके कारिन्दे ने दारोगा साहब से शिकायत की यह लोग इस तरह से धोका व चालाकी

करके वसूल करते हैं। उन्हों ने जवाब दिया कि मुझको इन इन सब बातों से वाकफियत है मगर गोर का मुकाम है कि जिस सख्श ने अपने रिस्तेदार और अज़ीज़ की मोत का वहाना करके रुपया तलब किया तो इससे मालूम होता है कि उसकी ज़रूरत सख्त ना होती तो ऐसा वहाना ना करता फिर जरूरत वाले को रुपया लेने में क्या हर्ज है। ग़र्ज़ फकीरों का भी यह ही हाल था कि किसी ने सो रुपये का सवाल किया तो पहले कहते कि १०) दस रुपया लेलो और चले जावो जब वोह न जाता और दस बीस दिन खूब खाता पीता और पड़ा रहता तो फिर आहिस्ता आहिस्ता रकम बढ़ाते जाते थे पांच दस तक देने को रज़ामन्द हो जाते थे। फिर बीस पच्चीस और पचास तक और जब देखते कि यह जाता ही नहीं तो फिर उसका सवाल पूरा कर देते थे। इस से उनका मतलब उसकी ज़रूरत देखने का होता था कि अगर ज़रूरत वाला है तो ठेरेगा नहीं तो दस पांच लेकर चला जावेगा इन को मजहबी या धर्म के बारे में किसी दूसरे से दुशमनी नहीं थी। हिन्दू मुसलमान ईसाई मुसाई कोई भी सवाल करने वाला हो सब का सवाल पूरा करना। जैसे द्वारका जाने को हिन्दू साधुओं को रुपया देते थे उसी तरह मुसलमानों को भी मक्का मदीना और हज के लिये जाने को मदद किया करते थे

और फरमाते थे अपने अपने तरीके पर सब उसी परमात्मा का भजन करते हैं जो सब का मालिक है ।

शाखे सन्दल बहयके अज़ चोब किसयारे हज़ार ।
खुशबु दारद हर यके ओसाफ़ बर जंगल गुज़ार ॥

अर्थ—एक सन्दल की लकड़ी बहुत सी हज़ार लकड़ियों से ज़्यादा अच्छी है क्यों कि वोह ऐसी सुगन्ध रखती है जिस से दूसरी लकड़ी भी सुगन्धित हो जाती है । और दूसरी लकड़ियों का सुगन्ध का गुन जङ्गल में ही खतम होजाता है ।

पिसर क़ाबिल बहयके हर कार रा इज़ाज़त गुज़ार ।
मजबूर ला क़ाबिल शुदा मजबूर तो अज़ आँ चेकार ॥

अर्थ—एक लायक़ बेटा कि जो काम को अच्छी तरह पूरा करता है बहतर है । अगर वोह किसी वजह से नाक़ाबिल हो जावे तो उस की मजबूरी से तुम को क्या काम है ।

(१३९) एक रोज़ इरशाद हुवा कि हमारे एक अज़ीज़ ने कुछ विचार लोगों में ऐसे फैला दिये कि जिन से उन को बाद में शरमिन्दा होना पड़ा और

हमारे पास माफ़ी मांगने आये तो हमने कहा कि आप क्यों अफसोस करते हैं। हम आप को एक बात सुनाते हैं कि किसी बनिये के घर एक लड़की पैदा हुई और औरत ने बड़े लाड चाव से उस का नाम दुरनामता रखा इत्तफ़ाक़ से वोह लड़की मर गई और उस के लिये बहुत रोया करती थी और कहा करती थी कि हाय दुरनामता कैसे प्राप्त होगी। एक दिन उस का पती बोला कि इतना अफ़सोस क्यों करती हो अगर हम और तुम ज़िन्दा हैं तो और दुरनामता ( बदनामी ) हो जायगी सो अजीज मन अगर आप का हमारा सम्बन्ध है तो ऐसी खबर और मशहूर हो जावेगी। आप इतनी सी बात का इतना फिकर क्यों करते हैं।

(१४०) एक रोज कोटहाट के बहुत से आदमी सेवा में हाज़िर हुवे और एक स्त्री की सिकायत की कि उस के चाल चलन की बाबत बहुत शक है। हम लोग तो उस को समझा बुझा कर थक गये आप कृपा करके समझायें, नहीं तो इस का कृष्णद्वारे में आना जाना बन्द कर दीजिये इस की वजह से हमारी औरतें भी बदनाम होती हैं और हमारी भी बदनामी होती है। श्री महाराज ने फरमाया कि हम को एक बात याद आई कि एक चमार का लड़का घर से लडकर भाग गया

और दूसरे शहर में जाकर भीक मांगने लगा। वहां के महा परिडत के घर जाकर भीक मांगी। माई साहिबा ने पूंछा कि क्या तू ब्राह्मण है तो उस ने कहा मैं ब्राह्मण हूं। लड़का खूबसूरत था और महा ब्राह्मण के सिर्फ एक लड़की थी जिस की शादी कर के वोह घर जवांई रखना चाहते थे। उन्हों ने उस लड़के से जात पांत गोत वगेरा की बाबत और दरयाफ्त किया तो उस ने कह दिया कि मुझ को ज्यादा हाल मालूम नहीं है। उन्हों ने उसको वैसे ही घर में रख लिया और पढ़ाने लिखाने लगे। जब पढ़ लिख गया तो कुछ दिन पीछे उस की शादी कर दी। अकस्मात लड़के का बाप उस को ढूंढता हुवा वहां आ निकला। लड़के ने उस को पहचान लिया और कहा कि देख यहां तो यह हाल है अब तू अपनी जात जाहिर न करना मैं पालकी वगेरा लेकर तुम को लेने आऊंगा तू किसी से बात न करना सिर्फ माला फेरते रहना। नहीं तो मैं और तू दोनों जान से मारे जावेंगे। गर्ज़ उस को समझा बुझा कर और माला और दुशाला और पालकी वगेरा लेकर गया और बाप को बड़े आदर से घर लाये। अब महा पंडित अपने सम्धी से मिलकर बहुत खुश हुवे और बात चीत करनी चाही मगर वोह बिलकुल चुप रहते थे लड़के ने कह दिया कि यह भक्त जी हैं किसी से बात नहीं करते अकेले रहना पसन्द करते हैं उनको अलग कमरा देदो वहीं रहा

करेंगे सब लोगों ने यह बात मंजूर करली। एक दिन राजा ने भी दर्शन करने को बुलाया और बड़ी लम्बी चोड़ी ढोक दी और खूब रुपया पैसा भेट किया। वहां से भी मोन धारन करके जान बचा लाये फिर वोह उस घर में रहने लगे। लड़के की बहू का जूता कामदानी का था उसका एक टांका कहीं उधड़ गया था उसको जब कभी लड़के का बाप देखता तो पहले स्वभाव से उसका मन करता कि अगर रॉपी सूई होतो अभी इसको सीदूं। अपने लड़के से कहा कि मुझको सूई की जरूरत है लादो। उसने समझा कि कपड़े वग़ैरा सीने की या कोई कांटा निकालने को ज़रूरत होगी। एक सूई लादी। उसने मोका पाकर जूते को उठा लिया और सूई से सीने लगा अगर रॉपी होती तो सूराख कर लेता। सूई को वैसे ही छेदा तो जूते में अटक गई। आखर दांतों से सूई पकड़ कर खींचने लगा। उसके बेटे की बहू ने देख लिया और चिल्लाती हुई अपनी मां से कहने लगी कि बापूजी चमड़ा खारहे हैं। उसकी माने कहा कि चुप। हर के भगत हैं। न मालूम इस समय क्या मोज आगई है। भगतों की लीला भगत ही जानते हैं। वह बात रफ़ा दफ़ा होगई मगर चोर की डाढी में तिनका। बूढा डर गया कि हाय अब भेद खुल गया। अब मारा जाऊँगा। जब लडका आया तो उससे सब हाल कह दिया। उसने भी अपना सर पीट लिया और दोनों

आदमी रातको घर से निकल भागे। जब महा पंडित आये और समधी और दामाद को गायब पाया तो हाल पूछा। आखर सोचा कि शायद समधी साहब इनकी चरचा से नाराज हो होगये हैं इसलिये राज में जाकर खबर करदी कि महाराज हमारे दामाद और समधी नाराज होकर निकल गए हैं। उनको ढूंडवादें। उसी समय सवार चारों तरफ गए और ढूंड कर ले आये जब दामाद सामने आया तो अपने ससुर के पैरों पर पडगया और हाथ जोड कर बोला कि महाराज चाहे मारो चाहे छोडो। मैं तो चमार हूं। मैंने अपनी जात छुपाई थी यह सुनकर महा पंडित बोले अब चुप बोलो मत हमभी ब्राह्मण नहीं हैं चमेड हैं बात अन्दर ही अन्दर रहने दो। जब दूसरे दिन महा पंडित राजा से मिलने गये तो उन्हों ने दरयाफ्त किया कि कल तुम्हारे दामाद ने बडा बखेडा किया क्या बात थी। महा पंडित हाथ जोड कर बोले कि अन्न दाता जान की क्षमा चाहता हूं असल में वोह लडका जातका चमार है और मैं भी ब्राह्मण नहीं चमेड हूं। यह सुनकर राजा साहब बोले कि चुप रहो किसी और से ना कहना हम भी ऊँची जात के नहीं हैं हम भी चमोरये हैं। सो साहिबान आप उस बाई की निसबत ही कहते हैं और गौरकी नजरसे देखा जावे तो ऐबों से पाक उसी की जात है वरना सब ऐब से भरे हैं।

गरतं चश्मे खुदा बीनी व बख्शन्द ।
ने बीनी हेच कस आजिज़ तर अज़ ख़्वेश ॥

अर्थ—अगर तुझे परमात्मा के देखने की आंख बख्शी जावे यानी अगर ईश्वर ज्ञान प्राप्त हो जावे तो फिर तुम अपने से ज़्यादा कोई भी दूसरा आजिज़ (गुन्हेगार) नहीं देखोगे।

कोई चमार है तो दूसरा चमेंड है तो तीसरा चमशिया है। किसी में कुछ ऐब है तो किसी में कुछ ऐब है मगर जैसे अपनी टट्टी धोने व आबदस्त लेने में भी नफरत नहीं आती और दूसरे का पाखाना देख कर जी मचलाता है वो ही हाल है औरों के जरासे ऐब भी बहुत दिखलाई देते हैं—

"ना सह्ह याफ़तम ना सह्ह ख़ुद न याफ़तम"

अर्थ—दूसरों को शिक्षा देने वाले मुझे मिले लेकिन अपने आप को शिक्षा देने वाला कोई नहीं मिला।

(१४१) एक रोज़ जनाब राय साहब दीवाण मथुरादास जी साहब चीफ जज रियासत पूंछ ने अर्ज किया कि श्री महाराज अकसर आदमी हम से दो बातों की निसबत दरयाफ्त करते हैं और मेरी समझ में उन का कोई जवाब नहीं आता। अगर श्री महाराज

कुछ इरशाद फरमावें तो बडी महरबानी होगी । अव्वल बात तो यह है कि श्रीकृष्ण महाराज को कुल हिन्दू अवतार मानते हैं और कम अज कम उन के बडे और योग पुरुष होने में तो किसी को भी मुशकिल से ही इन्कार होगा । लेकिन साथ ही उन की बावत गोपियों से जो सम्बन्ध को जाहिर किया गया है वोह तो बहुत ही लचर सी बात मालूम होती है । कोई मामूली आदमी भी गैर सख्श की औरत से ऐसा ताल्लुक ( सम्बन्ध ) करना मुनासिब नहीं समझता तिस पर ऐसे वडे होकर भी उन्हों ने उस को अच्छा समझा इस से उन को अवतार मानने में सोच विचार है । दोयम द्रौपदी जी के पांच खाविन्द होना यह भी एक अजीब बात है वोह पांचों भाई भी बडी लियाक़त के लोग थे उन्हों ने शास्त्र की मर्यादा के खिलाफ कार्रवाई कैसी की ।

श्री महाराज ने इरशाद फरमाया कि मैं आज कल बीमार हूं इस लिये ज़्यादा बात चीत करने की तो ताकत नहीं थोड़े से में कुछ कहता हूं । बात को दो तरह से गोर कीजिये अव्वल कानूनन, दूसरे तिब (यानी वैद्यक की रीति से) । क़ानूनी तोर पर आप ने भी अपने से बहुत फ़ैसले किये होंगे । ज़िना (व्यभिचार) का जुर्म किस उमर के आदमी पर लग सकता है, क्या दस ग्यारा वर्ष का बच्चा इस जुर्म को कर सकता है, और वोह उस का अपराधी ठहराया जासकता है ? वैद्यक नियम

से भी ग्यारा बारा वर्ष की उमर में लड़का बालिग (युवा) नहीं होता न ऐसे बुरे काम के करने का अपराधी ठेराया जा सकता है , बल्कि वोह इस काम के ना काबिल समझा जाता है । भागवत और महाभारत में लिखा है कि श्रीकृष्ण महाराज ग्यारा साल की उमर में राजा कंश के बुलाने से मथुरा चले गये थे और वह गोपियों के साथ मिलने जुलने और रास वगैरा की कुल बातें इस से पहले की है तो इस लिहाज से भी वोह इस जुर्म से बिलकुल बरी थे। ऐसा मालूम होता है कि राजा कंस को खुश करने के वास्ते तरह तरह के उन पर ऐब लगाये गये और बदनाम किया गया हो जैसा कि सन्त कबीर साहब की बाबत भी बहुत सी बातें बुरी भली बनारस वालों ने बनाई है जो अब तक त्योहार होली वगैरा के मोके पर गाई जाती है। यह जरूर है कि उन की अन्दरूनी अच्छाई की वजह से हर मर्द औरत उन पर जी जान से लट्टू हो रहा था और ज़ाहिर और अन्दरूनी व तसव्वुर हर तरह से उन से मिलने जुलने का तलबगार था ( यानी मिलना चाहता था ) चूंकि औरतें प्रेम की मूर्ती होती हैं और प्रेम के दिखाने का ज़रिया ऐसे ही अलफाज़ और खयालात से अकसर होता है । अगर ऐसा हुवा हो तो उस में भी कोई हर्ज नहीं मालूम होता । आम तोर से दस ग्यारा साल के खूबसूरत बच्चे के साथ औरतें हँसी ठट्ठा और

दिल्लगी और मजाक़ की बात किया करती हैं और उसको कोई बुरी नज़र से नहीं देखता और अगर आप कहें कि शायद ऐसा हुवा भी हो तो आप ही खयाल कीजिये कि अगर ग्यारा साल की उमर के किसी बच्चे में ऐसी ताक़त पाई जावे कि वोह इतनी औरतों के साथ एक दम से मिल सके तो ऐसी ताकत को आप इन्सानी ताकत कहेंगे या ताक़त वोह मानेंगे जो आदमी की सामर्थ से ज्यादा है। इस बात के मानने से भी उन के अवतार होने में कोई हर्ज नहीं पडता बल्कि उन के अवतार होने की दलील है। दूसरी बात का जवाब विस्तार के साथ नहीं देता सिर्फ कुछ थोड़ा सा कहता हूँ अगर आप कुछ इस से ज्यादा समझ सकें या अपनी अकल से निकाल सकें तो और भी अच्छा है। देखिये आज कल यह कायदा है कि प्रीवी कौन्सिल से जो मुकदमा फैसला हो उस की अपील आगे नहीं हो सकती उसको नातिक मानना पडता है इसी तरह से उस जमाने में गुरू, बाप और मा के हुकम को ऐसा ही नातिक़ मानते थे चूंकि पांडवों ने आकर अपनी माता से यह कहा था कि हम पांचों भाई एक तोफा लाये हैं तो उस ने समझा कि कोई खाने पीने की चीज है इस लिये कह दिया कि पांचों आपस में बाँट कर भोगो। अपनी माता के इस हुकम को उन्होंने

बिना सोचे विचार के उसी तरह माना जैसे कि आज कल प्रीवी कौन्सिल के फैसले को मानते हैं।

(१२२) एक रोज़ श्री बाबा सरूपानन्द जी महाराज सेवा में हाजिर हुवे और श्री महाराज से अर्ज़ की मेरी तबियत अब आगेर ठहर ने को नहीं चाहती बाहर सफर करने का विचार है और पहले भी कई दफा कह चुका हूं। यह सुनकर आपने फरमाया कि हमको एक नक़ल याद आई कि किसी के घर हींजड़ा बच्चा पैदा हुवा। जब बड़ा होगया तो उसकी मा ने अपने पती से सलाह की कि इस बच्चे की शादी होना नामुमकिन है हमको हमेशा खाना पकाने की तकलीफ होगी इसलिये किसी तरह इसकी शादी होनी चाहिये और लाख वग़ैरा की पेशाब की जगह किसी तरकीब से बच्चे के लगादी और जाहिर कर दिया कि यह लड़का है लेकिन चूंकि लड़के को यह हाल मालूम था वोह हमेशा अपनी मा को धमकाया करता था कि मैं आग से सेक कर इसको गिरा दूंगा वोह विचारी खुशामद करती थी कि नहीं बेटा ऐसा मत करना तेरा विवाह रुक जावेगा। एक दिन उसने अपने बाप से ऐसे ही कहा उसने लड़के को झिड़क दिया कि हमको क्या धमकाता है अभी इसको गिरा दे हमारा क्या हर्ज है बहू आने से सुख होगा तो तेरी मा को होगा हमको क्या फायदा। सो बाबाजी

महाराज आप कल के जाते आज ही तशरीफ लेजाइये आपके यहां रहने की जरूरत होगी तो लाला अमीरचन्द जी को होगी उनको ही सत संग बढ़ाने का शौक है। हमने तो आज तक किसी को अपना शिष्य बनाना भी मंजूर नहीं किया।

(१४३) एक रोज लोहार दिवाली पर श्री महाराज टेरी में ठेरे हुवे थे चूंकि पहाडी जगह है और काबुल से मिला हुआ है इसलिये इस मोसम मे वहां खासी सरदी थी। सब सतसंगी भाइयों ने बड़े उत्साह और आनन्द से सत संग के कमरे को सजाया और खूब रोशनी करी और एक रेशमी इकेरा चोला केसरया रंगा हुवा श्री महाराज को पहना दिया और रेशमी पटका सर से बांधा। दो सख्श दोनो तरफ खडे होकर चँवर झल रहे थे और दो साहब सामने बेठे गुलाब छिडक रहे थे उस वक्त हाजरीन कुछ ऐसे लव लीन हो गये कि वहां की सरदी वग़ैरा का कुछ भी खयाल ना रहा। और जो साहब गुलाब पाशी कर रहे थे उन्हों ने करीब कई बोतल गुलाब श्री महाराज के श्री अङ्ग पर छिड़क दिया यहां तक कि तमाम चोला व पटका व मसनद व तकिया सब तर बतर होगये। कई दफा श्री महाराज ने पेशानी और सर पर से गुलाब को अपने हाथ से निचोड़ा भी। मगर उस समय किसी को इस बात का खयाल

भी ना हुवा कि इस समय हम क्या कर रहे हैं। जब वह गुलाब छिडक चुके तो औरों की बारी आई ताकि इस सेवा से कोई खाली न रह जावे और श्री महाराज भी लिहाज़ से उस समय कुछ न बोले चुप चाप बैठे रहे। अब समय बहुत बीत गया तो आपने सब को जाने के वास्ते मजबूर किया और आप ने भी आराम फ़रमाया मगर उस गुलाब पाशी से कुछ सरदी की शिकायत होगई। दूसरे रोज़ जब सब जमा हुवे तो नासाजगी तबियत की बाबत दरयाफ़्त करने लगे उस वक्त आपने फ़रमाया कि एक महात्मा जेठ में अपने चेले के घर गये। चेले ने बहुत आदर सन्मान किया। ठन्डे पानी से हाथ पैर धोये। खश की टट्टी में बिठाया। खश का पङ्खा तर करके झलने लगा। ओले और बर्फ़ का शरबत पिलाया। बेले व चमेली के फूलों के हार पहनाये और गुरू के आसन पर भी बहुत से फूल बिछाए और तरह २ के तर व ठन्डे खाने खिलाए। एक और आदमी उसकी इस सेवा को देखकर दिल में कहने लगा कि अगर हमारे गुरू जी आवे तो हम भी ऐसी ही सेवा करें। कुछ दिन पीछे महा पोष में उसके गुरू जी भी आगये आते के साथ ही उसने ठंडे पानी से हाथ पैर धुलाये और खश का पङ्खा झलने लगा और कुल सेवा और सामान जो जेठ के महीने में इस आदमी को

करते देखा था करने लगा गुरू जी का बूढा शरीर था सरदी से ऐंठ गये और दिल में सोचने लगे कि चेला भगत तो पूरा है मगर बुद्धी से काम नहीं लेता आखिर बरदास्त ना कर सके और उसको समझाकर उसकी खातिर दारी से रोक दिया।

(१४४) एक रोज़ इरशाद हुवा कि हम टेरी जिला कोहाट सूबा सरहदी में गये तो वहां के नवाब साहब ने चार सिपाही हथयार बन्द हमारी निगाह बानी और चोकी दारी के वास्ते अपनी पल्टन से बोल दिये क्यों कि उनका खयाल था कि कहीं सरहदी डाकू और धाडेती इनको इस विचार से पकड़ कर ना लेजावे कि इनके चेले बड़े अमीर और धन वाले हिन्दू हैं अपने गुरू को छुड़ाने के लिये मुंह मांगा रुपया और दोलत देंगे उस समय हमको खयाल हुवा कि देखो हमारे पास कोड़ी ना पैसा मगर इन अमीरों की संगत से हमारे वास्ते भी चोकी पहरे की जरूरत पड़गई इसलिये इनका संग त्यागना चाहिये मगर जो काम हमारे सुपुर्द था उसका विचार करके और कुदरत की मरज़ी समझ कर चुप रह गये अपने काम में लग रहे।

(१४५) एक रोज कोहाट से लोटती समय रावल पिण्डी में मोहल्ले शाह चराग़ में जनाब सइयद हाफिज़

अब्दुल करीम साहब श्री महाराज को अपने मकान पर लेगये वहां हाफिज साहब के छोटे बेटे ने एक हक्कानी (निरगुन) ग़जल पढ़कर सुनाई। श्री महाराज उस समय बहुत कीमती काबली दुशाला जो सेठ ताराचन्द जी ने मंगवाया था ओड़े बैठे थे वोह उतार कर साहब ज़ादे को अपने निज हाथों से उढ़ा दिया और बहुत प्यार किया जब वहां से लोट कर अपने ठहर ने के स्थान पर आये तो सेठ साहब से फरमाया कि आपका तोफा अब बड़ी अच्छी जगह पहुंच गया। हमारे दोस्त का बच्चा जब उसको ओडेगा तो हमको बहुत खुशी होगी।

(१४६) एक रोज जनाब दीवाण दामोदर दास और जनाब सेठ बाशाराम साहब ने टेरी में बड़े जोर शोर से यह तर्क उठाया कि स्त्रियां श्री महाराज के पास माथा टेकने को ना आवे। कुछ भगतों ने कहा भी कि यहां की स्त्री दरया पर जाकर नङ्गी होकर नहाती है और बनाव सिंगार कर के पानी भरने जाती हैं। रास्ते में पठान बैठकर हंसी करते हैं और वाही तवाही बकते हैं वहां तुम्हारा परदा कहां जाता है। बहुत स्त्रियां तो मुसलमान हो जाती हैं उसका कारन यह ही है कि वोह अपने निज धर्म के नियम को नहीं जानती और

ना उनको किसी प्रकार का सत संग होता है इस में तो आपको तो कोई उजर नहीं और यहां पर आकर मालिक का भजन करती हैं और एक बड़े महात्मा को माथा टेकती है और कथा वग़ैरा सुनती और सत संग करती हैं उसमें ऐसी हानी और हर्ज समझा है। मगर उनकी समझ में एक भी बात नहीं आई और वोह इस के खिलाफ ही रहे और स्त्रियों को रोकना चाहा तो तमाम कस्बे की स्त्री और पुरुषों ने उनके खिलाफ एका करलिया और उनको उनके सामने ही बुरा भला कहने लगे और कहा कि तुम हमारे ज़िम्मेदार नहीं। अगर रोकना है तो अपनी मा बहन और औरत को रोको हम तुम्हारे रोकने से नहीं रुकते। उन्हों ने अपनी मा और बहन को रोकना चाहा तो उन्हों ने भी इनकी बात नहीं सुनी अलबत्ता अपनी बीबीओं को दोनों साहब ने आने से बन्द कर दिया। इत्तफ़ाक़ से उन ही दिनों में सेठ बाशाराम के घर में लड़का पैदा हुवा और तुरन्त मरगया और दीवाण साहब के घर मरी लड़की पैदा हुई अब तो चारों तरफ शोर मचगया कि उन्हों ने श्री महाराज की मुख़ालफ़त की थी और औरतों को सत संग में जाने से रोका था उस की सज़ा उन को मिली है। दीवाण साहब के साथ एक घटना और भी ऐसी हुई कि जिस से तमाम आदमियों को यह कहने की जगह मिल गई कि सत्सङ्ग से खिलाफ होने का यह फल

होता है । बेचारे बडे लज्जित हुवे और दोनों साहब अपनी स्त्रियों को साथ लेकर और प्रशाद वगैरा लेकर माफी मांगने आये और फिर ऐसे विचार ज़ाहिर नहीं किये ।

(१४७) एक रोज़ श्री महाराज हरिद्वार में विराजमान थे । अर्ध कुम्भी का मेला था कि कुछ लोगों ने विनय की कि महाराज कोई अच्छा महात्मा हो तो उस के दर्शन करावें । आप ने फरमाया कि फलां मुकाम पर गङ्गाजी में मुर्दा घटा है आधी धार इधर और आधी उधर बहती है वहां एक अघोरी महात्मा हैं उन के पास कवाव और शराब की बोतल लेजावो । वोह लोग बोतल और कवाब लेकर गये बडे संनाटे का स्थान था मुर्दघटे की अधजली लकड़ियों की कुटिया में महात्मा विराजमान थे और चार कुत्ते बड़े ज़बरदस्त धूनी के चारों कोनों पर बैठे थे। वोह कुत्ते अधजले मुर्दे को चिता में से घसीट कर लाते थे उसी को वोह खाते थे और महात्मा भी उसी को प्रशाद करते थे। जिस समय इन्हों ने बोतल और कवाव भेट चढ़ाये तो कुत्तों ने सर उठाया। महत्मा ने कहा कि तुम्हारे लायक कोई चीज़ नहीं है फिर प्याला भर कर पीना शुरू किया एक प्याला उन आदमियों को भी देना चाहा मगर उन्हों ने हाथ जोड़ कर माफी मांग ली। एक और साधू

उन के दर्शन को आये थे जव उन को प्याला दिया तो उन्हों ने लेकर पी लिया गज़क के तोर पर उन्हों ने कुछ आम का आचार जो दोने में रखा था लेना चाहा तो साधू ने पूंछा कि महाराज यह कहां से आया है अघोरी जी बोले कि एक महतरानी सुबह देगई थी यह सुन कर साधू चोंक उठे और हाथ खेंच लिया मगर महात्मा उस को भी चट कर गये उन महात्मा का यह दस्तूर था कि गरमी की ऋतु में तो हरिद्वार की तरफ चढ जाते थे और सरदी में नीचे के शहरों में उतर आते थे मगर हमेशा गंगाजी के बीच धार में रेती में ही रहा करते थे गंगाजी से वाहर नहीं रहते थे। जव वोह लोग दर्शन कर के लौटे तो श्री महाराज ने फरमाया कि इस मेले में जितने महात्मा पधारे हैं उन सव में उन का दर्जा ऊंचा है।

(१४८) एक रोज़ श्री महाराज और महन्त रामेश्वर दास जी लालडूंगरी से वापिस पधार रहे थे। रास्ते में एक कुम्हार गधे लिये जाता था श्री महाराज को देख कर बडे प्रेम से बोला कि आप मेरे घर चलें श्री महाराज उस के साथ हो लिये उस के घर पर कोई विस्तरा भी नहीं था एक वहुत ही फटी हुई पुरानी कथरी विछा दी आप उस पर बैठ गये। कुम्हार ने दो जौ की मोटी मोटी रोटियां महाराज के हाथ पर रख दी

और एक मिट्टी का प्याला छाछ से भर कर देदिया। बड़े प्रेम से रोटियां खाने लगे। रोटियां खाकर छाछ पी गये ज़रासा टुकड़ा रोटी का महन्त जी को भी दिया मगर यह चोके के पाबन्द थे इस लिये खाया नहीं जेब में रख लिया जब स्थान पर आये तो महन्त जी ने अपनी माता जी को यह हाल सुनाया और कहा कि आज श्री महाराज को ज़रूर तकलीफ़ होगी इतना अधिक खाना खा गये हैं। उन की मा ने समझाया कि सन्तों के विषय में ज़्यादा बात चीत करना ठीक नहीं हैं। मगर यह न माने और श्री महाराज से कहने लगे कि आप घर पर तो एक छटांक चांवल भी मुश्किल से खाते हैं आज यह जो की मोटी रोटी और मट्ठा कैसे पी गये। हँस कर फरमाया कि कुम्हार का प्रेम बढ़ाने के लिये, देखो कैसे प्रेम और नम्रता और आधीनता से उस ने बुलाया और खाना खिलाया अगर उस के यहां न जाते और न खाते तो बोह समझता कि साधू लोग अमीरों के यहां जाते और मेवा मिठाई खाते हैं गरीबों को इन से मिलना नसीब नहीं हो सकता और उस के प्रेम का जोश दब और बुझ जाता बाकी तुम ने स्वयं देख लिया कि किस प्रेम से उस ने खिलाया और किस खुशी से हमने खाया भला जब दोनों तरफ ऐसा प्रेम हो तो ज़्यादा खाने से तो क्या अगर ज़हर भी

खा लिया जावे तो हमारे खयाल में वोह भी कुछ तकलीफ़ नहीं दे सकता।

(१४६) एक रोज़ बाबू प्रभुदयाल जी ने अर्ज़ की कि मास्टर जगन्नाथ जी साहब प्रोफेसर खालसा कालेज़ अमृतसर का खयाल है कि पहले दस बीस बड़े बडे लायक़ आदमियों को उपदेश देकर तय्यार किया जावे क्यों कि उनकी कोशिस ओर मदद से काम अच्छी तरह से चलेगा और बहुत उपकार दुनियां का होगा क्यों कि छोटे छोटे आदमी अगर बहुत से भी होगये तो उनसे इतना लाभ ना होगा जितना बडे ओर योग्य दस पांच आदमियों से हो सकता है। उस वक्त श्री महाराज ने फरमाया कि ब्राह्मण और राजा को उपदेश करना ठीक रास्तें पर लाना बहुत कठिन है क्यों कि राजा तो राज मद में मस्त होते है और ब्राह्मण विद्या में और अपने को कोम का राजा या सर ताज समझते हैं किसी को गुरू मानने को तय्यार नहीं इसलिये अकसर महात्मा पहले छोटे आदमियों से अपना उपदेश शुरू करते हैं। पीछे जब उनका उपदेश फैल जाता है और उसकी महिमा प्रगट होजाती है तो उस समय खास खास बडे आदमियों की तरफ झुकते हैं। कबीर साहब का वचन है कि

पहले बोधू कोली चमारा ।
तब बोधू राज दरबारा ॥
मघर में जाके बज्यूं डंका ।
राजा पंडित की छूट जाय शंका ॥

लेकिन जब कभी राजा और ब्राह्मण अपने २ मद और अभिमान को त्याग कर सत संगी को ग्रहनण कर लेते हैं तो उनकी तरक्की की भी हद नहीं रहती। क्यों कि इनकी राह में रुकावट बहुत कम होती है और संस्कारी तो पहले ही के होते हैं ।

(१५०) एक क़ाज़ी साहब साकिन खटक सूबा सर हदी पेट की बीमारी में मुबतिला थे । बहुत इलाज मालजा कराया आराम नहीं हुवा । किसी ने सलाह दी कि साधुओं से मिलो । अकसर साधूओं से मिलते रहते थे आगरे भी आये । श्री महाराज उन दिनों सेठ हंसराज जी साहब के रूई पेच पर ठेरे हुवे थे वहां पता लगाकर पहुंचे और मिलने की इच्छा ज़ाहिर की। श्री महाराज कई दिन तक उनसे ना मिले लेकिन क़ाज़ी साहब ने वहीं डेरा डालादिया था तो एक दिन बुलाकर हाल दरयाफ्त किया । बीमारी मालूम होने पर जवाब दिया कि मैं तो साधू हूं कोई बात भजन की पूछना चाहो तो

दरयाफ्त करलो बाकी मर्ज़ का इलाज किसी डाक्टर हकीम से कराओ। उन्हों ने अर्ज किया कि मैं किसी भेदी का भेजा हुआ आया हूं और इलाज मालजा बहुत कराये फ़ायदा नहीं हुवा अब या तो आप तवज्जह करें वरना यहीं मोत होगी। जब यह हालत देखी तो फरमाया कि आप अजमेर तशरीफ लेजावें वहां हजरत ख्वाजा साहब की दरगाह में एक फ़कीर मिलेंगे उनसे अपना हाल कहना। काजी साहब उसी दिन अजमेर चले गये कई दिन तक दरगाह में जाते रहे मगर कोई फ़कीर न मिला। बीमारी से लाचार थे मायूस होकर (ना उम्मेद होकर) वापसी वतन का इरादा करके रवाना हो गये और मुकाम सकर में पहुंच कर सराय में ठहरे। रातको एक फ़कीर साहब जिनके बदन पर सिवाय लंगोटी के और कुछ न था सराय में आये। एक कुत्ता और एक लड़का भी उनके साथ था क़ाज़ी साहब के कमरे में दाखिल होकर क़ाजी का नाम लेकर बोले कि क्या यह तुम्हारा ही नाम है और अपनी लंगोटी में से एक धागा पकड़ कर खींचा और कहा यह लो उसको खालो। क़ाजी साहब ने जब हाथ फैलाकर उसको लिया तो मिठाई की डली थी उसको खागये। ऐसे अच्छे स्वाद की थी कि उससे पहले ऐसी मिठाई कभी नहीं चखी थी। फिर फरमाया कि हम तो अब जाते हैं यह दोनों बालक (यानी वोह कुत्ता और

लडका) रातको यहां ही रहेंगे यह कहकर चले गये। रातको क़ाज़ी साहब ने उस लडके से पूछा कि यह फ़कीर कोन है और तुम कोन हो और इनको मेरा नाम कैसे मालूम हुवा। लडके ने कहा कि मुझे ज्यादा हाल तो मालूम नहीं अलबत्ता इतना कह सकता हूं कि हम राजपूताने में सफर कर रहे थे इन फ़कीर साहब ने फरमाया कि अजमेर शरीफ चलना है जब अजमेर शरीफ पहुंचे तो हज़रत ख़्वाजा साहब की दरगाह में गये और घूम फिर कर बोले कि बडा जल्द बाज आदमी है ऐसी जल्दी भाग गया अब सफर जाना पडा बस वहां से रवाना होकर सीधे सराय में यहां आपके पास चले आये और आप का नाम लेकर पुकारा। सुबह होते ही वोह फकीर साहब फिर आये और काज़ी साहब की चार पाई के पास दूसरी चार पाई पर बैठ गये और पूछा कि अभी पाखाने तो नहीं गये उन्हों ने जवाब दिया कि नहीं उस वक्त पाटी पर उँगली रखकर कहा कि अच्छा यह खालो और पाखाने हो आवो। जब हाथ बढ़ाया तो फिर कुछ मिठाई मिली वोह खागये और पाखाने गये तो वोह कीडा निकल कर बाहर जा पडा वोह खुश खुश बाहर आये तो फकीर साहब ने फरमाया कि तुम्हारा काम होगया अब जाते हैं परमहंस बाबा से

हमारा सलाम कहना यह कहकर और कुत्ता और लड़के को साथ लेकर चल दिये।



॥ श्रीहरिः ॥

# शुद्धाशुद्ध पत्रम्

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४ | ४ | परवंराज आचाय्य | परिव्राजकाचार्य |
| ४ | ६ | ईरशाद | इर्शाद |
| ४ | ११ | अशद्धियां | अशुद्धियां |
| ४ | १२ | ऊनके | उनके |
| ५ | ५ | अनभि | अनभिज्ञ |
| ५ | १५ | ध्ञान | ध्यान |
| ५ | १५ | ओइ | और |
| ५ | १८ | ानयम | नियम |
| ६ | ५ | जुआं | जुवां |
| ६ | ६ | अदाय | अदार |
| ६ | ६ | जुवां | जुवां |
| ६ | ८ | जुवां | जुवां |
| ७ | ३ | सन्मागे | सत्मार्ग |
| ७ | ५ | सी | इसी |
| ८ | १८ | वोगरा | योगरा |
| ८ | २० | बाजार | बाजार |
| ९ | २१ | लेखनी | लेख |
| १० | १ | से | वो |
| १३ | २ | चाओ | चाव |
| १३ | १८ | सरिश्तेहार | सरिश्तेदार |
| १३ | २१ | जमाओ | जमाव |
| १७ | २२ | वस्तव | वास्तव |
| २० | ५ | मन | मन |
| २० | ५ | ये | य |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २० | ६ | हर | हरि |
| २० | ६ | ये | य |
| २२ | ७ | हरी | हरि |
| २८ | ८ | सामन | सावन |
| २८ | १६ | जनूं | जुनुं |
| ३० | ६ | आवन | अवनि |
| ३० | १४ | गन | गुन |
| ३० | १७ | कंकर | किंकर |
| ३० | १६ | धनजै | धन्यजे |
| ३१ | ९ | इसतिहर | इसी तरह |
| ३१ | ५ | सामन | सावन |
| ३३ | १८ | वहतर | वेहतर |
| ३८ | २१ | न | ने |
| ३६ | ११ | ईस | इस |
| ३६ | १५ | ईस | इस |
| ४० | ७ | सिद्ध प्रसिद्ध | सिद्धिप्रसिद्धी |
| ४० | १५ | कीठन | कठिन |
| ४१ | १ | जग | जग्य |
| ४१ | २ | उमरें | उमरे |
| ४२ | ३ | हे | हर |
| ४२ | ४ | वाने | काने |
| ४४ | ५ | वैठ | वैठे |
| ४४ | ८ | राओ | राव |
| ४५ | २ | कैदार | केदार |
| ४५ | ११ | देत | देते |
| ४५ | २२ | वृीत्त | वृत्ती |
| ४५ | २२ | मजजूवों | मजजूवों |
| ५३ | १२ | खूव | खूब |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५१ | २१ | प्रतिमा | सूरत |
| ५४ | २ | वत्तीस | वत्तीस |
| ५४ | ६ | सिद्धो | सुधि |
| ५४ | १८ | प्रतिमाये | सूरतें |
| ५५ | १ | यहा | यहां |
| ५५ | ५ | उसेका | उसको |
| ५५ | १५ | गन्दुक | गन्डक |
| ५५ | १७ | विरख २ कंठखाले | वरपवगपगंठखाले |
| ५७ | २१ | चलेन | चलनें |
| ६१ | १० | मा | मी |
| ६१ | १२ | व | च |
| ६२ | १७ | आर | ओर |
| ६४ | १४ | ह | हैं |
| ६५ | १२ | हुइयों | हुइहों |
| ६५ | १४ | मन्दराकाजलदेयो | मुदराकाजलदेहों |
| ६५ | १५ | लीलागे | लीलाके |
| ६५ | १६ | हहियों | पहिहों |
| ६५ | १८ | डढतलां | द्रढतिलरी |
| ६५ | १६ | चमकैया | चमकैहों |
| ६५ | २१ | पीयाहीयाहरोछिनरहियों | पियहियहरछिनरहिहों |
| ६६ | २ | पहनहियों | पहनिहों |
| ६६ | ३ | साविन | साबित |
| ६६ | ४ | फुलैयों | फलैहों |
| ६६ | ७ | उढैयों | उढैहों |
| ६६ | ८ | वुरद्धीलेंहगा | बुद्धिचित्तलंहगा |
| ६६ | ६ | यो | हों |
| ६६ | १२ | यों | हों |
| ६६ | १४ | मेलदुरैयों | मैलदुरैहों |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ६७ | ६ | ह | है |
| ६८ | १५ | मा | मी |
| ७३ | २ | पाठक | विद्यार्थी |
| ७३ | ४ | परम | प्रभु |
| ८१ | २३ | वरावर | बराबर |
| ८२ | २ | ह्याडा | हाड |
| ८२ | ३ | कोवान | कीवान |
| ८३ | १५ | कै | क्रै |
| ८४ | १३ | शरवत | शरबत |
| ८४ | १४ | दखते | देखते |
| ८५ | ४ | दहली | देहली |
| ८८ | ४ | वैठे | बैठे |
| ८८ | १६ | वोवी | बोबी |
| ८९ | १३ | सिलसिलदार | सिलसिलेवार |
| ८९ | १४ | नैच | नैत्र |
| ९२ | २२ | धवायें | धाय |
| ९३ | ८ | वहका | बहका |
| ९५ | १४ | शाक्ति धर्म | शाक्तिक धर्म |
| १०० | १५ | एही | अहि |
| १०२ | | हस | हँस |
| १०७ | ८ | हावी | हाना |
| ११४ | ४ | जैल | जेल |
| ११४ | ६ | जैल | जेल |
| ११५ | २१ | हांभी | हांमी |
| ११७ | ६ | सर | सिर |
| ११७ | ८ | छूट | छुट |
| ११७ | १७ | कुनवे | कुनवे |
| ११७ | १८ | वहुत वड़ा | बहुत बड़ा |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ११७ | १६ | वहुत | बहुत |
| ११७ | २१ | वहका | बहका |
| ११८ | १ | वड़े | बड़े |
| ११६ | ६ | वीस | बीस |
| १ ६ | १३ | जैल | ज़ैल |
| १२२ | ३ | ॰रांट | वारैंट |
| १२३ | ४ | घरबारको | दरबारको |
| १४२ | १० | रानेशप्रशाद | गनेशप्रशाद |
| १४४ | १७ | दिय | दिया |
| १४४ | १६ | वेद | बेत |
| १४५ | ५ | उछिष्ठ | उच्छिष्ट |
| १४५ | ६ | पकडा | पकडाकि |
| १४७ | १७ | विसरे | बिसरे |
| १४८ | २ | आश्चयर्य | आश्चर्य |
| १४६ | १८ | जर्फ | ज़ार्फ़ |
| १५३ | १२ | कुनवे | कुंनबे |
| १५४ | १ | पर्यन्त | उपरान्त |
| १६२ | ६ | उठी | उ॰ |
| १६३ | २१ | भुल | जुल |
| १६५ | १६ | धरोमन | धरोहर |
| १६६ | १६ | श्याम चलने | श्याम को चलने |
| १७७ | २२ | साध | साधू |
| १७६ | १० | धड़े | दड़े |
| १८० | १६ | दैव | देव |
| १८१ | ४ | उठाकर | उठकर |
| १८७ | २१ | चोक | चोकीपै |
| १८६ | १ | लगामी | लगाकीही |
| १६१ | १ | वस | बस |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १९१ | २ | सहत | सेहत |
| १९१ | ७ | और | औरजो |
| १९३ | १५ | ठेरने | ठहरने |
| १९५ | १ | जयादा | ज़ियादा |
| १९५ | ५ | वैज़ार | बेज़ार |
| १९५ | ८ | पाले | पानेका |
| १९५ | ९ | पैशतर | पेशतर |
| १९६ | ३ | हकता | सकता |
| १९८ | ५ | शख्स | शख्स |
| १९९ | ७ | हम | ज़ुल्म |
| १९९ | १५ | धमे | धर्म्म |
| २०० | ५ | बद्रि श्रम | बद्रिकाश्रम |
| २०० | १४ | अली | अपनी |
| २०१ | ३ | भेजदी है | भेजदी |
| २०४ | १४ | शखती | सखती |
| २०५ | १४ | फैल | फेल |
| २०८ | ९ | चाह | चाहे |
| २०९ | ३ | चाह | चाहे |
| २०९ | ४ | ठेरो | ठहरा |
| २०९ | ६ | मुबल | मुलस |
| २०९ | २२ | हमारा | हमराह |
| २१० | १४ | स | से |
| २११ | १३ | टोरी | टेरी |
| २११ | १८ | खुरेन्द | खुरन्द |
| २१२ | १ | गंर्ज | गर्ज |
| २१२ | ७ | चिट्ठां | चिट्ठी |
| २१२ | ११ | बोलने | बोलने |
| २११ | २ | | |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २१३ | ४ | जावै | जाय |
| २१३ | ७ | अन्त काल | इन्तक़ाल |
| २१३ | २१ | जाहिर | ज़ाहिर |
| २१३ | २२ | खजाना | ख़ज़ाना |
| २१४ | २२ | भेजा | भेजी |
| २१६ | ४ | जिन्दगी | ज़िन्दगी |
| २१६ | ६ | बखशीं | बख़शी |
| २१६ | १२ | जिशातीये | ज़िशातीये |
| २१६ | २१ | दौं | दाँ |
| २१६ | २२ | हुए | हुए |
| २१६ | [illegible] | तर्सरुक | तसरुफ़ |
| २१७ | ३ | आधी | आधीन |
| २१७ | ८ | को | का |
| २१७ | ६ | मंजूर | मंज़ूर |
| २१८ | ७ | चिल्लानेकी | चिल्ल |
| २१६ | २ | लजाना | लेजाना |
| २१६ | १० | आजाये | आजाए |
| २२० | ४ | एजेंट | ऊंट |
| २२० | १७ | खास | ख़ास |
| २२० | १७ | आजमाई | आज़माई |
| २२० | १६ | लडक | लड़क |
| २२० | २० | मरज . करी | मरज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की |
| २२१ | ८ | कहन | कहने |
| २२२ | ५ | गुरु | गुरु |
| २२२ | १६ | जिन्दा | ज़िन्दा |
| २२२ | १८ | फकीरी | फ़क़ीरी |
| २२२ | १८ | खिलाफ | ख़िलाफ़ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २२३ | २१ | पुस्त | पुश्त |
| २२३ | १ | नतीजा | नतीजा |
| २२३ | ३ | वकुआ | वक़ुआ |
| २२३ | ७ | मग़र | मगर |
| २२३ | ६ | सख्स | शख्स |
| २२३ | १० | गुस्सा | ग़ुस्सा |
| २२३ | १४ | ताह | तरह |
| २२३ | १६ | इलाके | इलाक़े |
| २२३ | १६ | गेर | ग़ेर |
| २२३ | २१ | फकीर | फ़कीर |
| २२४ | ११ | गायब है | ग़ायब थे |
| २२४ | १२ | गायबाना | ग़ायबाना |
| २२४ | २१ | सख्स | शख्स |
| २२४ | २१ | अवल | अव्वल |
| २२५ | ५ | पूंजित | पूंजत |
| २२५ | ५ | भतीम | भीत |
| २२५ | ११ | बर मलक | बर फ़लक |
| २२५ | १३ से १५ | अगर ··· फंसता है | अगर बुरे स्वभाव वाला मनुष्य दूसरों की सख्ती व जुल्म से तन्ग आकर आसमान में भी चला जावे तो वहां भी अपनी बुरी आदतों की वजह से बला में फंसा ही रहेगा |
| २२६ | १ | मूरत | सुरत |
| २२६ | ८ | सुगल | शुग़ल ( अभ्यास ) |
| २२६ | ११ | जाक | ज़ाकर |
| २२६ | १२ | वलाये | बलायें |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २२७ | ४ | नसस्त | नशस्त |
| २२७ | ६ | जिा | जिस्म |
| २२७ | १५ | वगेरा | वग़ेरा |
| २२७ | २० | विन | विघ्न |
| २२८ | १ | लागतों | भगतों |
| २२८ | १३ | सिकायत | शिकायत |
| २२८ | १४ | डीट | ढीठ |
| २२८ | १७ | जिले | ढ़िले |
| २२९ | ४ | सिकायत | शिकायत |
| २२९ | ५ | फकीरें | फ़क़ीरों |
| २३० | १० | कर | का |
| २३० | १३ | शक्ति | क्षत्री |
| २३१ | १० | कद्म | क़दम |
| २३१ | ११ | मलिक | मालिक |
| २३१ | १७ | गुस्सा | ग़ुस्सा |
| २३२ | १५ | साख तन्द | साख़तन्द |
| २३२ | १६ | अन्दाखतन्द | अन्दाख़तन्द |
| २३३ | १ | प्रेम भजन | प्रेम के भजन |
| २३३ | १३ | प्र | प्रेम |
| २३३ | १७ | वा | चावा |
| २३३ | १८ | प्री | प्रीत |
| २३८ | २१ | वकत | वक़्त |
| २३९ | ३ | कद्र | क़द्र |
| २३९ | ३ | मुकदमे | मुक़द्दमे |
| २३९ | ६ | अकल | अक़्ल |
| २३९ | ७ | विगाड | विगाड़ |
| २३९ | १४ | पर ही | पर है |
| २३९ | १८ | जावी | ज़ाती |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २४२ | १ | होवे | होय |
| २४२ | ८ | सख्श | शख्स |
| २४२ | ६ | ऐसे जो | ऐसे मिले जो |
| २४२ | १२ | सख्श | शख्स |
| २४२ | १४ | मुवलिग | मुवलिग़ |
| २४३ | २ | इन इन | इन |
| २४३ | ३ | सख्श | शख्स |
| २४३ | ३ | रिस्तेदार | रिश्तेदार |
| २४३ | ४ | वहाना | वहाना |
| २४३ | १२ | मुसाई | मूसाई |
| २४४ | १ | तरीके | तरीक़े |
| २४४ | ३ | किसयारे | विस्यारे |
| २४४ | १३ | कोटहाट | कोहाट |
| २४५ | १४ | मेवा | सेवा |
| २४५ | १४ | सिकायत | शिकायत |
| २४६ | ६ | उध | उधड |
| २४६ | ८ | गँपो | रँपो |
| २४८ | ७ | होहोगये | होगये |
| २५१ | १ | वालिग | वालिग़ |
| २५४ | १६ | सख्श | शख्स |
| २५५ | १२ | खश | खस |
| २५५ | १३ | खश | खस |
| २५५ | १६ | का | को |
| २५५ | १८ | से | सेवा |
| २५५ | १९ | खश | खस |
| २५६ | १६ | लग रहे | लगे रहे |
| २५७ | २ | इक्कानी | इक्कानी |
| २५७ | १६ | है | हैं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २५६ | ११ | क़वाव | कबाब |
| २५६ | ११ | कवाब | कबाब |
| २५६ | १२ | संनाटे | सन्नाटे |
| २५६ | १३ | मर्दे घटे | मुर्दे पटे |
| २५६ | १३ | अवजली | अधजली |
| २५६ | १६ | कवाव | कबाब |
| २६२ | ५ | कालेज़ | कालेज |
| २६२ | ७ | कोशिस | कोशिश |
| २६२ | १४ | है़ | है |

